होंगे कामयाब

दसवीं कक्षा हिंदी पाठ्यपुस्तक (X CLASS HINDI TEXT BOOK)

तेलंगाणा ओपन स्कूल सोसायटी, तेलंगाणा राज्य

मुख्य सलाहकार

श्रीमती चित्रा रामचंद्रन, आई.ए.एस.,

विशेष प्रधान सचिव, शिक्षा विभाग, तेलंगाणा राज्य

संपादक मंडल

प्रो. शकीला ख़ानम, आचार्या, कला संकाय, हिंदी विभाग, डॉ बी.आर. अंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, हैदराबाद

(Dean, Faculty of Arts Director, UGC–DEB Affairs and Campus Development)

प्रो. शकुंतला रेड्डी, सेवानिवृत्त क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद

डॉ. अनीता गांगुली, सेवानिवृत्त क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद

श्री सय्यद मतीन अहमद, हिंदी समन्वयक व लेखक, एस.सी.ई.आर.टी व तेलंगाणा ओपन स्कूल सोसायटी-तेलंगाणा राज्य

डॉ. ए.जी. श्रीराम, प्राचार्य, बी.एड. कॉलेज, डी.बी.एच.एस., हैदराबाद

समन्वय एवं सहयोग

श्री मारासानि सोमी रेड्डी, संयुक्त निदेशक, तेलंगाणा ओपन स्कूल सोसायटी, तेलंगाणा राज्य

श्री बोइनपल्ली वेंकटेश्वर राव, राज्य समन्वयक, तेलंगाणा ओपन स्कूल सोसायटी, तेलंगाणा राज्य

श्री सुवर्ण विनायक, शिक्षणशास्त्र विशेषज्ञ, एस.सी.ई.आर.टी., तेलंगाणा राज्य

श्री सय्यद मतीन अहमद, हिंदी समन्वयक व लेखक, एस.सी.ई.आर.टी व तेलंगाणा ओपन स्कूल सोसायटी-तेलंगाणा राज्य

पाठ्यपुस्तक विकास एवं प्रकाशन समिति

श्रीमती ए. श्रीदेवसेना, आई.ए.एस.,
निदेशक, स्कूली शिक्षा, तेलंगाणा राज्य

श्री ए.कृष्णा राव,
निदेशक, तेलंगाणा ओपन स्कूल सोसायटी, एवं एस.आई.ई.टी., तेलंगाणा राज्य

श्री एस.वेंकटेश्वर शर्मा
निदेशक, तेलंगाणा पाठ्यपुस्तक मुद्रणालय, तेलंगाणा राज्य

प्रकाशन

तेलंगाणा ओपन स्कूल सोसायटी
तेलंगाणा राज्य, हैदराबाद

© Government of Telangana State, Hyderabad

First Published 2021

All rights reserved

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form or by any means without the prior permission in writing of the publisher, nor be otherwise circulated in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser.

The copy right holder of this book is the Sarvatrika Vidya Peetham, Telangana, Hyderabad.

This Book has been printed on 70 G.S.M. SS Maplitho
Title Page 200 G.S.M. White Art Card

तेलंगाणा ओपन स्कूल सोसायटी, तेलंगाणा **2021-22**

Printed in India
at the Telangana Govt. Text Book Press,
Mint Compound, Hyderabad, Telangana.

आमुख

तेलंगाणा ओपन स्कूल सोसायटी (TOSS) का मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थियों के सर्वांगीण विकास में शिक्षा के माध्यम से सहयोग देना है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए दसवीं कक्षा (SSC-TOSS) शिक्षार्थियों के लिए इस नई पाठ्यपुस्तक का निर्माण किया गया है। तेलंगाणा राज्य में हिंदी का शिक्षण प्रथम भाषा, द्वितीय भाषा व तृतीय भाषा (अन्य भाषा) के रूप में किया जाता है। इन तीनों रूपों में हिंदी के अध्ययन-अध्यापन का मुख्य उद्देश्य भाषायी कौशलों और व्यावसायिक कुशलता का विकास करना तथा उत्तम व्यक्तित्व का निर्माण करना है। इसीलिए इन तीनों रूपों का सम्मिलन करते हुए तेलंगाणा ओपन स्कूल सोसायटी की हिंदी नवीन पाठ्यपुस्तक का निर्माण किया गया है। इस नवीन पाठ्यपुस्तक के निर्माण में एनसीएफ-2005, आरटीई-2009, त्रिभाषा सूत्र तथा नई शिक्षा नीति-2020 के मुख्य बिंदुओं पर प्रकाश डाला गया है। इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण के समय शिक्षार्थियों की आयु, रुचि, योग्यता, स्तर, स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय तथा व्यावसायिक आवश्यकताओं और शिक्षार्थियों के समग्र विकास का विशेष ध्यान रखा गया है।

पाठों के चयन में विशेष सावधानी रखते हुए शिक्षार्थियों की रुचि व स्तर के अनुरूप पाठ्यपुस्तक में कविता, गीत, संवाद, निबंध, कहानी, साक्षात्कार, पत्र-लेखन और एकांकी जैसी विभिन्न विधाओं का संकलन व सृजन किया गया है। इन पाठों की विषयवस्तु शिक्षार्थियों के द्वारा अर्जित ज्ञान को व्यावहारिक जीवन से जोड़ने में पूर्णतः सहयोग दे सकती है। इसमें भाषा के मौखिक व लिखित दोनों रूपों के विकास पर बल दिया गया है और शिक्षार्थियों की भाषायी दक्षता, सृजनशीलता, तार्किक चिंतन तथा अवलोकन व विश्लेषण की क्षमता के विकास हेतु अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया, सृजनात्मक-अभिव्यक्ति और भाषा की बात शीर्षक के अंतर्गत भिन्न-भिन्न अभ्यास दिये गये हैं। सीखने की संप्राप्तियाँ तथा जीवन कौशल पाठ की संरचना के प्रतिबिंब हैं।

आरंभ से अंत तक पाठ की संरचना की शैली शिक्षार्थियों के 'स्व-अधिगम' की पूर्ति करती है। क्योंकि ओपन स्कूल के शिक्षार्थी मुख्यतः 'स्व-अधिगम' पर अधिक निर्भर रहते हैं। इस पाठ्यपुस्तक में 'जीवन-कौशल' के अंतर्गत दिए गए प्रश्न शिक्षार्थियों के सामाजिक जीवन के विकास के साथ-साथ व्यावसायिक गुणों के विकास में सहायक हैं। इस पाठ्यपुस्तक में सरल, सुबोध, रोचक और व्यावहारिक भाषा का प्रयोग किया गया है, जो पूर्णतः मौखिक व लिखित भाषार्जन के अवसर प्रदान करती है।

तेलंगाणा ओपन स्कूल सोसायटी उन सभी के प्रति आभार प्रकट करती है, जिन्होंने इस पाठ्यपुस्तक के लेखन, संपादन, टंकण, चित्रांकन, मुद्रण और प्रकाशन में विशेष सहयोग दिया है। साथ ही उन रचनाकारों के प्रति भी आभारी है जिनकी रचनाएँ पुस्तक में शामिल की गई हैं। इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में मुख्य सलाहकार के रूप में श्रीमती चित्रा रामचंद्रन आई.ए.एस., विशेष प्रधान सचिव, शिक्षा विभाग तेलंगाणा राज्य सरकार का सहयोग अभिनंदनीय है। साथ-साथ श्रीमती ए. देवसेना, आई.ए.एस., निदेशक, स्कूली शिक्षा, तेलंगाणा राज्य का सहयोग अभिनंदनीय है। इसके निर्माण में प्रधान समन्वयक के रूप में संपूर्ण सहयोग देने में श्री मारसानि सोमी रेड्डी का सहयोग प्रशंसनीय है। डीन व अध्यक्ष प्रो. शकीला ख़ानम डॉ. बी.आर.अंबेड्कर ओपन यूनिवर्सिटी का भरपूर सहयोग मिला है। श्रीमती बी.शेषु कुमारी निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी., श्रीमती राधा रेड्डी निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी. का महत्वपूर्ण सहयोग मिला है। हिंदी समन्वयक सय्यद मतीन अहमद का विशेष योगदान सराहनीय रहा है। इस तरह संपादक मंडल, लेखक गण सभी ने विशेष सहयोग दिया है। केंद्रीय हिंदी संस्थान और जिला शिक्षा अधिकारियों, उप-शिक्षाधिकारियों और प्रधानाचार्यों आदि सभी मेधावी गण का प्रत्यक्ष व परोक्ष रुप से इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में सहयोग प्राप्त हुआ है। आप सभी को तेलंगाणा ओपन स्कूल सोसायटी सहर्ष, साभार धन्यवाद देती है। आशा है कि यह पाठ्यपुस्तक सुनिश्चित उद्देश्यों के साथ शिक्षार्थियों के सर्वांगीण विकास में सार्थक सिद्ध होगी।

निदेशक

तेलंगाणा ओपन स्कूल सोसायटी, तेलंगाणा राज्य

शिक्षार्थियों के लिए सूचनाएँ

प्रिय शिक्षार्थियो...

हिंदी की नवीन पाठ्यपुस्तक के साथ हम आपके समक्ष उपस्थित हैं। आपने SSC-TOSS के अंतर्गत हिंदी विषय पढ़ने के लिए चुना, इसके लिए आपको बहुत-बहुत बधाई। हम इस नवीन पाठ्य पुस्तक की विशेषताओं के बारे में आप से बात कर रहे हैं। जैसे कि आप जानते हैं कि भाषा के सहारे ही हम एक दूसरे के साथ अपने विचारों का आदान-प्रदान मौखिक और लिखित दोनों रूपों में करते हैं। दूसरों की बात को हम सुनकर और पढ़कर ग्रहण करते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि इस प्रक्रिया के लिए भाषा-कौशलों (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना) की नितांत आवश्यकता होती है। इस आवश्यकता के अनुरूप हमने इस पाठ्य पुस्तक के द्वारा इन भाषा-कौशलों को अधिक सशक्त और प्रभावी बनाने का प्रयास किया है ताकि आप भाषा पर पकड़ हासिल कर सकें और जीवन के हर क्षेत्र में भाषा का प्रभावी प्रयोग कर सकें। भाषार्जन का अर्थ केवल लिखित रूप का ज्ञान प्राप्त करना नहीं है, बल्कि मौखिक रूप का ज्ञान व विकास भी प्राप्त करना है। अतः हम हिंदी में सुनने-बोलने के मौखिक भाषा विकास का अधिक ध्यान रखें।

इस नवीन पाठ्य पुस्तक में 4 कविता पाठ, 6 गद्य पाठ और उपवाचक के रूप में 1 महत्वपूर्ण कहानी है। आपके सुनने-बोलने के कौशल को विकसित करने, पठन कौशल को विकसित करने, तार्किक चिंतन को बढ़ावा देने, मनोरंजन करने तथा विश्लेषण की क्षमता का विकास करने के लिए यह पाठ्यपुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी। प्रत्येक पाठ का निर्माण एक निश्चित संरचना के आधार पर किया गया है। पाठ का आरंभ सीखने की संप्राप्तियों से होता है। इसमें आपके द्वारा उस पाठ-पठन से अर्जित की जाने वाली दक्षताओं का उल्लेख है। हर पाठ के अंतर्गत क्रमशः उद्देश्य, विधा विशेष, प्रस्तावना, कवि/लेखक परिचय, विषयवस्तु, सारांश, शब्दार्थ और अभ्यास दिए गए हैं। आपको प्रत्येक पाठ अच्छी तरह से पढ़ना है। पढ़ते समय जिन शब्दों के अर्थ आपको समझ में नहीं आते, उन्हें रेखांकित करना है। इन शब्दों के अर्थ पाठ में दिए गए शब्दार्थ में ढूँढ़ना है। यदि इन शब्दों के अर्थ शब्दार्थ में भी नहीं मिलते हैं तो आपको शब्दकोश की सहायता लेनी है। मनोयोगपूर्वक पाठ-पठन के पश्चात् सारांश पढ़कर पाठ को अच्छी तरह समझना है। इसके पश्चात् अभ्यासों पर ध्यान देना है। ये अभ्यास- अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया, अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता और भाषा की बात जैसे शीर्षकों के अंतर्गत दिए गए हैं।

''**अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया**'' के अंतर्गत दिए गए प्रश्नों के उत्तर आपको पाठ में मिल जायेंगे। इसके लिए आपको पाठ के विषय में शिक्षकों, सहपाठियों व मित्रों से चर्चा करनी चाहिए और पाठ बार-बार पढ़ना चाहिए। इन्हीं प्रश्नों में एक प्रश्न अपठित गद्यांश/पद्यांश से संबंधित है। आपको गद्यांश/पद्यांश अच्छी तरह से पढ़ना है, समझना है और दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखने हैं।

''**अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता**'' के अंतर्गत स्वरचना और सृजनात्मक अभिव्यक्ति से संबंधित प्रश्न (लघु उत्तरीय और दीर्घ उत्तरीय प्रश्न) हैं। इन प्रश्नों के उत्तर आपको सोच-विचार कर अपने शब्दों में लिखना हैं। इन प्रश्नों में एक प्रश्न सृजनात्मक अभिव्यक्ति (विविध विधाओं) से संबंधित है। इस प्रश्न से आपकी सृजनात्मक क्षमता का विकास होगा। इसी भाग में अनिवार्य रूप से एक प्रश्न मनोरेखा चित्रण (Mind Map) के रूप में दिया गया है। प्रश्न में कुछ बिंदु दिए गए हैं। उन बिंदुओं के आधार पर उत्तर लिखना है और मौखिक रूप में भी प्रस्तुत करना है।

''**भाषा की बात**'' के अंतर्गत व्याकरणांशों के अभ्यास दिए गए हैं। प्रत्येक पाठ से संबंधित व्याकरणांश अभ्यासों में निहित हैं।

अंत में ''**जीवन-कौशल**'' से संबंधित प्रश्न भी है। इसका उत्तर भी आपको सोच-विचार कर अपने शब्दों में स्पष्ट करना है। इस प्रश्न का मुख्य उद्देश्य मौखिक और सामाजिक जीवन के विकास के साथ-साथ व्यावसायिक गुणों और क्षमताओं का विकास कर आप को सशक्त बनाना है।

आशा है भाषायी कौशलों और व्यावसायिक अवसरों से परिपूर्ण यह नवीन पाठ्यपुस्तक सुनिश्चित उद्देश्यों के साथ सुनिश्चित उद्देश्यों के साथ सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण सिद्ध होगी।

निदेशक

तेलंगाणा ओपन स्कूल सोसायटी, तेलंगाणा राज्य

शिक्षकों के लिए सूचनाएँ

आदरणीय शिक्षको ...

- इस पुस्तक के सदुपयोग के लिए पूर्णतः मनोयोगपूर्वक पुस्तक पढ़ें। पाठ्यपुस्तक के प्रारंभ में ही 'आमुख', शिक्षार्थियों के लिए सूचनाएँ तथा पाठ्यपुस्तक की दार्शनिकता (अंग्रेज़ी में) दी गयी है।
- 'आमुख' के पठन से आपको पाठ्यपुस्तक संबंधी मौलिक जानकारी प्राप्त होगी। 'शिक्षार्थियों के लिए' जो सूचनाएँ दी गई हैं उन्हें पहले आप स्वयं पढ़ें फिर छात्रों से पढ़वायें। ये सूचनाएँ छात्रों को समझ में आयीं या नहीं, देखें। इन सूचनाओं के अंतर्गत 'अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया' 'अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता','भाषा की बात' और 'जीवन-कौशल' के अंतर्गत दिए गए अभ्यासों का उल्लेख हैं। आपको इन शीर्षकों के अंतर्गत दिए गए अभ्यासों को क्रमबद्ध रूप में छात्रों से करवाना है।
- पाठ्य-पुस्तक की दार्शनिकता (Philosophy) के अंतर्गत पाठ्य-पुस्तक के उद्देश्य, शैक्षिक मापदंड-सीखने की संप्राप्तियाँ और पाठ की संरचना का विस्तारपूर्वक वर्णन है। इनका पठन आपके अध्यापन कार्य को सरल, सुगम, रोचक और उद्देश्यपूर्ण बनाने में सहायक सिद्ध होगा।
- प्रत्येक पाठ में पाठ का नाम, सीखने की संप्राप्तियाँ, उद्देश्य, विधा-विशेष, प्रस्तावना, कवि/लेखक परिचय, विषय-वस्तु और अभ्यास-कार्य दिए गए हैं। अभ्यास- कार्यों में अनिवार्य रूप से मनोरेखा चित्रण और जीवन कौशल से संबंधित प्रश्न हैं। इन्हें छात्रों से अनिवार्य रूप से करवाना है। शिक्षण केंद्र में आबंटित दिनों की संख्या के आधार पर एक-एक पाठ के लिए कालांश-विभाजन कर लें।

- स्वरचना के प्रश्नों के उत्तर लिखने से पहले कक्षा में चर्चा करवायें। तत्पश्चात् अपने शब्दों में लिखने के लिए प्रेरित करें।
- इस बात का सदा ध्यान रहें कि भाषा विकास का अर्थ केवल भाषा के लिखित रूप का ही नहीं बल्कि मौखिक रूप का भी विकास करना है। अतः इस नवीन पाठ्य पुस्तक में लिखित भाषा के साथ-साथ मौखिक भाषा के विकास के लिए भी विशेष स्थान दिया गया है।
- **भाषा की बात** के प्रश्नों के लिए अनेक उदाहरण शिक्षार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करें।
- **सृजनात्मक अभिव्यक्ति** के प्रश्नों के लिए भी चर्चा करवायें और विभिन्न विधाओं के सृजन के लिए शिक्षार्थियों को प्रेरित करें।
- शिक्षार्थियों की सुविधा के लिए प्रत्येक शिक्षण केंद्र में एक शब्दकोश की व्यवस्था हो।
- प्रत्येक पाठ के अभ्यास एक पुस्तिका (note book) में लिखवायें। समय-समय पर उनकी जाँच करें तथा उनमें सुधार के लिए अपनी सलाह दें।
- कक्षा-कक्ष शिक्षण के साथ ऑनलाईन शिक्षण की व्यवस्था की जायेगी। इस सुविधा का अध्ययन-अध्यापन में भरपूर सहयोग लें।
- पाठों में अभ्यासों के अंतर्गत दिए गए प्रश्न ज्यों-के-त्यों परीक्षा में पूछे नहीं जा सकते इसीलिए शिक्षार्थियों को स्व-लेखन के लिए प्रेरित करें। स्व-लेखन का कार्य शिक्षार्थियों के लिए परीक्षा उपयोगी तो सिद्ध होगा ही, साथ ही उनके भाषायी कौशलों के विकास में सहायक भी होगा।
- शिक्षार्थियों की पठन समग्रता के विकास के लिए बाल-साहित्य, समाचार-पत्र,मैगज़ीन और अन्य पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरित करें।
- शिक्षण केंद्र में शिक्षार्थियों के लिए वाद-विवाद, भाषण, क्विज़, निबंध लेखन, गीत-संगीत, नाटक, अभिनय जैसी प्रतियोगिताओं का आयोजन करें।
- सदा इस बात का स्मरण रहें कि शिक्षार्थियों के भाषा व समग्र विकास में पाठ्य पुस्तक एक उत्तम साधन मात्र है, साध्य नहीं। इसे भाषा विकास के विविध संसाधनों से जोड़ने का भरपूर प्रयास करें। जैसे-पुस्तकालय, कंप्यूटर, दूरदर्शन, सिनेमा, भाषा संबंधी खेल आदि।
- हिंदी शिक्षण में मातृभाषा या माध्यमिक भाषा का यथासंभव कुछ हद तक सहारा लिया जा सकता है। परंतु पूर्णतः अनुवाद शिक्षण न हो। आवश्यकता के अनुसार बहुभाषिकता का सीमित प्रयोग भी किया जा सकता है।
- इस नवीन पाठ्य-पुस्तक का मुख्य उद्देश्य भाषा के मौखिक व लिखित दोनों रूपों के विकास के साथ-साथ शिक्षार्थियों को सृजनशील बनाना है और उनका समग्र विकास करना है। आशा है कि आदरणीय शिक्षक गण इन बातों को अच्छी तरह समझकर SSC-TOSS शिक्षार्थियों के भाषा, सृजन और समग्र विकास में भरपूर सहयोग देंगे।

निदेशक
तेलंगाणा ओपन स्कूल सोसायटी, तेलंगाणा राज्य

PHILOSOPHY OF THE NEW TEXT BOOK HINDI

1. GOALS AND OBJECTIVES OF CURRICULUM

INTRODUCTION:

Telangana open school society(TOSS) provides educational opportunities for people who wish to study further and qualify for a better tomorrow. With this objective it provides education to all with a special concern for girls and women, rural youth, working men and women, SCs, STs, BCs, minorities, differently abled persons and others who for one reason or another couldn't continue their education up to class X with the formal system. It is offering SSC course from the year 2008-2009.There is no upper age limit for admission in the society. However ,the minimum age for enrollment in SSC is 14 years.

Since 2008-2009 TOSS is using textbooks prepared by national institute of open school society (NIOS).For 12 years same books were followed. During these years RTE 2009 came into force, continuous comprehensive evaluation implemented and meanwhile document of NEP 2020 was published. To adapt the changes happened in the field of education TOSS has decided to develop new textbooks.

Before the development of textbook there is a need to fix the goals and objectives of curriculum. The goals and objectives of curriculum (**Hindi**) are :-

- Promote self learning and Inclusive eduction.
- Develop basic skills of Hindi language like listening, speaking, reading, writing along with the development of vocabulary and creative expression.
- Encourage creative and critical thinking.
- Develop moral character and personal discipline.
- Strengthens ethical, spiritual, mental, social, physical, emotional and constitutional values.
- Promote work experience which develop orientation to the world of work and prepare the learners to honest and gainful work.
- Develops Professionalism and promotion of life skills.
- Aware the learners about the importance of technology and communication.
- Creates linkage between 10^{th} and 12^{th} class.
- Prepares the learner to face upcoming challenges of next century which demands understanding, skills and application strategy for the increasingly competitive and globalised world.
- Aware the learner about Gender sensitivity (To save girl child) National Integration and disaster management.
- Create awareness and Respect towards Telangana and Indian Culture.

- Promotes **5H (HEAD, HEART, HAND, HEALTH, HAPPINESS)**

➢ **HEAD** :Development of knowledge
➢ **HEART** :Development of feelings
➢ **HAND** :Development of activities
➢ **HEALTH** :Maintaining good health
➢ **HAPPINESS** :Creation of happiness

The goals and objectives are determined on the basis of learners age, abilities, interest and level of acquisition. The learner centered curriculum definitely gives the scope of **Joyful Self Learning** in a meaningful way.

2. ACADEMIC STANDARDS-LEARNING OUTCOMES (HINDI)

(I) Understanding –Reflection : 1.listening-speaking 2.reading-writing

❖ The learner -

- Reads and actively participate in discussions.
- Reads and understand the poems, stories, playlets, conversations, biographies and auto biographies.
- Reads with comprehension the given text/material and applies his own strategies like predicting,previewing,reviewing and summarising.
- Reads the comprehension and writes the answers for the given questions.
- Reads literary texts for enjoyment/pleasure and compares,interprets and appreciate characters, themes and plots and gives opinion.

(II) Expression-Creativity : 3.self-writing 4.creative expression 5.appreciation

❖ The learner -

- Write short answers, long answers in his/her own words. While writing answers uses appropriate punctuation marks and correct spelling.
- Writes letters, short stories, poems, slogans, articles and conversations.
- Exhibit in action and practice the values of honesty , cooperation , patriotism while writing on variety of topics.
- Appreciate similarities and differences across languages in a multilingual society.
- Recognize and appreciate cultural experiences and diversities in the text and makes written presentations.

(III) Grammar : 6.vocabulary 7.grammar skills etc.

❖ The learner -

- Uses words, phrases, idioms and word chunks for meaning making in context.
- Write short answers, paragraphs, reports using appropriate vocabulary and grammar on a given theme.
- Use suffixes, prefixes, tenses, synonyms and antonyms.
- Develops overall language skills.

(IV) Life skills:Adopts and Promotes different life skills.

3. DOCUMENTATION REPORT OF DEVELOPMENT OF NEW HINDI TEXT BOOK

Taking into consideration the important points of NCF – 2005, RTE – 2009 and NEP – 2020 the development work of new textbook has been started. It is a learner centered textbook which gives the scope of self learning. The language of the book is simple, easily understandable and interesting. The textbook helps in all around development of a child. It gives a scope of joyful learning in a meaningful way.

The book consists of 10 lessons for Detail study and 1 lesson for Non-detail. All the lessons are based on different themes like: Language skills, moral, social, emotional and constitutional values, environmental concerns, patriotism, usage of technology and communication tools, importance of Indian culture etc. These themes are represented with the help of different discourses like poems, stories, playlets, essays, letter writings, conversations, interviews etc.

4. TITLE OF THE BOOK

The title of the book is 'Honge Kaamyaab'. The title itself is very unique as it highlights the First Lesson of a book "Hum Honge Kaamyaab". It motivates the learner to achieve success in life with courage & Self confidence. It also helps in establishing peace and promoting harmony.

5. COVER PAGE

Cover Page reflects the book. A good Cover page is that which gives the scope to think, analyse and reflect. The coverpage of the book 'Honge Kaamyab' is a blend of different values & Life Skills.

Front Cover page encourages professionalism and gender sensitivity. It enchance the self confidence among the learners.

Back Cover page awares the reader about environmental concerns, importance of agriculture and farmer and reknowned hindi poets and authors. Cover page of this book represents the gist of themes included in a book.

6. PREFACE

Preface of this book is very much potential to draw the readers attention. This reflects about the objectives & Procedures adopted in the text book. It also acknowledges each and everyone who gave their contribution and Co-operation in the development of the book.

7. GUIDELINES FOR THE STUDENTS

Students Guidelines gives detailed information about the language skills, structure of the book, procedure of a lesson and the acquisition of different learning outcomes and life skills.

8. GUIDELINE FOR THE TEACHERS

Under the Guidelines for teachers, the philosophy of book is presented in a short & attractive way. It gives information about the division of teaching periods, usage of dictionary, other reference books, online classes and computers etc. These guidelines will fecilitate the teachers to design their teaching goals.

9. STRUCTURE OF THE LESSON

All the above lessons have been developed with a uniform structure as shown below:

1. Name of the Lesson
2. Author's name
3. Academic standards vs Learning outcomes
   - Understanding-Reflection
   - Expression-Creativity
   - Grammar
   - Life Skills
4. Objectives:
   - Cognitive
   - Affective
   - Application
   - Practicality
5. Discourse description
6. Introduction of lesson
7. Lesson-content presentation
8. Summary
9. Words and Meanings
10. Language Exercises : (under following themes)
    - Understanding-Reflection
    - Expression-Creativity
    - Grammar
    - Life Skills

10. SPECIAL FEATURES

1. Concept of LIFE SKILLS added in each and every lesson.
2. One question of 'MIND MAP' is given in each and every lesson under Expression and Creativity with speaking skills development.
3. For the acquisition of communication skills, oral questions are added under the questions of understanding (questions given is a Box), Reading-reflection, creative-expression and life skills.
4. QR code
   From this, we can conclude that this textbook will definitely develop different values and language skills of a learner.
5. Artificial Intelegence – ICT Connectivitiy.

पाठ्यपुस्तक निर्माण सहभागी-गण

समन्वय व सह-समन्वय

श्री सय्यद मतीन अहमद

हिंदी समन्वयक व लेखक, एस.सी.ई.आर.टी व तेलंगाणा ओपन स्कूल सोसायटी - तेलंगाणा राज्य

श्रीमती जी. किरण

सह-समन्वय, लेखिका, एस.आर.जी., तेलंगाणा राज्य

श्रीमती कविता

सह-समन्वय, लेखिका, एस.आर.जी., तेलंगाणा राज्य

सहभागिता

डॉ. ऋतु भसीन

लेखिका, एस.आर.जी., तेलंगाणा राज्य

श्रीमती चंदना

लेखिका, एस.आर.जी., तेलंगाणा राज्य

श्री मुहम्मद उमर अली

एस. आर. जी., तेलंगाणा राज्य

श्री मुहम्मद यूसुफ़ुद्दीन

एस. आर. जी., तेलंगाणा राज्य

श्री के. शिवराजन

एस. आर. जी., तेलंगाणा राज्य

श्री मुहम्मद क़दीर अहमद

एस. आर. जी., तेलंगाणा राज्य

श्रीमती योगिता भाटिया

हिंदी लेखिका, नई दिल्ली

श्री सय्यद अलाउद्दीन

एस. आर. जी., तेलंगाणा राज्य

श्री मुहम्मद शरीफ़ अहमद

एस. आर. जी., तेलंगाणा राज्य

श्रीमती शांता कुमारी

एस.आर.जी., तेलंगाणा राज्य

चित्रांकन

श्री कुरेल्ला श्रीनिवास, प्रधानाध्यापक,

जेड.पी.एच.एस. वेंकटेश्वर नगर, नलगोंडा

डी.टी.पी., ले आउट & डिज़ाइन

श्रीमती आरीफ़ा सुल्ताना, तेलंगाणा हिंदी अकादमी, हैदराबाद

Mail Id: telanganagraphics@gmail.com; ✆ : 7095337078

राष्ट्र-गान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे!
भारत भाग्यविधाता।
पंजाब, सिंध, गुजरात, मराठा,
द्राविड़, उत्कल बंग।
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा
उच्छल जलधि-तरंग।
तव शुभ नामे जागे।
तव शुभ आशिष माँगे,
गाहे तव जयगाथा!
जन-गण-मंगलदायक जय हे!
भारत भाग्यविधाता।
जय हे! जय हे! जय हे!
जय, जय, जय, जय हे!

- रवींद्रनाथ टैगोर

वंदेमातरम्

वंदेमातरम् वंदेमातरम्
सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम्
सस्यश्यामलाम् मातरम् वंदेमातरम्
शुभ्रज्योत्सना पुलकित यामिनीम्
पुल्लकुसुमिता द्रुमदल शोभिनीम्
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्
सुखदाम् वरदाम् मातरम् वंदेमातरम्

-बंकिमचंद्र चटर्जी

सारे जहाँ से अच्छा

सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा।
हम बुलबुले हैं उसकी, यह गुलसिताँ हमारा।।
पर्बत वो सबसे ऊँचा, हमसाया आसमाँ का।
वो संतरी हमारा, वो पासबाँ हमारा।।
गोदी में खेलती हैं, जिसकी हज़ारों नदियाँ।
गुलशन है जिनके दम से, रश्क-ए-जिनाँ हमारा।।
मज़हब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना।
हिंदी हैं हम, वतन है, हिंदोस्ताँ हमारा।।

- मोहम्मद इक़बाल

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है और समस्त भारतीय मेरे भाई-बहन हैं। मैं अपने देश से प्रेम करता हूँ और इससे प्राप्त विशाल एवं विविध ज्ञान-भंडार पर मुझे गर्व है। मैं सर्वदा इस देश एवं इसके ज्ञान-भंडार के अनुरूप बनने का प्रयास करूँगा। मैं अपने माता-पिता और अध्यापकों तथा समस्त गुरुजनों का आदर करूँगा और प्रत्येक व्यक्ति के प्रति नम्रतापूर्वक व्यवहार करूँगा। मैं जीव-जंतुओं से भी प्रेमपूर्वक व्यवहार करूँगा। मैं अपने देश और उसकी जनता के प्रति अपनी भक्ति की शपथ लेता हूँ। उनके मंगल एवं समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।

- पैडिमर्रि वेंकटा सुब्बाराव

विषय-सूची

1. हम होंगे कामयाब (कविता) - 1

2. राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी (संवाद) - 7

3. कुछ साक्षात्कार ऐसे भी (साक्षात्कार) - 18

4. माँ मुझे आने दे! (कविता) - 30

5. संचार जगत और हिंदी (पत्र-लेखन) - 38

6. हमारा प्यारा तेलंगाणा (निबंध) - 48

7. मेरे देश की धरती (कविता) - 62

8. चाणक्य की चुनौतियाँ (एकांकी) - 71

9. साहस की राह में... (कहानी) - 80

10. नीति दोहे (कविता) - 89

★ उपवाचक बड़े भाई साहब (कहानी)

भाग - 1 - 96

भाग - 2 - 99

भाग - 3 -101

भाग - 4 -105

1. हम होंगे कामयाब - कविता

- गिरिजा कुमार माथुर

शैक्षिक मापदंड - सीखने की संप्राप्तियाँ

हम इस पाठ के द्वारा निम्नलिखित सीखने की संप्राप्तियों का ज्ञानार्जन करेंगे।

I **अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया**

(i) सुर-ताल-लय के साथ कविता पढ़ेंगे।

(ii) कविता की रसानुभूति एवं भावानुभूति को आत्मसात करेंगे।

(iii) कविता के भाव से नई उमंग, नया उत्साह और नई प्रेरणा प्राप्त करेंगे।

(iv) पाठ के आधार पर वाक्यों का सही क्रम पहचानेंगे।

(v) दिए गए विकल्पों में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति करेंगे।

(vi) बोध प्रश्नों के उत्तर सोच-विचार कर मौखिक रूप में देंगे।

(v) कविता के मुख्य बिंदुओं की चर्चा कर मौखिक रूप में व्याख्या करेंगे।

II **अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता**

(i) कवि गिरिजाकुमार के बारे में अपने शब्दों में लिखेंगे।

(ii) कविता का उद्देश्य व संदेश अपने शब्दों में लिखेंगे।

(iii) कामयाबी के पथ पर अग्रसर होने का मूल मंत्र अपने शब्दों में लिखेंगे।

(iv) समृद्ध भारत का पोस्टर बनायेंगे। उसकी प्रस्तुति मौखिक रूप में करेंगे।

III **भाषा की बात**

(i) पाठ में आए नए शब्दों से परिचित होंगे और वाक्य प्रयोग करेंगे।

(ii) समानार्थी, विलोमार्थी और पुनरुक्त शब्दों से परिचित होंगे।

(iii) संज्ञा और सर्वनाम में अंतर पहचानेंगे।

IV **जीवन-कौशल**

(i) जीवन में कामयाबी और विश्वास का महत्व जानेंगे। उसकी व्याख्या मौखिक रूप में करेंगे।

उद्देश्य

कविता विधा से परिचित होने के साथ-साथ कविता का अर्थ व मुख्य भाव समझना। भाषा-कौशलों की मौखिक एवं लिखित रूप से संप्राप्ति करना। आत्मविश्वास की भावना बढ़ाने के साथ-साथ नई उमंग के अंकुर प्रस्फुटित करना इस कविता का मुख्य उद्देश्य है।

विधा विशेष

इस पाठ की विधा 'कविता' है। हिंदी साहित्य की विधाओं में कविता एक सशक्त विधा है। कविता में भावों और कल्पना की प्रधानता होती है। इसमें कवि की अनुभूति की अभिव्यक्ति होती है। कविता भावनाओं को उदात्त बनाने के साथ-साथ सौंदर्यबोध को भी सजाती और सँवारती है। प्रस्तुत पाठ 'हम होंगे कामयाब' एक प्रेरणादायक कविता है। चिंतन की अपेक्षा कविता में आशावादी भावनाओं की प्रधानता है। यह कविता मुख्यतः एकता व शांति के महत्व को उजागर करती है और समाज में मानव मूल्यों की महत्ता दर्शाती है।

प्रस्तावना

कवि गिरिजाकुमार माथुर द्वारा रचित "हम होंगे कामयाब" एक अनुदित कविता है। इस कविता के मूल कवि चार्ल्स अल्बर्ट टिंड्ली हैं।

कविता की पंक्तियाँ कवि के आशावादी व्यक्तित्व को दर्शाती हैं। अटल रहना, धैर्य-धारण करना, दूसरों का सम्मान करना, प्रेम तथा भाईचारे की भावना बढ़ाना, शांति की कामना करना एवं स्वयं पर विश्वास रखना जैसे सद्गुणों का विकास ही कविता का संदेश है।

कवि परिचय

गिरिजा कुमार माथुर का जन्म सन् 1918 में मध्यप्रदेश के 'गुना' नगर में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा झांसी, उत्तर प्रदेश में ग्रहण करने के बाद उन्होंने एम.ए. अंग्रेज़ी व एल.एल.बी. की उपाधि लखनऊ से प्राप्त की। शुरू में कुछ समय तक वकालत की और बाद में आकाशवाणी और दूरदर्शन में कार्यरत हुए। उनका निधन सन् 1994 में हुआ।

गिरिजा कुमार माथुर की प्रमुख रचनाएँ - नाश और निर्माण, धूप के धान, शिलापंख चमकीले, भीतरी नदी की यात्रा, (काव्य संग्रह), जन्म कैद (नाटक), नयी कविताः सीमाएँ और संभावनाएँ (आलोचना) हम होंगे कामयाब (अनुदित गीत) आदि हैं।

होंगे कामयाब, होंगे कामयाब,

हम होंगे कामयाब, एक दिन

हो, हो! मन में है विश्वास,

पूरा है विश्वास, हम होंगे कामयाब एक दिन।।

होगी शांति चारों ओर,

होगी शांति चारों ओर एक दिन,

हो, हो! मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास,

होगी शांति चारों ओर एक दिन।।

हम चलेंगे साथ-साथ,

डाल हाथों में हाथ,

हम चलेंगे साथ-साथ एक दिन,

हो, हो! मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास,

हम चलेंगे साथ-साथ एक दिन।।

नहीं डर किसी का आज,

नहीं डर किसी का आज, एक दिन

हो, हो! मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास,

नहीं डर किसी का आज, एक दिन।।

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

1. कवि को किस बात का विश्वास है?
2. शांति की स्थापना के लिए हम क्या-क्या कर सकते हैं?
3. हाथों में हाथ डालकर चलना क्या दर्शाता है?
4. 'नहीं डर किसी का आज' कवि ने ऐसा क्यों कहा है?

सारांश

प्रस्तुत कविता 'हम होंगे कामयाब' में कविता की पंक्तियाँ कवि के आशावादी व्यक्तित्व को दर्शाती हैं। कवि का दृढ़ विश्वास है कि हम सब एक-न-एक दिन अवश्य कामयाब होंगे और उन्नति के शिखर पर पहुँच कर पूरे विश्व को शिक्षा - दीक्षा देने में समर्थ होंगे। सारे विश्व के लिए हम एक आदर्श बनेंगे।

कवि कहते हैं कि मानव जगत कहीं - कहीं, कभी-कभी एक दूसरे से भाषा, जाति, धर्म और ऊँच-नीच के भेद-भाव में लिप्त दिखाई देता है। लेकिन उनका दृढ़ विश्वास है कि वह दिन अवश्य आएगा जब सब लोग आपसी दूरियों को मिटाकर एक-दूसरे के साथ प्रेम और भाईचारे से रहेंगे। यह मानव जगत अखंड होगा और चारों ओर सुख-शांति की स्थापना होगी। हम सब मिलकर हाथों में हाथ डाले साथ-साथ प्रगति पथ पर चलेंगे और आगे बढ़ेंगे।

कवि का यह मानना है कि हम स्वतंत्र हैं। हमें किसी का डर नहीं है। आज हम सक्षम हैं और हमें अपने देश पर गर्व है। हम सदा कामयाब होंगे और होते रहेंगे।

शब्दार्थ

1. कामयाब = सफल
2. विश्वास = भरोसा
3. चारों ओर = चारों तरफ
4. डर = भय
5. साथ-साथ = मिलजुलकर

अभ्यास-कार्य

I अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(i) **कविता के मुख्य बिंदु पहचानिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उनकी व्याख्या कीजिए।** (मौखिक)

(ii) **पाठ के आधार पर वाक्यों का सही क्रम पहचानिए।**

1. नहीं डर किसी का आज ( )
2. हम चलेंगे साथ-साथ ( )
3. होगी शांति चारों ओर ( )
4. हो, हो! मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास ( )

(iii) **कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।**

1. हम ..... कामयाब एक दिन। (होंगे/नहीं होंगे)
2. मन में है विश्वास, ... है विश्वास। (पूरा/अधूरा)
3. हम चलेंगे .....। (अकेले/साथ-साथ)
4. होगी ..... चारों ओर। (क्रांति/शांति)
5. ..... में है विश्वास। (मन/तन)

II अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 4-5 **वाक्यों में लिखिए।**

1. हमें कोई भी काम विश्वास के साथ क्यों करना चाहिए?
2. ''नहीं डर किसी का आज, नहीं डर किसी का आज'' से कवि का क्या तात्पर्य है?
3. शांति की स्थापना कब संभव हो सकती है?

2. राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी - *संवाद*

शैक्षिक मापदंड - सीखने की संप्राप्तियाँ

हम इस पाठ के द्वारा निम्नलिखित सीखने की संप्राप्तियों का ज्ञानार्जन करेंगे।

I **अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया**

(i) आरोह-अवरोह के साथ विराम चिह्नों का प्रयोग करते हुए पाठ पढ़ेंगे।

(ii) उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति करेंगे।

(iii) अपठित गद्यांश के प्रश्नों के उत्तर देंगे।

(iv) बोध प्रश्नों के उत्तर सोच-विचार कर मौखिक रूप में देंगे।

(v) पाठ के मुख्य बिंदुओं की चर्चा कर मौखिक रूप में व्याख्या करेंगे।

II **अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता**

(i) पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखेंगे।

(ii) हिंदी के महत्व के बारे में अपने शब्दों में लिखेंगे।

(iii) समाज में भाषा के प्रयोग का महत्व जानेंगे और अपने शब्दों में लिखेंगे।

(iv) हिंदी दिवस का निमंत्रण पत्र बनाकर मौखिक रूप में प्रस्तुत करेंगे।

III **भाषा की बात**

(i) पर्यायवाची और विलोमार्थी शब्द लिखेंगे।

(ii) शब्द समूहों के लिए एक शब्द लिखेंगे।

(iii) संयुक्ताक्षर और द्वित्वाक्षर शब्दों की पहचान करेंगे।

(iv) प्रत्यय पहचानेंगे।

IV **जीवन-कौशल**

(i) जीवन में मित्रों तथा अन्य संबंधियों से वार्तालाप करते समय शिष्टाचार, स्वाभाविकता तथा शालीनता का महत्व जानेंगे और उसकी व्याख्या मौखिक रूप में करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ का मुख्य उद्देश्य संवाद विधा से परिचित होते हुए संवाद के मौखिक एवं लिखित रूप का विकास करना है। हिंदी के प्रयोग के साथ-साथ दैनिक जीवन में विचारों की संतुलित अभिव्यक्ति करना है। परिवेशानुकूल भाषा प्रयोग करते समय सहजता, स्वाभाविकता, विनम्रता एवं शिष्टाचार का महत्व समझना है।

विधा विशेष

प्रस्तुत पाठ एक संवाद पाठ है। यह हिंदी की गद्य विधाओं में से एक है। दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच हुए वार्तालाप को 'संवाद' कहते हैं। संवाद का सामान्य अर्थ बातचीत है। संवाद की भाषा सरल एवं व्यावहारिक होती है। विषय की अनुकूलता, रोचकता, स्पष्टता, सहजता आदि संवाद के अनिवार्य तत्व हैं। इसमें पात्र की प्रकृति और रुचि पर विशेष ध्यान दिया जाता है। प्रस्तुत पाठ विषय संबंधी जिज्ञासा के साथ-साथ पात्रों की स्थिति, आयु के अनुरूप भाषा-शैली तथा शालीनता की अभिव्यक्ति से ओतप्रोत है।

प्रस्तावना

प्रस्तुत पाठ में हिंदी की महत्ता को दर्शाया गया है। 'हिंदी पखवाड़ा' को लेकर दो मित्रों की जिज्ञासा का समाधान प्रश्नोत्तर द्वारा शिक्षक के माध्यम से किया गया है। साथ ही हिंदी भाषा के संवैधानिक अनुमोदन से लेकर इसकी राष्ट्रीय - अंतरराष्ट्रीय विकास यात्रा की सुंदर एवं सटीक चर्चा संवाद के रूप में प्रस्तुत की गई है।

स्कूल की घंटी बजी। बच्चे अपने-अपने बस्ते उठाकर कक्षाओं से घर के लिए निकल पड़े। तभी अचानक अब्दुल की नज़र नोटिस बोर्ड पर जाती है। उसने अपने मित्र चंद्रशेखर को आवाज़ लगाई.....

अब्दुल : भाई चंद्र! ज़रा यहाँ तो आओ!

चंद्र : क्या हुआ? क्यों हल्ला मचा रहे हो? मुझे देर हो रही है। आज घर जल्दी जाना है।

अब्दुल : अच्छा! चले जाना। पहले यहाँ तो आओ।

चंद्र : धीरज रखो भाई! आ रहा हूँ।

अब्दुल : (नोटिस बोर्ड की ओर इशारा करते हुए) मैं तुम्हें यह दिखाना चाहता हूँ।

चंद्र : अरे! यह नोटिस कब लगाया गया? मध्याह्न भोजन के समय तो नहीं था।

अब्दुल : अरे भाई! शायद अभी-अभी लगाया गया होगा।

चंद्र : पढ़ो तो सही, किस विषय से संबंधित है?

अब्दुल : इस नोटिस में 'हिंदी पखवाड़ा' कार्यक्रम की सूचना दी गयी है।

चंद्र : अच्छा! अब हमारे स्कूल में हिंदी पखवाड़ा मनाया जाएगा। यह तो बहुत ही अच्छी बात है न!

अब्दुल : लेकिन यह पखवाड़ा क्या होता है?

चंद्र : इसकी जानकारी तो मुझे भी नहीं है दोस्त।

अब्दुल : चलो, क्यों न हम अपने मास्टर जी से पूछें? वे ही हमें इसकी विस्तार रूप से जानकारी देंगे। चलो, चलते हैं।

चंद्र : नहीं-नहीं मित्र! आज नहीं, आज घर जल्दी पहुँचना है।

अब्दुल : ठीक है, कल हिंदी की कक्षा में हम इसकी जानकारी मास्टर जी से ले लेंगे।

अगले दिन, प्रार्थना सभा में.....

प्रधानाचार्य : प्यारे बच्चो! गुड मॉर्निंग, क्या आप लोगों ने नोटिस बोर्ड पढ़ा?

बच्चे : हाँ, सर (एक स्वर में)।

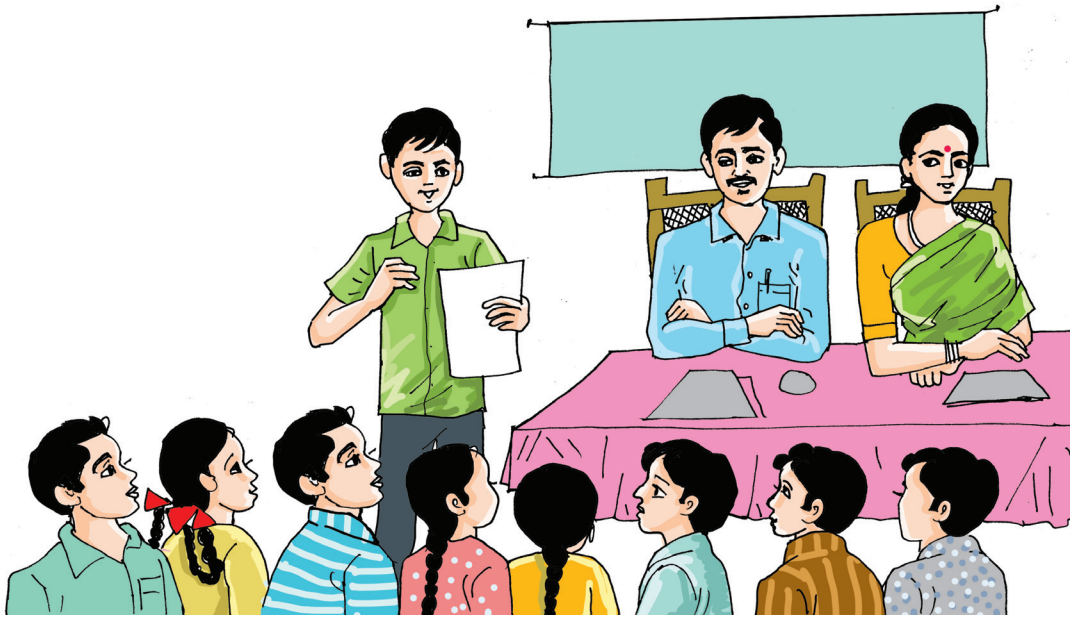

प्रधानाचार्य : बहुत अच्छा! कल से शुरू होने वाले 'हिंदी पखवाड़ा' में आप सभी को विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं में भाग लेना होगा। पखवाड़े के अंतिम दिन प्रतिभागियों को प्रोत्साहन पत्र के साथ-साथ विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए जायेंगे।

(प्रार्थना की समाप्ति और बच्चों का कक्षाओं में प्रवेश.....)

मास्टर जी : अब्दुल और चंद्र, तुम दोनों में क्या बातचीत हो रही है?

अब्दुल : मास्टर जी! हम हिंदी पखवाड़े के बारे में बात कर रहे हैं। हिंदी दिवस के बारे में तो हम जानते हैं कि यह 14 सितंबर को राष्ट्रीय स्तर पर और 10 जनवरी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मनाया जाता है। परंतु हमें यह जानना है कि हिंदी पखवाड़ा क्या होता है?

मास्टर जी : पखवाड़ा! पंद्रह दिन के समय को पखवाड़ा कहते हैं।

चंद्र : मास्टर जी लेकिन यह हिंदी पखवाड़ा क्यों मनाया जाता है?

मास्टर जी : चंद्र, तुमने बहुत अच्छा प्रश्न पूछा है। मैं आज इसी विषय पर चर्चा करने वाला हूँ।

अब्दुल : यह तो बहुत अच्छी बात है। हम सभी को हिंदी पखवाड़े के बारे में जानना है।

मास्टर जी : चलो, आज तुम्हारे सभी प्रश्नों के उत्तर मिल जायेंगे।
बच्चो! हिंदी के प्रचार व प्रसार के लिए तथा जन-जन में हिंदी भाषा को स्थापित करने के लिए हिंदी पखवाड़ा मनाया जाता है।

दूसरा छात्र : मास्टर जी! 'हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम' कब मनाया जाता है?

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

1. अब्दुल की नज़र किस पर पड़ी?
2. नोटिस बोर्ड में किसकी सूचना दी गयी थी?
3. प्रधानाचार्य जी ने प्रार्थना सभा में कौनसी जानकारी दी?
4. पखवाड़े के अंतिम दिन किन्हें सम्मानित किया जाएगा?

मास्टर जी : हिंदी पखवाड़ा सितंबर मास में मनाया जाता है। यह पूरे पंद्रह दिनों तक मनाया जाता है। कभी-कभी हिंदी दिवस कार्यक्रम साप्ताहिक और मासिक स्तर पर भी मनाया जाता है।

चंद्र : इन दिनों क्या किया जाता है मास्टर जी?

मास्टर जी : इन दिनों हिंदी भाषा में ही कई कार्यक्रमों का आयोजन होता है।

चंद्र : क्या इन कार्यक्रमों का आयोजन केवल विद्यालयों में ही होता है?

मास्टर जी : नहीं नहीं, इन कार्यक्रमों का आयोजन विद्यालयों के साथ-साथ सरकारी और गैर सरकारी कार्यालयों में भी किया जाता है।

अब्दुल : मास्टर जी हिंदी पखवाड़े में किन-किन कार्यक्रमों का आयोजन होता है?

मास्टर जी : बच्चो! हिंदी पखवाड़े में साहित्य और संस्कृति से संबंधित कार्यक्रमों का आयोजन होता है। इन सभी कार्यक्रमों का आयोजन हिंदी में ही किया जाता है। कार्यालयों में तथा स्कूलों में बड़े से बड़े अधिकारियों से लेकर कर्मचारियों तक को हिंदी भाषा का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

एक छात्र : किंतु मास्टर जी हम 14 सितंबर को ही हिंदी दिवस क्यों मनाते हैं?

मास्टर जी : भारत में हर साल 14 सितंबर हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। क्योंकि स्वतंत्र भारत की संविधान सभा ने इस दिन (14 सितंबर 1949) हिंदी को भारतीय संघ की राजभाषा के रूप में अपनाया था।

अब्दुल : किंतु मास्टर जी हिंदी को ही राजभाषा का सम्मान क्यों प्राप्त हुआ?

मास्टर जी : जानते हो बच्चो! प्रत्येक स्वतंत्र राष्ट्र की अपनी एक भाषा होती है। वह भाषा उस राष्ट्र का सम्मान व स्वाभिमान होती है। राष्ट्रीय एकता तथा राष्ट्र स्थायित्व के लिए राज भाषा का होना अनिवार्य होता है। उस स्थान को प्राप्त करने के लिए सर्वव्यापकता, प्रचुर मात्रा में साहित्यिक रचना के साथ-साथ सरलता, रोचकता व वैज्ञानिकता जैसे गुणों का होना भी

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

5. हिंदी दिवस और विश्व हिंदी दिवस कब मनाया जाता है?

6. हिंदी की माँग कहाँ-कहाँ बढ़ती जा रही है?

ज़रूरी है। ये सभी गुण हमारी हिंदी भाषा में पर्याप्त रूप से विद्यमान हैं। इसलिए इसे राष्ट्रीय गौरव प्राप्त है। इतना ही नहीं यह पूर्णतः एक वैज्ञानिक भाषा भी है। इसकी लिपि देवनागरी है। इस भाषा में जैसा लिखा जाता है वैसा ही पढ़ा जाता है। आज विश्व भर में क़रीब डेढ़ सौ से अधिक विश्वविद्यालय हिंदी संबंधी कोर्सों का संचालन कर रहे हैं। हिंदी का प्रचार व प्रसार इतना बढ़ गया है कि बंगलादेश, नेपाल, म्यांमार, भूटान, फिज़ी, गुयाना, सूरीनाम, त्रिनिडाड एवं टुबेगो, दक्षिण आफ्रिका, बहरीन, कुवैत, ओमान, कत्तर, सौदी अरब गणराज्य, श्रीलंका, अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी, जापान, मॉरिशस, ऑस्ट्रेलिया आदि देशों में दिन प्रतिदिन हिंदी की माँग बढ़ती ही जा रही है। विदेशों में भी हिंदी की रचनाएँ लिखी जा रही हैं, जिनमें वहाँ के साहित्यकारों का भी विशेष योगदान है।

यह सब के लिए गर्व की बात है कि विदेशों में भारतीयों से आपसी व्यवहार करने के लिए वहाँ के लोग भी हिंदी सीख रहे हैं। बैंक, मीडिया, फिल्म उद्योग आदि क्षेत्रों में हिंदी की उपयोगिता दिन-ब-दिन बढ़ती ही जा रही है। इस तरह आज हिंदी नए-नए रोज़गारों का प्रमुख आधार बन चुकी है। हिंदी से अपने भविष्य का निर्माण करने वालों के लिए -

www.rajbhasha.nic.in

www.ildc.gov.in

www.bhashaindia.com

www.ssc.nic.in

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

7. किसके लिए राज भाषा का होना अनिवार्य है?
8. हिंदी के क्षेत्र में बेहतर काम करने वालों को कौनसा पुरस्कार दिया जाता है?

www.parliamentofindia.nic.in

www.ibps.in

www.khsindia.org

www.hindinideshalaya.nic.in

आदि वेबसाइट सेवा में तत्पर हैं। यह हमारे लिए गर्व की बात है कि सारा विश्व हिंदी का महत्व जानता है।

चंद्र : मास्टर जी आपने हमें बहुत अच्छी जानकारी दी है। धन्यवाद।

अब्दुल : मास्टर जी मैं कहानी लेखन प्रतियोगिता में भाग लूँगा और अवश्य पुरस्कार पाऊँगा।

सभी छात्र : (एक स्वर में) हाँ, हम भी।

मास्टर जी : शाबाश प्यारे बच्चो! पुरस्कार शब्द से मुझे एक बात और याद आई। हिंदी के क्षेत्र में बेहतर काम करने वालों को भारत के राष्ट्रपति द्वारा इस दिन नई दिल्ली के विज्ञान भवन में 'राजभाषा गौरव पुरस्कार' से सम्मानित किया जाता है। ये राजभाषा पुरस्कार विभागों, मंत्रालयों, पी.एस.यू और राष्ट्रीयकृत बैंकों को प्रदान किए जाते हैं।

सभी बच्चे : पढ़नी है भई पढ़नी है
हिंदी हमको पढ़नी है
अ आ इ ई हम पढ़ेंगे
पढ़-लिख कर आगे हम बढ़ेंगे।

सारांश

प्रस्तुत पाठ 'राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी' में हिंदी भाषा का महत्व दर्शाया गया है। 'हिंदी पखवाड़े' की सूचना को लेकर दो मित्रों की जिज्ञासा का समाधान उनके मास्टर जी द्वारा हुआ है। प्रत्येक स्वतंत्र राष्ट्र की अपनी एक भाषा होती है। यह भाषा राष्ट्र का सम्मान एवं स्वाभिमान होती है। राष्ट्रीय एकता तथा राष्ट्र स्थायित्व के लिए एक भाषा का होना आवश्यक होता है। यह स्थान हिंदी को प्राप्त है। हिंदी ने सरल एवं सुबोध होने के कारण लोकप्रिय भाषा का स्थान ग्रहण किया

है। विदेशों में भी आज हिंदी भाषा बड़े ही चाव से सीखी व बोली जा रही है। हिंदी भाषा के विकास में साहित्यकारों का भी भरपूर सहयोग प्राप्त हो रहा है। 14 सितंबर को भारत में और 10 जनवरी को विश्व में हिंदी दिवस मनाया जाता है। स्कूलों, सरकारी कार्यालयों तथा गैर सरकारी कार्यालयों में हिंदी कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। सभी कार्यक्रम चाहे वे साहित्य से संबंधित हों या संस्कृति से, हिंदी में ही आयोजित किये जाते हैं। इन कार्यक्रमों का आयोजन साप्ताहिक, पाक्षिक या मासिक स्तर पर होता है। हिंदी में उत्तम प्रतिभा का प्रदर्शन करने वालों को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में 'राजभाषा गौरव' पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है। आज हिंदी नए-नए रोज़गारों का प्रमुख आधार बन चुकी है। आज हिंदी की अनेकों वेबसाइटें हमारी सेवा में तत्पर हैं।

शब्दार्थ

प्रचार	= फैलाव, कोई नियम या बात फैलाने के लिए बहुत से लोगों के सामने रखना
प्रसार	= संचार, विस्तार
गरिमा	= गौरव, महिमा
अपितु	= बल्कि, किंतु
धरोहर	= अमानत
नज़र	= दृष्टि
हल्ला	= शोर
धीरज	= धैर्य
मध्याह्न भोजन	= दोपहर का भोजन
पखवाड़ा	= पंद्रह दिन का समय
विस्तार	= फैलाव
प्रतिभागी	= किसी प्रतियोगिता में भाग लेने वाला
चर्चा	= वाद-विवाद, विचार-विमर्श
स्थापित	= स्थापना करना

राष्ट्रीय	= राष्ट्र से संबंधित
अंतरराष्ट्रीय	= विदेशों से संबंधित
साप्ताहिक	= सात दिनों का समय
गणराज्य	= गणतंत्र
योगदान देना	= सहयोग करना
कर्मचारी	= वेतन पर काम करनेवाला व्यक्ति, कार्यकर्ता
प्रोत्साहित	= उत्साहित
सम्मान	= आदर
स्वाभिमान	= आत्म सम्मान
सर्वव्यापकता	= जिसकी व्याप्ति चारों ओर हो
प्रचुर	= बहुत अधिक
सुबोध	= सरल
वैज्ञानिक	= विज्ञान से संबंधी

अभ्यास-कार्य

I अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(i) **पाठ के मुख्य बिंदु पहचानिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उनकी व्याख्या कीजिए।** (मौखिक)

(ii) **कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।**

1. अब्दुल ने ..... की ओर इशारा किया था। (नोटिस बोर्ड/फाटक)
2. बच्चे अपनी-अपनी ..... से निकल पड़े। (घर/कक्षाओं)
3. चंद्र को ..... ने आवाज़ लगाई। (मास्टर जी/अब्दुल)
4. पंद्रह दिन के समय को ..... कहते हैं। (माह / पखवाड़ा)
5. राष्ट्रीय हिंदी दिवस ..... को और अंतरराष्ट्रीय हिंदी दिवस ..... को मनाया जाता है। (14 सितंबर/10 जनवरी, 10 जनवरी /14 सितंबर)

(iii) **निम्नलिखित गद्यांश पढ़िए। पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

हिंदी फिल्मों में गीतों का आगमन आलम आरा (1931) से हुआ और तब से अब तक ये लोकप्रिय सिनेमा का अनिवार्य अंग बने हुए हैं। प्रारंभ में अभिनेताओं को अपने गीत खुद गाने पड़ते थे जो उसी समय रिकॉर्ड किए जाते थे। बाद में जब यह महसूस किया गया कि हर अभिनेता या अभिनेत्री अच्छा गायक भी हो यह ज़रूरी नहीं, तो पार्श्वगायन की प्रथा शुरू हुई और उससे गायन और भी परिष्कृत हुआ। इस बीच रिकॉर्डिंग की तकनीक में भी बहुत सुधार हुआ और उससे भी गायन की शैली में परिवर्तन हुआ।

प्रश्न

1. हिंदी फिल्मों के प्रारंभ में किन्हें गीत स्वयं गाने पड़ते थे?
2. गीतों का आगमन फिल्मों में कब हुआ?
3. गद्यांश में किस नई प्रथा की बात हुई है?

II अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 4-5 वाक्यों में लिखिए।

1. अब्दुल और चंद्र की रुचि क्या जानने में थी और क्यों?
2. हिंदी दिवस क्यों मनाया जाता है?
3. कोई भी भाषा सीखने से क्या लाभ होता है?
4. राज भाषा का स्थान पाने के लिए किसी भी भाषा में कौन से गुण होने चाहिए?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 8-10 वाक्यों में लिखिए।

1. भाषा और साहित्य एक सिक्के के दो पहलू हैं। कैसे?
2. राष्ट्र के निर्माण में भाषा अपना सहयोग किस प्रकार देती है?

3. हिंदी भाषा को प्रोत्साहित करते हुए पाँच नारे लिखिए।

4. निम्न बिंदुओं के आधार पर अपने स्कूल में मनाये जाने वाले 'हिंदी दिवस' के लिए निमंत्रण पत्र तैयार कीजिए और **मौखिक** रूप में प्रस्तुत कीजिए।

III भाषा की बात

(i) **कोष्ठक में दी गई सूचना पढ़िए और उसके अनुसार उत्तर दीजिए।**

1. घर, गर्व, दिवस (पर्यायवाची शब्द लिखिए और वाक्य प्रयोग कीजिए।)
2. स्वतंत्र, अंतिम, सहयोग (विलोमार्थक शब्द लिखिए।)
3. बच्चे, जल्दी, राष्ट्र, पंद्रह, सम्मान (संयुक्ताक्षर और द्वित्वाक्षर शब्दों को अलग कीजिए।)
4. चार रास्ते, सात दिन, पंद्रह दिन, तीस दिन, तीन सौ पैंसठ दिन (शब्द समूहों के लिए एक शब्द लिखिए।)
5. मासिक, राष्ट्रीय, सरलता, सरकारी (प्रत्यय अलग कीजिए।)

IV जीवन-कौशल

(1) 'जीवन में शिष्टाचार और शालीनता की अत्यंत आवश्यकता होती है।' अपने शब्दों में व्याख्या कीजिए। **(मौखिक)**

3. कुछ साक्षात्कार ऐसे भी

- साक्षात्कार

शैक्षिक मापदंड – सीखने की संप्राप्तियाँ

हम इस पाठ के द्वारा निम्नलिखित सीखने की संप्राप्तियों का ज्ञानार्जन करेंगे।

I **अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया**

(i) आरोह-अवरोह व विराम चिह्नों का प्रयोग करते हुए पाठ पढ़ेंगे।

(ii) दिए गए प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' में देंगे।

(iii) अपठित गद्यांश के प्रश्नों के उत्तर देंगे।

(iv) बोध प्रश्नों के उत्तर सोच-विचार कर मौखिक रूप में देंगे।

(v) पाठ के मुख्य बिंदुओं की चर्चा कर मौखिक रूप में व्याख्या करेंगे।

II **अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता** (i) पाठ का उद्देश्य लिखेंगे।

(ii) महान व्यक्तियों के बारे में लिखेंगे।

(iii) साक्षात्कार के लिए प्रश्नावली बनायेंगे। उसे मौखिक रूप में प्रस्तुत करेंगे।

III **भाषा की बात** (i) नए शब्दों के अर्थ जानेंगे और वाक्य-प्रयोग करेंगे।

(ii) वचन बदलेंगे, पर्यायवाची व विलोमार्थी शब्द लिखेंगे।

(iii) 'उपसर्ग' पहचानेंगे वाक्य-रचना समझेंगे।

IV **जीवन-कौशल** (i) जीवन में महापुरुषों के कार्यों से प्रेरणा लेकर आदर्श गुणों का विकास करने के प्रति अपने विचार मौखिक रूप में प्रस्तुत करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ का मुख्य उद्देश्य साक्षात्कार विधा से परिचित होना है। महान व्यक्तियों के व्यक्तित्व की विशेषताओं से अवगत होना तथा समस्या के कारणों और उनके समाधान संबंधी उपायों की जानकारी पाना है।

विधा विशेष

प्रस्तुत पाठ साक्षात्कार विधा में है। प्रश्नोत्तर द्वारा की जाने वाली प्रक्रिया को ही साक्षात्कार कहते हैं। साक्षात्कार के लिए उद्देश्ययुक्त प्रश्नावली का होना आवश्यक है। यह समाचार संकलन का एक प्रभावी तरीका है। इसके माध्यम से किसी व्यक्ति विशेष के विचारों, अनुभवों और मनोवृत्तियों के बारे में जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

प्रस्तावना

प्रस्तुत पाठ में भारत की महान हस्तियों जैसे महात्मा गाँधी, डॉ. बी.आर. अंबेड्कर, मदर टेरेसा और ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के जीवन और विचारों से परिचित कराया गया है।

भारत के राष्ट्रपिता - महात्मा गाँधी

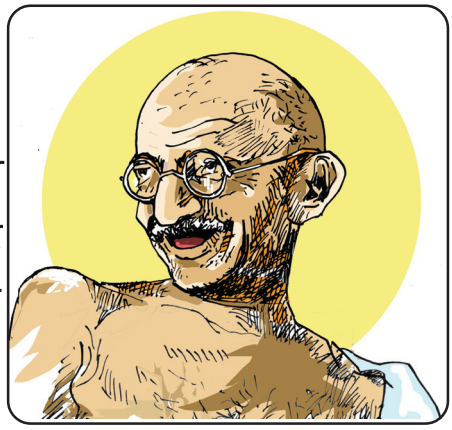

दे दी हमें आज़ादी बिना खड्ग बिना ढाल,
साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल।

भारत के राष्ट्रपिता मोहनदास करमचंद गाँधी जी का जन्म 2 अक्तूबर, 1869 को गुजरात के पोरबंदर नामक गाँव में हुआ था और उनका स्वर्गवास 30 जनवरी, 1948 को दिल्ली में हुआ था।

स्वतंत्रता आंदोलन के समय 30 अप्रैल, 1931 के दिन फॉक्स मूवीटोन न्यूज़ के पत्रकार ने गाँधी जी का साक्षात्कार लिया था। आइए जानेंगे, उस साक्षात्कार में विदेशी पत्रकार के प्रश्न और गाँधी जी के उत्तर क्या थे?

पत्रकार : इंग्लैंड द्वारा अपनी माँगें न मानने पर आप क्या करेंगे?

गाँधी जी : बेशक हम आज्ञा के उल्लंघन के साथ ही सत्याग्रह से जुड़े सारे तरीके अपनाएँगे। आगे की बातें मैं अभी नहीं बता सकता।

पत्रकार : इंग्लैंड से आज़ादी मिलने पर क्या आप बाल विवाह को खत्म कर देंगे?

गाँधी जी : मैं आज़ादी से पहले ही ऐसा करना चाहता हूँ।

पत्रकार : सेकंड राउंड टेबल कॉन्फ्रेंस में बुलाया जाता है तो आप वेस्टर्न ड्रेस में जाएँगे या पारंपरिक भारतीय ड्रेस में?

गाँधी जी : मैं यूरोपियन देश का नहीं हूँ। अनुमति मिलने पर वैसे ही जाऊँगा, जैसे मैं आज हूँ।

पत्रकार : इंग्लैंड के प्रिंस से बंकिघम पैलेस में मुलाक़ात हुई तो आप क्या पहनेंगे?

गाँधी जी : मैं जैसा रहता हूँ, वैसा ही जाऊँगा। मैं आर्टिफीशियल नहीं बनना चाहता।

पत्रकार : देश की आज़ादी के लिए क्या आप जान दे सकते हैं?

गाँधी जी : (बापू ने थोड़ी चुप्पी साधी, फिर इसे बुरा सवाल क़रार देते हुए हँसने लगे।)

पत्रकार : क्या इंग्लैंड इस वक़्त भारत को पूर्ण स्वराज दे सकता है?

गाँधी जी : इस पर मैं अभी कुछ नहीं कहना चाहता।

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

1. इंग्लैंड द्वारा अपनी माँगें न मानने पर गाँधी जी क्या करना चाहते थे?
2. दूसरे गोलमेज़ सम्मेलन में गाँधी जी कैसे जाना चाहते थे?

भारत रत्न - डॉ. भीमराव अंबेड्कर

आपने संविधान बनाया, छुआछूत का भेद मिटाया,
समानता का पाठ पढ़ाया, मानवता का बिगुल बजाया।

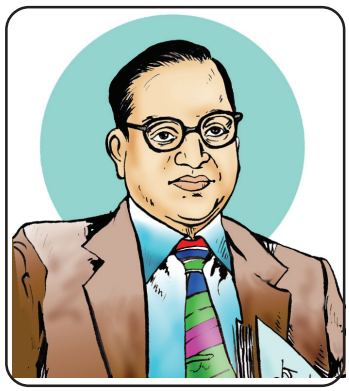

इन पंक्तियों के साक्षात् प्रतिबिंब भीमराव रामजी अंबेड्कर का जन्म 14 अप्रैल, 1891 को हुआ था। उनका स्वर्गवास 6 दिसंबर, 1956 को हुआ। भारत रत्न डॉ. बाबा साहब अंबेड्कर लोकप्रिय एवं समाज-सुधारक थे। इतना ही नहीं वे विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री एवं भारतीय बहुज्ञ थे। वे समता-ममता से पूरित मानवतावादी भी थे। सन् 1956 में उन्होंने बौद्ध धर्म अपनाया था।

ऐसे महामेधावी से लिए गए साक्षात्कार की कुछ झलकियाँ इस प्रकार हैं।

(सन् 1953 में बी.बी.सी. द्वारा लिया गया डॉ. अंबेड्कर का वास्तविक साक्षात्कार)

प्रश्न : समानता से आपका क्या अभिप्राय है?

उत्तर : सभी नागरिक एक समान होते हैं- चाहे वे किसी भी क्षेत्र, वर्ग, जाति या प्रांत के हों। सभी नागरिक अपने जीवनयापन के समान अवसर प्राप्त कर सकें। इसके लिए व्यवस्था को चाहिए कि नई योजनाओं व कार्यक्रमों का समय-समय पर आयोजन करें, जिससे लोगों में समानता की भावना बढ़ें।

प्रश्न : देश के निर्माण में उस देश की जनता की क्या भूमिका होती है?

उत्तर : किसी भी देश के निर्माण में वहाँ की जनता की भूमिका श्रेष्ठ होती है। जनता के द्वारा ही देश का भविष्य निर्धारित होता है। जनता सदा अपने अधिकारों तथा कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक बने रहें। देश के प्रति ईमानदार बनें जिससे देश का विकास हो सके।

प्रश्न : लोकतंत्र में चुनाव व्यवस्था से क्या अभिप्राय है?

उत्तर : लोकतंत्र का अर्थ ही है जनता द्वारा, जनता के लिए चलाया जाने वाला शासन। इस शासन को सफलतापूर्वक पूर्ण करने का कार्य चुनाव व्यवस्था द्वारा किया जाता है। चुनाव (मतदान), जनता के लिए ऐसा सुनहरा मौक़ा है, जिससे सही नायक का चुनाव कर देश का विकास किया जा सकता है।

प्रश्न : बालिका शिक्षा व महिला विकास पर आप क्या कहना चाहेंगे?

उत्तर : भारतीय संविधान में बालिका तथा महिला सुरक्षा को लेकर कई कानून बनाए गए हैं। यहाँ लड़का-लड़की एक समान हैं। सभी को इसका पालन करना चाहिए। भारत में बालिका शिक्षा पर अनेक कार्यक्रम व योजनाएँ बनाई जाएँगी, जिनसे महिलाओं की स्थिति में काफ़ी सुधार होगा।

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

3. डॉ. भीमराव अंबेड्कर जी के बारे में आप क्या जानते हैं?
4. लोकतंत्र में चुनाव व्यवस्था का क्या महत्व है?

अनाथों की नाथ मदर टेरेसा

'प्रार्थना करने वाले होंठों से,
सहायता करने वाले हाथ कहीं अधिक महान हैं।'

ऐसे महान विचार रखने वाली मदर टेरेसा का जन्म 26 अगस्त, 1910 को युगोस्लेविया में हुआ था। अनाथों और कोढ़ के रोगियों की सेवा का उनका मिशन सत्य पर आधारित था। उन्होंने मानवीय सेवा बड़ी सहजता से की थी। वे इसे गॉड गिफ्ट कहती थी। उनके इन विशेष सामाजिक कार्यों के कारण ही सन् 1980 में उन्हें 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया था।

बेघर लोग सड़क पर रहते थे। उनको न खाना मिलता था और न पानी। बीमार लोग दवाई न मिलने के कारण सड़क पर ही दम तोड़ देते थे। कोलकाता में 'मिशनरीज़ ऑफ़ चैरिटी' की स्थापना कर बेसहारा लोगों की सेवा के लिए उन्होंने बहुत कष्ट उठाए थे। ऐसी अनुपम सेवाएँ अर्पित करने वाली मदर टेरेसा का स्वर्गवास जब 5 सितंबर 1997 को हुआ था, तब सारी दुनिया शोक-सागर में डूब गई थी।

आइए, टेरेसा जी के जीवन से संबंधित कुछ विषय साक्षात्कार में दिए गए प्रश्नों के उत्तर से जानेंगे, जो हमारे लिए प्रेरणा के पात्र बनेंगे।

पत्रकार : आप के लिए सबसे अधिक आनंदित स्थान कौन सा है, जहाँ बार-बार जाकर आपको बेहद खुशी होती है?

टेरेसा : मुझे कालीघाट पसंद है, जहाँ लोग खुशी के लिए खुशी से जीते हैं। (कालीघाट कोलकाता की एक गली का नाम है, जहाँ टेरेसा जी का आश्रम था। जिन बेसहारों के पास भोजन, पानी, बीमारी के इलाज के लिए दवाई तक नहीं होती थीं, उन लोगों को वे अपने आश्रम में ले आतीं और अपने हाथों से उनकी सेवा करती थीं।)

पत्रकार : भविष्य के लिए आपकी क्या योजनाएँ हैं?

टेरेसा : मैं आज के बारे में सोचती हूँ। कल कभी लौटकर आएगा नहीं और आने वाले कल का कोई भरोसा नहीं।

पत्रकार : आप बहुत ग़रीब लोगों के लिए ही क्यों काम करती हैं? सारे ग़रीबों के लिए क्यों नहीं?

टेरेसा : मैं उनकी सेवा करती हूँ, जो एकदम असहाय हैं और बहुत ग़रीब हैं।

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

5. भारत सरकार ने टेरेसा जी को किस पुरस्कार से सम्मानित किया था?
6. मदर टेरेसा को कालीघाट क्यों पसंद है?

मिज़ाइल मैन ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

जिंदगी और समय विश्व के दो बड़े अध्यापक हैं। जिंदगी हमें समय का सही उपयोग करना सिखाती है जबकि समय हमें जिंदगी की उपयोगिता बताता है।

इन महान विचारों के प्रतिपादक और भारत के पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी का जन्म 15 अक्तूबर 1931 को रामेश्वरम में तथा स्वर्गवास 27 जुलाई, 2015 को शिलांग में हुआ। इनका आदर्शमय जीवन हम सबके लिए प्रेरणाप्रद है। उनकी बातें नई दिशा दिखाती हैं। उन्होंने करोड़ों आँखों को बड़े सपने देखना सिखाया है। डॉ. कलाम जी बच्चों के बारे में सोचा करते थे। सैकड़ों बच्चे उन्हें प्रतिदिन पत्र लिखते थे। वे सभी पत्रों का जवाब देने का प्रयास करते थे। इन्हीं पत्रों की एक किताब बनाई गई है। (उसी किताब में से बच्चों द्वारा किये गये कुछ प्रश्न और कलाम जी के उत्तर इस साक्षात्कार में प्रस्तुत किए गए हैं।)

छात्र : क्या आप अपने बचपन की कोई न भूल सकने वाली घटना बता सकते हैं?

कलाम जी : मैं अपनी कक्षा पाँचवीं के शिक्षक श्री शिवसुब्रमण्यम अय्यर जी को याद करता हूँ। वे अपने व्याख्यान में पढ़ा रहे थे कि पक्षी कैसे उड़ता है... यह एक अविस्मरणीय अवसर था, जो हमेशा मेरी यादें ताज़ा रखता है और विज्ञान के अध्ययन को आगे बढ़ाने में मेरी सहायता करता है।

छात्र : आप हमारे आदर्श हैं। एक अच्छा व्यक्ति बनने के लिए हमें कुछ सुझाव दीजिए।

कलाम जी : कठिन परिश्रम के साथ-साथ तुम्हें एक अच्छा व्यक्ति बनाएगा। दूसरों के प्रति अच्छी भावना तथा दूसरों से अच्छाई प्राप्त करने का प्रयास करें।

छात्र : आपके जीवन का सबसे अधिक खुशी का दिन कौन-सा है?

कलाम जी : एक बार मैं चिकित्सकों के साथ प्रयोग कर रहा था कि पोलियो से प्रभावित बच्चे भार उठा पाते हैं? प्रयोग के दौरान जब बच्चों ने दौड़ना, चलना और पैडल मारकर साइकिल चलाना आरंभ किया तो उनकी गतिशीलता को देखकर उनके माता-पिता की आँखें भर आई

थीं। उन सबके चेहरों की प्रसन्नता से मुझे बहुत ज़्यादा खुशी हुई।

छात्र : बढ़ती जनसंख्या और कई सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता लाने के लिए हम छात्र क्या कर सकते हैं?

कलाम जी : इसमें दो राय नहीं है कि हमारे देश के सामने बढ़ती जनसंख्या और अन्य सामाजिक समस्याएँ हैं, जहाँ 50% (पचास प्रतिशत) से भी अधिक युवा शक्ति है, जो देश के विकास में प्रमुख योगदान दे रही है। यह भी देखने में आया है कि जहाँ कहीं भी महिला साक्षरता दर अधिक है, वहाँ यह बढ़ती जनसंख्या को नियंत्रित करने में कारगर साबित हुई है। एक छात्र होने के नाते आप सब कम-से-कम पाँच महिलाओं को शिक्षित करें, जो पढ़ना-लिखना नहीं जानतीं। साथ ही आप उन्हें समाज की उन प्रमुख समस्याओं के बारे में बताएँ, जिनसे आजकल की महिलाओं को संकट का सामना करना पड़ रहा है।

छात्र : भारत के युवा नागरिकों के लिए आपका क्या संदेश है?

कलाम जी : मैं सामान्यतः युवाओं से निम्न दस बिंदुओं पर शपथ दिलाता हूँ। वे इस प्रकार है-

1. मैं अपनी शिक्षा पूरी करूँगा और अपना कार्य समर्पण के साथ करूँगा और मैं इनमें श्रेष्ठ बनूँगा।
2. मैं अभी से आगे बढ़कर कम-से-कम दस लोगों को पढ़ना-लिखना सिखाऊँगा, जो पढ़-लिख नहीं सकते।
3. मैं कम-से-कम दस पौधे लगाऊँगा और पूरी ज़िम्मेदारी से उनकी देख-रेख करूँगा।
4. मैं निश्चित रूप से मुसीबत में पड़े अपने साथियों के दुख दूर करने की कोशिश करूँगा।
5. मैं गाँव तथा शहर में यात्रा कर कम-से-कम पाँच लोगों को नशे तथा जुए से पूर्णतः मुक्ति दिलाऊँगा।
6. मैं ईमानदार रहूँगा और भ्रष्टाचार से मुक्त समाज बनाने की पूरी कोशिश करूँगा।

7. मैं एक सजग नागरिक बनूँगा तथा अपने परिवार को कर्मठ बनाऊँगा।
8. मैं मानसिक और शरीरिक चुनौती प्राप्त दिव्यांगों से मित्रवत रहूँगा।
9. मैं किसी धर्म, जाति या भाषा में अंतर का समर्थन नहीं करूँगा।
10. मैं अपने देश तथा देश के लोगों की सफलता पर गर्व करूँगा।

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

7. डॉ. कलाम को बेहद खुशी कब हुई थी?
8. डॉ. कलाम का जीवन हमारे लिए प्रेरणाप्रद क्यों है?

सारांश

प्रस्तुत पाठ में देश के चार महान हस्तियों के साक्षात्कार दिए गए हैं। ये महान हस्तियाँ हैं- महात्मा गाँधी, डॉ. अंबेड्कर, मदर टेरेसा और ए.पी.जे. अब्दुल कलाम। महात्मा गाँधी जी का साक्षात्कार फॉक्स मूवीटोन न्यूज़ के विदेशी पत्रकार ने लिया था। इसमें गाँधी जी ने आज़ादी के पहले की परिस्तिथियों पर चर्चा की थी। अंग्रेज़ों द्वारा अपनी माँगे न मानने पर वे सत्याग्रह करने वाले थे। वे बाल विवाह को आज़ादी से पहले ही खत्म करना चाहते थे। वे आर्टिफीशियल बनना नहीं चाहते थे। वे देश की आज़ादी के लिए जेल जाने के लिए हमेशा तैयार रहते थे और भारत के पूर्ण स्वराज के प्रति आशावादी थे।

डॉ. अंबेड्कर जी ने समानता, देश के निर्माण में लोगों की भूमिका, लोकतंत्र में चुनाव व्यवस्था, अच्छे नायक का चयन तथा बालिका शिक्षा व महिला विकास पर अपने महत्वपूर्ण अभिप्राय बताये थे।

मदर टेरेसा जी कोलकाता के कालीघाट में स्थित अपने आश्रम में अनाथों तथा निस्सहायों की सेवा अपने हाथों से करने में बड़ी आनंदित होती थीं। वे वर्तमान के बारे में ही सोचा करती थीं। वे बेसहारों की सेवा में रत रहना अपना कर्त्तव्य मानती थी।

डॉ. कलाम ने छात्रों को अपने जीवन की कई घटनाएँ सुनाईं। उन्होंने देश के युवाओं को संदेश देते हुए कहा था कि कठिन परिश्रम के साथ-साथ संयुक्त वैज्ञानिक व्यवहार हमें अच्छा व्यक्ति बनाता है। पोलियो से प्रभावित बच्चों की गतिशीलता देखकर माता-पिता की खुशी से उन्हें बेहद खुशी मिलती थी। जनसंख्या पर रोक लगाने के लिए देश की निरक्षर महिलाओं को साक्षर बनाने पर बल देते थे। उन्होंने युवा नागरिकों को अपने द्वारा लिखित दस महत्वपूर्ण बिंदुओं की शपथ दिलाई थी। ऐसे महान व्यक्तियों द्वारा बताए गए मार्ग पर चलकर हम अपने देश को प्रगति की राह पर ले जा सकते हैं।

शब्दार्थ

1. बेशक = निस्संदेह
2. चुप्पी = मौन
3. बहुज्ञ = अनेक विषयों का ज्ञाता
4. विधिवेत्ता = कानून का अच्छा ज्ञाता
5. जागरूक = सतर्क
6. ईमानदार = सच्चा, विश्वासपात्र
7. ज़ख्म = घाव
8. कोढ़ = त्वचा संबंधी संक्रामक रोग
9. सहजता = सरलता, स्वाभाविकता
10. योजना = कार्य करने की रूपरेखा
11. भरोसा = विश्वास
12. व्याख्यान = भाषण
13. जीवंत = जीता-जागता
14. अवसर = मौका
15. सजग = सतर्क
16. कर्मठ = परिश्रमी

अभ्यास-कार्य

I अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(i) **पाठ के मुख्य बिंदु पहचानिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उनकी व्याख्या कीजिए।** (मौखिक)

(ii) **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' में लिखिए।**

1. टेरेसा जी उनकी सेवा करती थी जो एकदम असहाय हैं। ( )
2. शिक्षक ने कलाम जी को समुद्री तट पर सजीव व प्रत्यक्ष उदाहरण दिखाया था। ( )
3. संयुक्त वैज्ञानिक व्यवहार हमें अच्छा व्यक्ति नहीं बनाता है। ( )
4. कलाम जी पोलियो से प्रभावित बच्चों को देखकर रोने लगे थे। ( )
5. अंबेड्कर जी ने समानता का पाठ पढ़ाया था। ( )

(ii) **रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।**

1. टेरेसा जी का जन्म ..... को हुआ था। (26 अगस्त 1910 /26 अगस्त 1920)
2. यदि इंग्लैंड माँगें मान ले तो आप ..... चाहेंगे। (स्वराज/पूर्ण स्वराज)
3. दूसरे गोलमेज़ सम्मेलन में गाँधी जी..... में जाएँगे।
   (पारंपरिक ड्रेस/वेस्टर्न ड्रस)
4. गाँधी जी ..... जाने के लिए हमेशा तैयार रहते थे। (जेल/इंग्लैंड)
5. अंबेड्कर जी ने सन् 1956 में ..... अपनाया था।
   (बौद्ध धर्म/जैन धर्म)

(iii) **अपठित गद्यांश पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

सबसे बड़ी बात यह है कि ईशान के माध्यम से बच्चे में छिपी प्रतिभा सुंदर ढंग से उभारी गई है। फ़िल्म के अंत में इसका परिचय ईशान की चित्रकारी से होता है। चित्रकारी प्रतियोगिता में उसे प्रथम पुरस्कार मिलता है। इसी दृश्य में आमिर ने उसकी मासूमियत को अपने चित्र से उभारा है। इस तरह शिष्य अपने अध्यापक की प्रेरणा से किस तरह आगे बढ़ सकता है, इसका प्रमाण ही यह फ़िल्म है।

प्रश्न

1. फ़िल्म में सुंदर ढंग से ईशान के माध्यम से क्या उभारा गया है?
2. फ़िल्म के अंत में क्या होता है?
3. चित्रकारी प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार किसे मिलता है?
4. यह फ़िल्म किसका प्रमाण है?
5. इस फ़िल्म के दो पात्रों के नाम लिखिए।

II अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 4-5 **वाक्यों में लिखिए।**

1. गाँधी जी पूर्ण स्वराज्य के लिए क्या करना चाहते थे?
2. चुनाव में सही नायक के चयन से देश को क्या लाभ होता है?
3. मदर टेरेसा जी किसे अपना कर्त्तव्य मानती थीं?
4. निरक्षर महिलाओं को साक्षर बनाने से देश को क्या लाभ हो सकता है?
5. कलाम जी को बहुत ज़्यादा खुशी कब हुई थी?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 8-10 **वाक्यों में लिखिए।**

1. अनाथों की नाथ मदर टेरेसा जी के जीवन पर प्रकाश डालिए।
2. किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का साक्षात्कार लेना है तो आप क्या-क्या तैयारियाँ करेंगे?
3. भारत की बढ़ती जनसंख्या और कई सामाजिक समस्याओं का समाधान कैसे किया जा सकता है? अपने विचार लिखिए।
4. कलाम जी द्वारा दिए गए संदेश को अपने मित्र तक आप अपनी भाषा में कैसे पहुँचाएँगे? लिखिए।

5. निम्न बिंदुओं के आधार पर किसी महापुरुष का साक्षात्कार लेने के लिए एक प्रश्नावली बनाइए और **मौखिक** रूप में प्रस्तुत कीजिए।

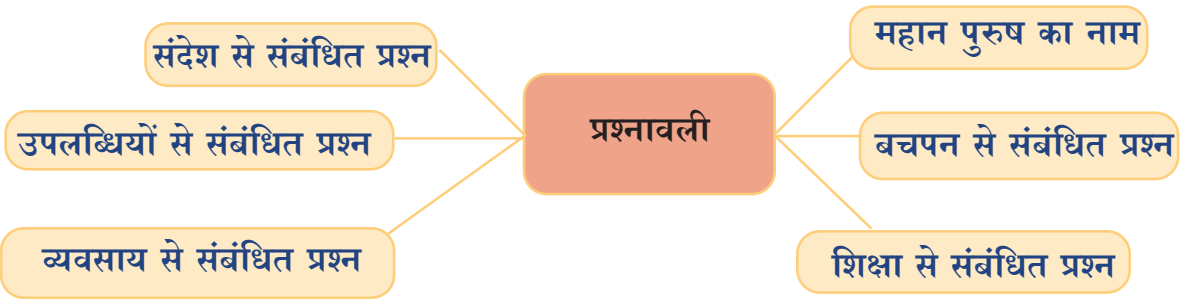

III भाषा की बात

I कोष्ठक में दी गई सूचना पढ़िए और उसके अनुसार उत्तर लिखिए।

1. चुप्पी, जनता, संकट (पर्यायवाची शब्द लिखिए। वाक्य प्रयोग कीजिए।)
2. आज़ादी, सुरक्षा, साक्षर (विलोम शब्द लिखिए।)
3. सड़क, बीमारी, योजना (वचन बदलिए।)
4. विशेष, बेघर, सजीव (उपसर्ग पहचानिए।)
5. रचना के आधार पर वाक्य पहचानिए।
   - (i) हम भारत के निवासी हैं।
   - (ii) हम खूब पढ़ेंगे और समाज को शिक्षित करेंगे।
   - (iii) जो जितनी मेहनत करेगा, वह उतना ही आगे बढ़ेगा।
6. अर्थ की दृष्टि से वाक्य पहचानिए।
   - (i) हमें प्रतिदिन मेहनत करनी चाहिए।
   - (ii) घर में पिता जी भोजन बनाते होंगे।
   - (iii) अगर हम दिल्ली जाते तो लाल किला ज़रूर देखते।
   - (iv) क्या मैं यह फल खा सकता हूँ?

IV जीवन-कौशल

(1) जीवन में महापुरुषों के कार्य प्रेरणाप्रद होते हैं। कथन की पुष्टि उदाहरण के साथ करते हुए अपने विचार प्रस्तुत कीजिए। **(मौखिक)**

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 8-10 **वाक्यों में लिखिए।**

1. 'विश्वास' का प्रभाव तथा अभाव ही जीवन की चुनौतियों में हमें सफल और असफल बनाता है। इस कथन की पुष्टि कीजिए।
2. भारत की अखंडता को बनाए रखने के लिए आप क्या करेंगे?
3. 'कामयाब' होने के लिए व्यक्ति का कर्मठ होना बहुत आवश्यक है। सोदाहरण सिद्ध कीजिए।
4. दिए गए बिंदुओं के आधार पर 'समृद्ध भारत' का पोस्टर बनाइए और मौखिक रूप में प्रस्तुत कीजिए।

समृद्ध भारत → किसान → सैनिक → शिक्षा → प्रौद्योगिकी

III भाषा की बात

(i) **कोष्ठक में दी गई सूचना पढ़िए और उसके अनुसार उत्तर दीजिए।**

1. दिन, शांति, डर, कामयाब (समानार्थी शब्द लिखिए और वाक्य प्रयोग कीजिए।)
2. शांति, विश्वास, डर, कामयाब (विलोमार्थक शब्द लिखिए।)
3. साथ-साथ, कभी-कभी (पुनरुक्ति शब्दों से वाक्य बनाइए।)
4. भारत, वह, हम, विश्वास (संज्ञा और सर्वनाम अलग कीजिए।)

IV जीवन-कौशल

(1) जीवन में कामयाबी हासिल करने के लिए किन-किन गुणों की आवश्यकता होती हैं। अपने शब्दों में व्याख्या कीजिए। (मौखिक)

4. माँ मुझे आने दे

- कविता

- मृदुल जोशी

शैक्षिक मापदंड - सीखने की संप्राप्तियाँ

हम इस पाठ के द्वारा निम्नलिखित सीखने की संप्राप्तियों का ज्ञानार्जन करेंगे।

I अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(i) सुर-ताल-लय के साथ कविता पढ़ेंगे।

(ii) दिए गए प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' में देंगे।

(iii) अपठित पद्यांश के प्रश्नों के उत्तर देंगे।

(iv) बोध प्रश्नों के उत्तर सोच-विचार कर मौखिक रूप में देंगे।

(v) कविता के मुख्य बिंदुओं की चर्चा कर मौखिक रूप में व्याख्या करेंगे।

II अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(i) कवयित्री मृदुल जोशी के बारे में अपने शब्दों में लिखेंगे।

(ii) कविता का उद्देश्य लिखेंगे।

(iii) पाठ के शीर्षक की सार्थकता के बारे में लिखेंगे।

(iv) भ्रूण-हत्या जैसी सामाजिक बुराई के विरुद्ध अपने विचार लिखेंगे। उसकी प्रस्तुति मौखिक रूप में करेंगे।

III भाषा की बात

(i) नए शब्दों के अर्थ जानकर वाक्य प्रयोग करेंगे।

(ii) पर्यायवाची और विलोमार्थी शब्द लिखेंगे।

(iii) दिए गए शब्दों के लिंग पहचानेंगे।

IV जीवन-कौशल

(i) जीवन में भ्रूण-हत्याओं का डटकर विरोध करेंगे और जीवन में बालिका व बालिका शिक्षा का महत्व समझेंगे। इसकी व्याख्या मौखिक रूप में करेंगे।

उद्देश्य

इस कविता का मुख्य उद्देश्य मुक्तक कविता से परिचित होना है। साथ ही समाज के निर्माण में स्त्री और पुरुष के समान महत्व को समझना है।

विधा विशेष

यह एक मुक्तक कविता है। मुक्तक काव्य अपने आप में पूर्ण स्वतंत्र काव्य-रचना होती है। इसमें प्रबंधकीयता नहीं होती है। इसमें एक छंद में कही गयी बात का दूसरे छंद में कही गयी बात से तारतम्य होना आवश्यक नहीं होता है। इसमें प्रत्येक पंक्ति कविता के विषय के इर्द-गिर्द घूमती रहती है। सटीकता और प्रभावोत्पादकता ऐसी कविताओं की पहली माँग होती है।

प्रस्तावना

यह एक प्रेरणादायक कविता है। इसके माध्यम से कवयित्री ने समाज में फैली हुई एक विकट समस्या पर प्रकाश डाला है। यह समस्या 'भ्रूण-हत्या' की है। अजन्मी लड़की के माध्यम से लड़की की आकांक्षाओं व क्षमताओं को उजागर किया गया है तथा भ्रूण-हत्या का विरोध भी किया गया है।

कवयित्री परिचय

कवयित्री मृदुल जोशी का जन्म सन् 1960 में उत्तराखंड के काठगोदाम में हुआ। वे समकालीन हिंदी कविता में एक विशिष्ट पहचान रखती हैं। उन्होंने एम.ए हिंदी में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल से पीएच.डी. की डिग्री प्राप्त की। इनकी रचनाओं का मुख्य विषय 'नारी चेतना' व 'सम समाज का निर्माण' है। इनकी रचनाओं में बिंब विधान, काव्य-धारा, समकालीन हिंदी काव्य में आम आदमी, गुम हो गए अर्थ की तलाश में, शब्दों के क्षितिज से, इन दिनों आदि प्रमुख हैं। इन्हें हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा परिसंवाद-संगोष्ठी में सारस्वत सम्मान प्रदान किया गया है।

माँ मुझे आने दे, डर मत आने दे।
फैलूँगी तेरे आँगन में हरियाली बनकर
लिपटूँगी तेरे आँचल में खुशबू बनकर
मेरी किलक और ठुमकते कदमों में

घर का सन्नाटा बिखर जाएगा
जो पसरा है पिता के दंभ
भाई की उद्दंडता के कारण सदियों से।
पोछ दूँगी अँधेरा, जो तेरे माथे की
सिलवटों में सिमटा है।

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

1. अजन्मी लड़की माँ से क्या कह रही है?
2. लड़की आँगन व आँचल में कैसे रहना चाहती है?
3. घर में सन्नाटा क्यों छाया है?
4. बेटी सन्नाटा कैसे दूर करेगी?

कभी-कभी झर जाता है ओस की बूँदों-सा,
आँखों की कोरों से।
आने तो दे, धुल जाएगा सारा-का-सारा रुखीला
अहसास
अकड़ीला मिज़ाज जो चिपका है घर की
सारी-की-सारी दीवारों
बंद दरवाज़ों, खिड़कियों में।
तेरी आँखों में तैरते ये समुंदर
ये आसमान के अक्स
मैंने देख लिए हैं माँ।
माँ... जा सकती हूँ मैं दूर-पार,
उस झिलमिलाती दुनिया में
ला सकती हूँ वहाँ से चमकीले
टुकड़े तेरे सपनों के,
समुंदर की लहरों के थपेड़ों में ढूँढ़ सकती हूँ मैं
मोती और सीपी और नाविकों के किस्से।
कर सकती हूँ माँ,
मैं सब-कुछ जो रोशनी-सा चमकीला
रंगों-सा चटकीला हो, पर आने तो दे,
डर मत माँ... मुझे आने दे।

- मृदुल जोशी

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

5. समुद्र की लहरों में वह क्या ढूँढ़ना चाहती है?
6. लड़की क्या-क्या कर सकती है?

सारांश

'माँ मुझे आने दे' मृदुल जोशी द्वारा रचित भ्रूण-हत्या के विरोध पर आधारित कविता है। कविता की मुख्य पात्र अजन्मी बिटिया है। इसमें गर्भस्थ शिशु की पुकार है। वह अपनी माँ को बिना डरे उसे दुनिया में लाने का अनुरोध कर रही हैं क्योंकि बेटी परिवार में खुशियाँ लाती है। वह माँ के आँचल से लिपटकर मातृ-प्रेम की अनुभूति करती है। अपनी किलकारियों और नन्हें-नन्हें ठुमकते कदमों (पैरों की आहट) से वह घर के उस सूनेपन को दूर करना चाहती है, जो पिता के घमंड व भाई के ज़िद्दीपन के कारण घर में छाया हुआ है। इसके कारण माँ को दुख देखने पड़ते हैं। वह दुख उसे माँ के माथे की सिलवटों में तथा माँ की आँखों की कोरों से बहते आँसुओं में दिखाई देता है। उस दुखरूपी अँधेरे को बेटी दूर करना चाहती है। वह उसकी आँखों से निकलते आँसुओं को पोछ देना चाहती है। वह बिना बताए ही माँ की आँखों में आँसुओं को देखकर उसका दर्द समझ लेती है। वह माँ के प्रति पिता के रुखीले व्यवहार व अकड़ीले मिज़ाज को धो देना चाहती है। कवयित्री का कहना है कि बेटियाँ भी समुद्र के पार जा सकती हैं तथा माँ के सपनों को पूरा कर सकती हैं। वे भी समुद्र में से मोती-सीपी जैसे अनमोल रत्न ढूँढ़कर ला सकती हैं। वे भी सब कुछ कर सकती हैं, जो एक लड़का कर सकता है। इसीलिए बेटी अपनी माँ से कह रही है- 'डर मत माँ... मुझे आने दे, माँ मुझे आने दे।

शब्दार्थ

1. आँचल	=	पल्ला, साड़ी का छोर
2. किलक	=	किलकारी
3. सन्नाटा	=	स्तब्धता, चुप्पी, मौन
4. पसरा	=	फैला हुआ
5. दंभ	=	घमंड, अहंकार
6. उद्दंडता	=	अक्खड़पन, मनमानी करने का भाव
7. अकड़ीला मिज़ाज	=	घमंडी स्वभाव
8. अक्स	=	परछाई, जल या दर्पण में दिखाई पड़ने वाली किसी वस्तु की छाया

अभ्यास-कार्य

I अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(i) **कविता के मुख्य बिंदु पहचानिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उनकी व्याख्या कीजिए।** (मौखिक)

(ii) **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' में लिखिए।**

1. घर में खामोशी छाई हुई है। ( )
2. बेटी माँ से डरने को कहती है। ( )
3. बेटी माँ के सपने को पूरा करना चाहती है। ( )
4. बेटी ने माँ की आँखों में आँसू देखे हैं। ( )
5. माँ का मिज़ाज अकड़ीला है। ( )

(iii) **निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।**

1. आँगन में ..... फैली हुई है। (हरा भरा/हरियाली)
2. ..... कदमों की आवाज़ से सभी सतर्क हो गए। (उसका/उसके)
3. बगीचे में ..... की खुशबू फैली थी। (फूल/फूलों)
4. अँधेरा ..... की सिलवटों में सिमटा हुआ है। (चेहरे/माथे)
5. बेटी .....में मोती ढूँढ़ सकती है। (नदी/समुंदर)

(iv) **निम्न भाव से संबंधित पंक्तियाँ कविता से ढूँढ़कर लिखिए।**

1) बेटी परिवार में खुशियाँ लाती है।

2) बेटी को माँ का दुख उसके माथे की सिलवटों तथा आँसुओं में दिखाई देता है।

3) वह भी सब कुछ कर सकती है, जो एक लड़का कर सकता है।

(v) **अपठित पद्यांश के प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

बार-बार आती है मुझको मधुर याद बचपन तेरी।
गया ले गया तू जीवन की सबसे मस्त खुशी मेरी।।
चिंता-रहित खेलना-खाना, वह फिरना निर्भय स्वच्छंद।
कैसे भूला जा सकता है, बचपन का अतुलित आनंद?
ऊँच-नीच का ज्ञान नहीं था छुआछूत किसने जानी?
बनी हुई थी वहाँ झोंपड़ी और चीथड़ों में रानी।।
रोना और मचल जाना भी क्या आनंद दिखाते थे।
बड़े-बड़े मोती-से आँसू जयमाला पहनाते थे।।

प्रश्न

1. कवयित्री को किसकी याद आती है?
2. कवयित्री को किसका ज्ञान नहीं था?
3. कवयित्री का बचपन कैसा था?
4. पद्यांश का मुख्य विषय क्या है?

II अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 3-4 वाक्यों में लिखिए।

1. अजन्मी लड़की क्या कहना चाहती है?
2. लड़की के पिता व भाई का व्यवहार कैसा है?
3. 'माँ मुझे आने दे' कविता आपको कैसी लगी? क्यों?
4. 'माँ मुझे आने दे' कविता में किस सामाजिक विषमता का खंडन किया गया है?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 8-10 वाक्यों में लिखिए।

1. 'माँ मुझे आने दे' कविता के द्वारा कवयित्री क्या कहना चाहती है?

2. निम्न बिंदुओं के आधार पर 'भ्रूण-हत्या उन्मूलन' विषय पर एक भाषण-लेख तैयार कीजिए और उसे **मौखिक** रूप में प्रस्तुत कीजिए।

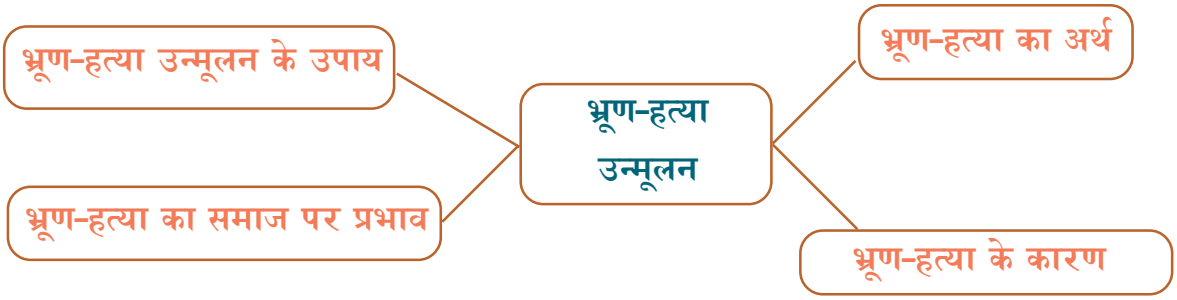

III भाषा की बात

I कोष्ठक में दी गई सूचना पढ़िए और उसके अनुसार उत्तर लिखिए।

1. खुशबू, समुंदर, आसमान (पर्यायवाची शब्द लिखिए और वाक्य प्रयोग कीजिए।)
2. अंधकार, डर, रात (विलोम शब्द लिखिए।)
3. घर, हाथ (तत्सम रूप लिखिए।)
4. किस्सा, लहर, सीपी (वचन बदलिए।)
5. रुखीला, अकड़ीला, उद्दंडता (प्रत्यय लिखिए।)
6. किताब, ग्रंथ, अध्यापक, आँगन, दीवार (लिंग पहचानिए।)

IV जीवन-कौशल

(1) बेटी रोशनी बनकर परिवार व समाज का विकास कर सकती है और अपने जीवन को इतिहास के पन्नों पर दर्शा सकती है। इस कथन को उदाहरण के साथ अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए। **(मौखिक)**

5. संचार जगत और हिंदी

- पत्रलेखन

शैक्षिक मापदंड - सीखने की संप्राप्तियाँ

हम इस पाठ के द्वारा निम्नलिखित सीखने की संप्राप्तियों का ज्ञानार्जन करेंगे।

I **अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया**

(i) आरोह-अवरोह के साथ विराम चिह्नों का प्रयोग करते हुए पाठ पढ़ेंगे।

(ii) पत्र-लेखन की विधा और शैली से परिचित होंगे।

(iii) संचार जगत के विभिन्न साधनों की जानकारी प्राप्त करेंगे।

(iv) बोध प्रश्नों के उत्तर सोच-विचार कर मौखिक रूप में देंगे।

(v) पाठ के मुख्य बिंदुओं की चर्चा कर मौखिक रूप में व्याख्या करेंगे।

II **अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता**

(i) पाठ के उद्देश्य और विधा विशेष के बारे में लिखेंगे।

(ii) संचार जगत के विभिन्न संसाधनों जैसे-व्हाट्स ऐप, इंस्टाग्राम, ब्लॉग आदि के बारे में अपने शब्दों में लिखेंगे।

(iii) संचार जगत में न्यूज़ चैनलों के महत्व के बारे में लिखेंगे।

(iv) विभिन्न प्रकार के पत्र लिखेंगे और मौखिक रूप में प्रस्तुत करेंगे।

III **भाषा की बात**

(i) नए शब्दों के अर्थ जानेंगे और वाक्य प्रयोग करेंगे।

(ii) पर्यायवाची, विलोमार्थी शब्द लिखेंगे। संधि विच्छेद करेंगे।

IV **जीवन-कौशल**

(i) जीवन में संचार जगत से उपलब्ध व्यावसायिक स्त्रोतों का महत्व जानेंगे उसकी व्याख्या मौखिक रूप में करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ का मुख्य उद्देश्य पत्र लेखन की विधा और विविध शैलियों से परिचित होते हुए पत्र लेखन कौशल का विकास करना है। हिंदी को अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाने में सहयोग प्रदान करने वाले विभिन्न सामाजिक माध्यमों (सोशल मीडिया) तथा न्यूज़ चैनलों की महत्ता से परिचित होना है। भविष्य में रोज़गार के साधन के रूप में हिंदी के महत्व से भी अवगत होना है।

विधा विशेष

प्रस्तुत पाठ की विधा पत्र-लेखन है। यह गद्य की एक प्रमुख विधा है। पत्र विचारों के आदान-प्रदान का एक महत्वपूर्ण साधन है। भिन्न-भिन्न संदर्भों और भिन्न-भिन्न व्यक्तियों को लिखे जाने वाले पत्रों की भाषा और शैली में अंतर होता है। पत्र मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं (1) अनौपचारिक पत्र, (2) औपचारिक पत्र। अनौपचारिक पत्र अपने संबंधी, मित्र, सहपाठी और परिचित को लिखे जाते हैं। औपचारिक पत्र दुकानदार, प्रकाशक, संस्था, कार्यालय या अधिकारी को लिखे जाते हैं। पत्र लेखन के समय कुछ सोपानों का पालन करना आवश्यक होता है। ये सोपान क्रमशः पता और तिथि (प्रारंभ में), संबोधन तथा अभिवादन, विषयवस्तु (पत्र का कलेवर), अभिनिवेदन, समापन तथा हस्ताक्षर आदि हैं। पत्र लिखते समय शिष्टाचार के नियमों का पालन करना आवश्यक होता है।

प्रस्तावना

संचार सूचना के संप्रेषण की क्रिया है। इस संसार का प्रत्येक प्राणी, अपने चारों ओर के अन्य प्राणियों से लगभग निरंतर ही सूचनाओं के आदान-प्रदान की आवश्यकता महसूस करता है। उसकी इस आवश्यकता की पूर्ति सोशल मीडिया पर विभिन्न प्लेटफार्मों के द्वारा हो सकती है। इसीलिए संचार जगत में सोशल मीडिया की भूमिका को अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

हैदराबाद

5.10.2020

प्रिय बहन सुशीला,

कैसी हो? यहाँ घर में सब सकुशल हैं। तुम्हारी पढ़ाई कैसी चल रही है? इस बात को जानकर बड़ी खुशी हुई कि 'हिंदी दिवस' पर विद्यालय में आयोजित 'हिंदी कविता लेखन' प्रतियोगिता में तुम्हें प्रथम पुरस्कार मिला है। हिंदी भाषा के प्रति तुम्हारी रुचि देखकर मन प्रसन्न हो उठता है। तुमने बताया कि तुम हिंदी में

बहुत सारे लेख, कहानियाँ और कविताएँ लिख रही हो। तुम अपनी इन रचनाओं को जन-जन तक पहुँचाना चाहती हो। इसके लिए तुमने मुझसे कुछ जानकारी माँगी है।

जैसे कि तुम जानती हो कि आज का युग विज्ञान और तकनीक का युग है। तकनीक हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। क़दम-क़दम पर हमें तकनीक का सहारा लेना पड़ता है। यदि तुम तकनीक को अपना लेती हो तो तुम अपने उद्देश्य में आसानी से सफल हो सकती हो। आज संचार जगत और सामाजिक माध्यमों (सोशल मीडिया) के सारे कार्य तकनीक के द्वारा ही संचालित हैं। सोशल मीडिया प्लेटफार्म के ऐसे अनेक साधन हैं जिनके द्वारा तुम अपने विचारों और रचनाओं को विश्व के कोने-कोने तक पहुँचा सकती हो तथा हिंदी की सेवा भी कर सकती हो। ये साधन हमारे समक्ष व्हाट्स ऐप, इंस्टाग्राम, फेसबुक, ट्विटर और ब्लॉग के रूप में उपस्थित हैं। इनके साथ-साथ अनेक न्यूज़ चैनल भी इस कार्य में अपना-अपना योगदान देते हैं।

व्हाट्स ऐप, इंस्टाग्राम, फेसबुक, ट्विटर आदि पर तुम अपने विचारों को संदेश (मैसेज), वीडियो और ऑडियो के द्वारा पहुँचा सकती हो। इन सभी साधनों का उपयोग हम दैनिक जीवन में कर ही रहे हैं। बच्चे, युवा और बुज़ुर्ग सभी आवश्यकतानुसार इनमें दी गई भाषाओं में से अपनी इच्छुक भाषा का चयन करते हैं और अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। सोशल मीडिया पर जिन भाषाओं में विचारों का आदान-प्रदान होता है उनमें हिंदी का दूसरा स्थान है। यह हम जानते हैं कि सबसे अधिक प्रयोग अंग्रेज़ी भाषा का होता है।

इन साधनों में ही एक अत्यंत महत्वपूर्ण साधन है-ब्लॉग। ब्लॉग गूगल का एक निःशुल्क 'ई-टूल' है, जो एक प्रकार का जालपृष्ठ (वेबपेज) है जिसे हिंदी में 'चिट्ठा' (ब्लॉग) कहते हैं। इसे दैनिकी (डायरी) के रूप में भी लिखा जाता है। तुम अपनी रचनाओं और विचारों को 'ब्लॉग' के माध्यम से जन-जन तक पहुँचा सकती हो। समय की माँग के अनुसार यदि इनमें कुछ परिवर्तन करना चाहती हो तो वह भी कर सकती हो। ब्लॉग की सहायता से तुम अध्ययन और अनुसंधान दोनों कर सकती हो। अध्ययन के लिए बहुत-सी सामग्री तुम्हें इस पर मिल सकती है। इससे जुड़ने के लिए

तुम्हें अंतर्जाल (इंटरनेट) पर ब्लॉगस्पॉट या लाइवजर्नल या वर्डप्रेस जैसे स्थलों (साइट्स) पर खाता खोलना पड़ता है। जब तुम इस पर अपना खाता (अकाउंट) खोल लेती हो तो तुम मशहूर हस्तियों और नामी व्यक्तियों के ब्लॉग भी पढ़ सकती हो।

इन चिट्ठों या ब्लॉगों पर साहित्यिक विचारों, शोधपत्रों, विज्ञापनों और शिक्षा का आदान-प्रदान किया जाता है। यदि तुम अपनी रचनाओं को इस पर अपलोड करती हो तो तुम्हारे द्वारा लिखित रचनाएँ एक ही क्लिक में पाठकों तक पहुँच जाती हैं और पाठक भी इन्हें पढ़कर अपनी प्रतिक्रिया देते हैं। तुम्हारी ये रचनाएँ कविता, कहानी, नाटक, एकांकी, यात्रा-वृत्तांत, पत्र-लेखन आदि किसी भी रूप में हो सकती हैं। हिंद महासागर, राजभाषा हिंदी, प्रतिभास, विज्ञान विश्व, शब्दों का सफ़र, ज्ञानवाणी, विचार वाटिका, श्यामस्मृति जैसे कई हिंदी के ब्लॉग हैं। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सैकंडों में अपनी बात के ज़रिए दिन-प्रतिदिन जुड़ने वालों की बढ़ती संख्या के कारण इसे महत्वपूर्ण संचार मीडिया माना जा रहा है। इस पर कठिन और क्लिष्ट समझे जाने वाले विषयों की जानकारी सरल हिंदी में उपलब्ध हो जाती है। वैज्ञानिक, पौराणिक, भौगोलिक और ऐतिहासिक संदर्भों की जानकारी खोजने और प्रदान करने में यह 'मील का पत्थर' साबित हो रहा है। ऐसा माना जाता है कि आलोक कुमार जी के 'नौ दो ग्यारह' नामक चिट्ठों से सन् 2003 में हिंदी ब्लॉगिंग की यात्रा आरंभ हुई थी।

'रवींद्र प्रभात' जी ने अपनी पुस्तक 'हिंदी ब्लॉगिंग का इतिहास' में ब्लॉग को अंतरराष्ट्रीय दुनिया से जोड़ने वाला महत्वपूर्ण स्तंभ माना है। प्रभात जी की हिंदी

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

1. आज संचार जगत और सोशल मीडिया किसके द्वारा संचालित हैं?
2. सोशल मीडिया प्लेटफार्म के प्रमुख साधन कौन-कौन से हैं?
3. रवींद्र प्रभात ने ब्लॉग को क्या माना है?

ब्लॉग-लेखन की इस पुस्तक से तुम्हें ई-एजुकेशन, ई-पत्रकारिता, मल्टीमीडिया, इनस्क्रिप्ट आधारित मानक हिंदी टंकण, यूज़र जेनरेटेड कंटेंट आदि की जानकारी मिल सकती है। तुम्हें तो संगणक (कंप्यूटर) पर हिंदी टंकण (टाइपिंग) करना आता ही है। तुम 'गूगल इनडिक टूल' द्वारा फोनेटिक भाषा की सहायता से हिंदी टाइपिंग कर अपनी रचनाओं की इलेक्ट्रॉनिक पांडुलिपि भी बना सकती हो। तत्पश्चात् इसे ब्लॉग पर प्रस्तुत कर सकती हो। इस तरह तुम एक ब्लॉगर के रूप में हिंदी की सेवा में अपना विशेष योगदान दे सकती हो।

आरंभ में मैंने न्यूज़ चैनल की भी चर्चा की थी। न्यूज़ चैनल भी भाषा के प्रचार-प्रसार में विशेष योगदान देते हैं। वर्तमान में बी.बी.सी. न्यूज़ चैनल हिंदी समाचारों के प्रसारण में अग्रणी माना जा रहा है। 11 मई, 1940 में बी.बी.सी. लंदन ने हिंदी समाचारों का प्रसारण आरंभ किया था। हिंदी के प्रति इसकी निष्ठा ने ही इसे सफ़लता की पहली सीढ़ी पर पहुँचा दिया है। इसकी विशेषता है कि इसमें सरल, सुगम, सुबोध, सटीक और रोचक भाषा का प्रयोग किया जाता है। इस चैनल पर प्रसारित समाचारों को सुनने और देखने के लिए लोग लालायित रहते हैं। तुम सोच रही होगी कि मैं यह सब क्यों कह रहा हूँ? इसके पीछे मेरा क्या आशय है? तुम्हारा सोचना बिलकुल सही है। मेरा सिर्फ़ एक ही आशय है, तुम्हारा सही मार्गदर्शन करना। इसीलिए मैंने यहाँ बी.बी.सी. न्यूज़ चैनल का ज़िक्र किया है। इस चैनल पर प्रसारित भाषा से लाभान्वित होकर तुम स्वयं भी सटीक और परिष्कृत भाषा के प्रयोग में सक्षम बन सकती हो। एक सफ़ल ब्लॉगर के लिए इसकी अत्यंत आवश्यकता भी है। भविष्य में तुम सफ़ल ब्लॉगर, श्रेष्ठ समाचार वाचक या प्रसिद्ध संवाददाता भी बन सकती हो। ठीक वैसे ही, जैसे बी.बी.सी. हिंदी न्यूज़ चैनल पर सारिका सिंह सुप्रसिद्ध है।

इस पत्र में बस इतना ही। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना। शेष सब कुशल!

तुम्हारा बड़ा भाई

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

4. किन तथ्यों के आधार पर ब्लॉग को 'मील का पत्थर' माना जा रहा है?
5. 'हिंदी ब्लॉगिंग का इतिहास' पुस्तक से क्या जानकारी मिल सकती है?
6. बी.बी.सी. पर प्रसारित हिंदी भाषा की क्या विशेषता है?

सारांश

'संचार जगत और हिंदी' पाठ की विधा पत्र-लेखन है। इस पाठ में हिंदी के प्रचार व प्रसार में सोशल मीडिया के योगदान से अवगत कराया गया है। सोशल मीडिया के विभिन्न साधन-व्हाट्स ऐप, ट्विटर, फेसबुक, इंस्टाग्राम और ब्लॉग के रूप में हमारे समक्ष उपस्थित हैं। ये सभी साधन संदेश, ऑडियो और वीडियो के माध्यम से हिंदी के प्रचार-प्रसार का कार्य कर रहे हैं। इन साधनों में एक प्रसिद्ध साधन है-ब्लॉग। यह एक निःशुल्क ई-टूल है। यह एक प्रकार का जालपृष्ठ (वेबसाइट) है। इसे हिंदी में 'चिट्ठा' कहा जाता है। ब्लॉग हिंदी के अध्ययन और अनुसंधान दोनों के लिए ही बहुत उपयोगी है। इससे जुड़कर हिंदी के श्रेष्ठ साहित्यकारों और रचनाकारों की रचनाओं का पठन किया जा सकता है। इससे जुड़ने के लिए हमें इस पर खाता खोलना पड़ता है। उभरते हुए रचनाकारों के लिए यह एक सशक्त माध्यम है। हिंद महासागर, विचार वाटिका, श्यामस्मृति आदि हिंदी के प्रसिद्ध ब्लॉग हैं। इन पर कठिन और क्लिष्ट समझे जाने वाले विषयों की जानकारी सरल हिंदी में उपलब्ध हो जाती है। प्रभात जी की पुस्तक 'हिंदी ब्लॉगिंग का इतिहास' एक ऐसी पुस्तक है जिससे ई-एजुकेशन, ई-पत्रकारिता, मल्टीमीडिया, मानक हिंदी टंकण, यूजर जेनरेटेड कंटेंट आदि की विस्तृत जानकारी मिल जाती है।

ब्लॉग के साथ-साथ बी.बी.सी. जैसे न्यूज़ चैनल भी हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इनमें सरल, सुबोध और रोचक भाषा का प्रयोग किया जाता है। यही कारण है कि आज ये चैनल बहुत प्रसिद्ध हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि आज भाषा के प्रचार-प्रसार में सोशल मीडिया की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

शब्दार्थ

अभिन्न	= जो भिन्न न हो, एकरूप
दैनिक	= प्रतिदिन
नामी	= प्रसिद्ध, विख्यात
क्लिष्ट	= कठिन
उपलब्ध	= प्राप्त, ज्ञात
लालायित	= उत्सुक, उत्कंठित

परिष्कृत	= स्वच्छ, अलंकृत, विकसित
संवाददाता	= अखबारों में स्थानिक घटनाओं का विवरण भेजने वाला व्यक्ति
मशहूर	= प्रसिद्ध
स्तंभ	= तत्व, खंभा
सोशल मीडिया	= सामाजिक माध्यम
प्लेटफार्म	= मंच
ब्लॉग	= चिट्ठा
वेबसाइट	= जालस्थल
इंटरनेट	= अंतर्जाल
साइट्स	= स्थल
वेबपेज	= जालपृष्ठ
अकाउंट	= खाता
टाइपिंग	= टंकण
फोनेटिक	= ध्वन्यात्मक

अभ्यास-कार्य

I अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(i) **पाठ के मुख्य बिंदु पहचानिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उनकी व्याख्या कीजिए।** (मौखिक)

(ii) **पाठ के आधार पर पंक्तियों का सही क्रम लिखिए।**

1. आरंभ में मैंने न्यूज़ चैनल की भी चर्चा की थी। ( )
2. तुम्हें तो संगणक (कंप्यूटर) पर हिंदी टंकण (टाइपिंग) करना आता ही है। ( )
3. इसे दैनिकी के रूप में लिखा जाता है। ( )

(iii) **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' में लिखिए।**

1. सोशल मीडिया पर सबसे अधिक प्रयोग हिंदी का होता है। ( )
2. ब्लॉग को हिंदी में चिट्ठा कहते हैं। ( )
3. न्यूज़ चैनल भी भाषा के प्रचार-प्रसार में सहयोग देते हैं। ( )

(iv) **पाठ पढ़िए और रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।**

1. आज का युग ..... का युग है।
2. तुम अपनी रचनाओं को ..... तक पहुँचाना चाहती हो।
3. ब्लॉग गूगल का एक ..... है।

(v) **यहाँ अंक प्रमाण-पत्र की प्राप्ति हेतु निदेशक को लिखे गए पत्र का नमूना दिया गया है। इसे पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

हैदराबाद

11.01.2021

सेवा में,

निदेशक महोदय,

तेलंगाणा ओपन स्कूल सोसायटी

तेलंगाणा, हैदराबाद

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैंने इस वर्ष तेलंगाणा, हैदराबाद से दसवीं कक्षा उत्तीर्ण की है। मुझे कॉलेज में प्रवेश लेना है। इसके लिए मुझे अंक प्रमाण-पत्र की आवश्यकता है। अतः आपसे निवेदन है कि आप इसे शीघ्रातिशीघ्र देने की कृपा करें। मैं आपकी आभारी रहूँगी।

सधन्यवाद

आपकी विनीत

कोमल

अनुक्रमांक : 999

प्रश्न

1. पत्र कहाँ से लिखा गया?
2. पत्र किसके नाम लिखा गया?
3. पत्र क्यों लिखा गया?
4. पत्र किसने लिखा?
5. पत्र में महोदय का संबोधन किसके लिए किया गया?

II अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 4-5 **वाक्यों में लिखिए।**

1. प्रस्तुत पत्र-लेखन पाठ में पत्र किसे लिखा गया और क्यों लिखा गया?
2. पाठ में आपको सबसे अच्छी बात क्या लगी और क्यों?
3. तकनीक हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। स्पष्ट कीजिए।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 8-10 **वाक्यों में लिखिए।**

1. ब्लॉगर या संवाददाता-इनमें से आप क्या बनना चाहेंगे और क्यों?
2. निम्न बिंदुओं के आधार पर 'जीवन में सोशल मीडिया का प्रभाव' विषय पर अपने मित्र को एक पत्र लिखिए और **मौखिक** रूप में प्रस्तुत कीजिए।

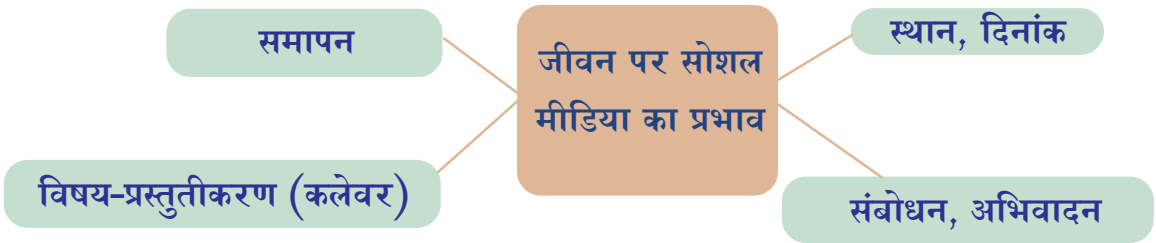

III भाषा की बात

I कोष्ठक में दी गई सूचना पढ़िए और उसके अनुसार उत्तर दीजिए।

1. संसार, जगत, पत्र(पर्यायवाची शब्द लिखिए और वाक्य-प्रयोग कीजिए।)
2. कविता, कहानी, लेख (वचन बदलिए।)
3. सामाजिक, तकनीकी, उपयोगिता (प्रत्यय पहचानिए।)
4. भिन्न, बोध, शेष (उचित उपसर्ग जोड़िए।)
5. एक, प्रसन्न, सरल (विलोम शब्द लिखिए।)
6. विद्यालय, प्रत्येक, सदैव, सच्चरित्र, निर्बल (संधि-विच्छेद कीजिए।)

(अ) निम्न वाक्यों में प्रयुक्त विराम चिह्नों के नाम लिखिए।

1. तुम्हारी पढ़ाई कैसी चल रही है? .....
2. पग-पग पर हमें तकनीकी का सहारा लेना पड़ता है।

   ....., ...
3. ब्लॉग गूगल का एक निःशुल्क 'ई-टूल' है। ....., ...
4. बच्चे, युवा और बूढ़े सभी अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।

   ....., ...

IV जीवन-कौशल

(1) जीवन में संचार जगत के साधनों से केवल मनोरंजन ही नहीं होता बल्कि व्यवसाय के अवसर भी प्राप्त होते हैं। कैसे? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए। **(मौखिक)**

6. हमारा प्यारा तेलंगाणा

निबंध

शैक्षिक मापदंड – सीखने की संप्राप्तियाँ

हम इस पाठ के द्वारा निम्नलिखित सीखने की संप्राप्तियों का ज्ञानार्जन करेंगे।

I **अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया**

(i) आरोह-अवरोह के साथ विराम चिह्नों का प्रयोग करते हुए पाठ पढ़ेंगे।

(ii) निबंध की विधा और शैली से परिचित होंगे।

(iii) तेलंगाणा राज्य के गठन, इतिहास, चुनौतियाँ, विकास, संस्कृति, साहित्य और अन्य विशेषताओं की जानकारी प्राप्त करेंगे।

(iv) बोध प्रश्नों के उत्तर सोच-विचार कर मौखिक रूप में देंगे।

(v) पाठ के मुख्य बिंदुओं की चर्चा कर मौखिक रूप में व्याख्या करेंगे।

II **अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता**

(i) पाठ के उद्देश्य और विधा विशेष के बारे में लिखेंगे।

(ii) तेलंगाणा राज्य के गठन और उसकी भौगोलिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, साहित्यिक और शैक्षिक विशेषताओं के बारे में अपने शब्दों में लिखेंगे।

(iii) तेलंगाणा के राज्य चिह्नों के बारे में लिखेंगे और मौखिक रूप में प्रस्तुत करेंगे।

III **भाषा की बात**

(i) नए शब्दों के अर्थ जानकर वाक्य प्रयोग करेंगे।

(ii) विलोमार्थी शब्द लिखेंगे।

(iii) मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग करेंगे।

(iv) काल पहचानेंगे।

IV **जीवन-कौशल** (i) जीवन में तेलंगाणा की गंगा-जमुना तहज़ीब का महत्व समझेंगे और जीवन में वस्त्र उद्योग, शिक्षा व सूचना प्रौद्योगिकी में रोज़गार के अवसर पहचानेंगे। इस विषय पर अपने शब्दों में मौखिक रूप से चर्चा एवं व्याख्या करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ का प्रमुख उद्देश्य निबंध-लेखन की विधा और शैली से परिचित होते हुए निबंध लेखन कौशल का विकास करना है। नव राज्य के रूप में तेलंगाणा के गठन और इसकी विशेषताओं से अवगत होना है और साथ में तेलंगाणा के नवनिर्माण तथा विकास में योगदान देने के लिए अग्रसर होना है।

विधा विशेष

प्रस्तुत पाठ की विधा निबंध-लेखन है। यह गद्य की प्रमुख विधाओं में से एक है। 'निबंध' का अर्थ है 'बाँधना'। किसी विषय की विस्तृत जानकारी को क्रम से कुछ अनुच्छेदों में बाँधना (प्रस्तुत करना) निबंध है। निबंध के माध्यम से किसी विषय के बारे में अपने विचारों और भावों को प्रभावशाली व सुंदर ढंग से व्यक्त किया जाता है। साहित्यकारों ने इसे 'गद्य की कसौटी' कहा है। निबंध आत्मपरक होता है। इसमें आत्मीयता और भावमयता के साथ-साथ विचारों की तर्कपूर्ण अभिव्यक्ति होती है। इसमें किसी भी विषय का विवेचन, विश्लेषण, परीक्षण और मूल्यांकन किया जाता है।

प्रस्तावना

स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में 'राज्य पुनर्गठन आयोग' द्वारा कई नए राज्यों को गठित किया गया। 2 जून, 2014 का दिन तेलंगाणा के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से लिखा जाएगा, क्योंकि इस दिन तेलंगाणा को नए राज्य का दर्जा मिला। तेलंगाणा ने चुनौतियों का सामना करते हुए हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त की है। तेलंगाणा ने शिक्षा एवं सूचना प्रौद्योगिकी में अद्वितीय सफलता प्राप्त कर नवयुवकों के लिए रोज़गार के द्वार खोल दिए हैं। अपनी विविधता के कारण तेलंगाणा में भारतीय संस्कृति व सभ्यता के दर्शन होते हैं।

संसार परिवर्तनशील है। किसी भी राष्ट्र की प्रगति वहाँ के नागरिकों की सूझ-बूझ, समझ, सहयोग, पारस्परिक सम्मान, नवाचार में रुचि तथा मानवीय मूल्यों के प्रति कटिबद्धता के परिमाण पर निर्भर रहती है। स्वतंत्रता के पश्चात् भारत को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इन संघर्षों में सबसे बड़ी चुनौती थी, नए राज्यों के गठन की माँग। देश में सांस्कृतिक, भौगोलिक, सामाजिक, भाषिक विविधताओं के कारण समय-समय पर नए राज्यों के गठन की माँग होती रही और नए राज्य अस्तित्व में आते गये। परिणामस्वरूप सन् 1953 में 'राज्य पुनर्गठन आयोग' बनाया गया। अतएव भारत के मानचित्र में आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, नागालैंड, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मेघालय, मणिपुर, त्रिपुरा, मिज़ोरम, अरुणाचल प्रदेश, गोवा, झारखंड और छत्तीसगढ़ की नई सीमाएँ तय की गईं। ऐसे नवराज्यों की स्थापना की प्रक्रिया में वह दिन भी आया जिसके लिए तेलंगाणा के वासियों ने एड़ी चोटी का ज़ोर लगाया था और मेहनत का पसीना बहाया था। तब जाकर 2 जून, 2014 को तेलंगाणा को 29 वें नव राज्य का दर्ज़ा मिला।

इसका इतिहास बहुत पुराना है। आज जिस तेलंगाणा का नाम लिया जाता है वह कभी हैदराबाद स्टेट का हिस्सा था। 17 सितंबर, 1948 को हैदराबाद स्टेट को भारत संघ में विलीन किया गया था और वह अलग राज्य बन गया। सन् 1952 में हैदराबाद राज्य में चुनाव हुए तथा 1952 से 1956 तक बुर्गुला रामकृष्णा राव हैदराबाद राज्य के पहले मुख्यमंत्री बने। उसके उपरांत 1 नवंबर, 1956 को आंध्र प्रदेश के रूप में नए राज्य का गठन हुआ और हैदराबाद राज्य (तेलंगाणा प्रांत) को इसमें विलीन कर दिया गया। साथ ही हैदराबाद

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

1. तेलंगाणा राज्य का गठन कब हुआ?
2. तेलंगाणा की सीमाएँ किन-किन राज्यों से मिली हुई हैं?

शहर को इसकी राजधानी बना दिया गया। परंतु तेलंगाणा प्रांत अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ता रहा। जिसके परिणामस्वरूप लगभग वर्ष सन् 1969 से तेलंगाणा को नया राज्य बनाने की माँग प्रबल होती गई और तेलंगाणा आंदोलन लगभग 6 दशकों तक चलता रहा। इस आंदोलन में यहाँ की जनता ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस तरह भीषण जन आंदोलनों व अपार बलिदानों के पश्चात् 2 जून, 2014 को तेलंगाणा को एक नए राज्य का दर्जा हासिल हुआ और टी.आर.एस. के संस्थापक श्री के. चंद्रशेखर राव यहाँ के प्रथम मुख्यमंत्री बने।

तेलंगाणा का क्षेत्रफल 1,14,840 वर्ग किलोमीटर है, जो देश का 12वाँ सबसे बड़ा राज्य है। इसकी सीमाएँ उत्तर में महाराष्ट्र, उत्तर-पूर्व में उड़ीसा और छत्तीसगढ़, दक्षिण व दक्षिण पूर्व में आंध्रप्रदेश तथा पश्चिम में कर्नाटक से लगती हैं। तेलंगाणा की आबादी लगभग 3,52,86,757 है। राज्य के गठन के समय तेलंगाणा में आंध्र प्रदेश के 23 जिलों में से 10 जिले को पुनर्गठित कर 31 जिले बनाए गए और 17 फरवरी 2019, को 2 नए जिले बनाए गए। अंतः अब कुल मिलाकर तेलंगाणा में 33 जिले हैं।

तेलंगाणा की आधिकारिक भाषा तेलुगु और उर्दू है। तेलंगाणा राज्य का राज्य वृक्ष- जम्मी चेट्टू (शमी का पेड़), राज्य पक्षी-पाला पिट्टा (नीलकंठ), राज्य फूल-तंगेडु पुव्वु (सिंहपर्णी फूल) और राज्य पशु - कृष्णा जिंका (हिरण) है।

भारतीय सभ्यता-संस्कृति में चार चाँद लगाने वाला राज्य तेलंगाणा, जो मुख्यतः हिंदू-मुस्लिम सभ्यताओं का संगम रहा है, एक सांस्कृतिक गुलदस्ता है, जिसमें

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

3. तेलंगाणा को सांस्कृतिक गुलदस्ता क्यों कहा जाता है?
4. सी.नारायण रेड्डी को किस पुरस्कार से सम्मानित किया गया था?

अनेक धर्मों, आस्थाओं, परंपराओं, जातियों, समुदायों तथा रीति-रिवाज़ों की मधुर सुगंध का अनुभव होता है। यह वह राज्य है, जहाँ विभिन्न भाषाएँ बोली जाती हैं। तेलंगाणा की लगभग 76% आबादी तेलुगु बोलती है, 12% उर्दू और 12% अन्य भाषाएँ बोलती हैं। तेलुगु भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में सूचीबद्ध 22 अनुसूचित भाषाओं में से एक है। भारत सरकार ने 2008 में इस भाषा को 'भारत की शास्त्रीय भाषा' के रूप में सूचीबद्ध किया था।

तेलुगु का साहित्य अत्यंत समृद्ध एवं प्राचीन है। इसमें काव्य, उपन्यास, नाटक, लघुकथाएँ तथा पुराण आदि हैं। शुरुआती युग में मल्लिया रेचाना, बम्मेरा पोतना, कंचरला गोपन्ना (भक्त रामदासु), गोना बुद्धा रेड्डी, पालकुर्ती सोमनाथ, मल्लिनथा सूरी, हुलुक्की भास्कर, पिल्लालामर्री पिनावीराभट्टडु, बंडारू अचमांबा आदि कई कवि हुए हैं। मुहम्मद कुली कुतुब शाह उर्दू के पहले साहिब-ए-दीवान थे। आधुनिक युग में मडपाटी हनुमंता राव, सुद्दाला हनुमंतु, पद्म विभूषण कालोजी नारायण राव, साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित दासराथी कृष्णमचार्युलु, ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित डॉ. सी. नारायण रेड्डी, श्री पी.वी. नरसिंहा राव, नंदागिरी इंदिरा देवी, इल्लिंदाला सरस्वती देवी, पाकाला यशोदा रेड्डी, एन. गोपी, अलीशेट्टी प्रभाकर आदि कई कवियों का योगदान रहा है।

तेलंगाणा सदैव से ही धर्मनिरपेक्ष राज्य रहा है। यहाँ के प्रमुख धर्म हिंदू और इस्लाम हैं। प्राचीन समय में बौद्ध और जैन धर्म भी यहाँ के प्रमुख धर्म थे। ईस्ट इंडिया कंपनी ने यहाँ पर ईसाई धर्म का प्रचार किया था। तेलंगाणा के तीर्थस्थलों की बात की जाए तो यहाँ पर यादाद्री (श्री लक्ष्मी नरसिंहा स्वामी), भद्राचलम मंदिर (भगवान श्री सीता रामचंद्र स्वामी), राजा राजेश्वर मंदिर (वेमुलावाड़ा), बिरला मंदिर, कोंडागट्टू, कोमारवेल्ली, कालेश्वरम, बासरा (ज्ञान सरस्वती मंदिर) आदि प्रमुख हैं। मक्का मस्जिद हैदराबाद की सबसे पुरानी मस्जिद है और यह भारत की

सबसे बड़ी मस्जिदों में से एक है। तेलंगाणा और एशिया के सबसे बड़े चर्चों में से एक मेदक चर्च भी यहीं है।

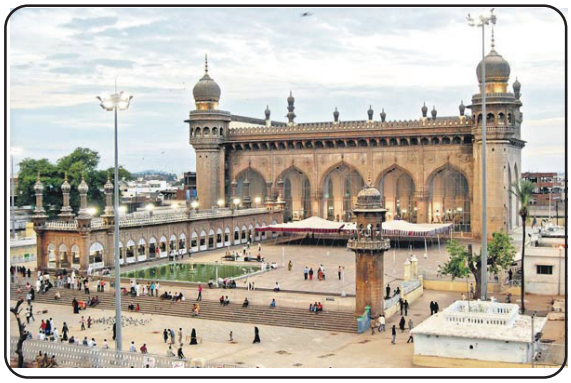

तेलंगाणा लंबे समय से विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों का प्रतिरूप रहा है। यह अपनी गंगा-जमुना तहज़ीब के लिए सुप्रसिद्ध है। यहाँ बतुकम्मा, दशहरा, उगादी, मिलाद-उल-नबी, रमज़ान, क्रिसमस, गुरुनानक जयंती, महावीर जयंती आदि त्यौहार बड़े उत्साह व श्रद्धा से मनाए जाते हैं। यहाँ के लोग कुछ लोक उत्सव, जैसे- बोनालू, सम्मक्का सारलम्मा जातरा, येडूपयला जातरा आदि भी बड़े उत्साह के साथ मनाते हैं। तेलंगाणा राज्य के जनजातीय प्रांत, नृत्य और संस्कृति भी विश्व भर में प्रसिद्ध हैं। यहाँ की भाषा, संस्कृति और सभ्यता देश-विदेश में एक खुशबू महकाती है, जो सभी को लुभाती है।

तेलंगाणा की नृत्यकला की बात की जाए तो पेरीनी शिवतांडवम एक प्राचीन नृत्य है। काकतीय वंश के शासनकाल में तेलंगाणा में इस नृत्य का जन्म हुआ था। इसे 'योद्धाओं का नृत्य' भी कहा जाता है। यहाँ हमें भक्त रामदास के कीर्तन सुनने को मिलते हैं। लोकगीतों का भी यहाँ की संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान है। लोकगीतों ने तेलंगाणा के आंदोलन पर गहरा प्रभाव डाला था। 'ओग्गु कथा' एक पारंपरिक लोकगीत गायन है जिसमें हिंदू देवताओं मल्लन्ना, बेरप्पा और येल्लम्मा की कहानियों की प्रशंसा और वर्णन होता है।

विश्वभर में तेलंगाणा अपने खान-पान के लिए भी सुप्रसिद्ध है। विशेष रूप से तेलंगाणा में दो प्रकार के व्यंजन प्रसिद्ध हैं- तेलुगु व्यंजन और हैदराबादी व्यंजन। तेलुगु व्यंजन दक्षिण भारतीय व्यंजन का हिस्सा हैं। इन व्यंजनों की मुख्य विशेषता यह

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

5. मक्का मस्जिद की विशेषताएँ क्या-क्या हैं?

6. हैदराबाद की विशेषताएँ क्या-क्या हैं?

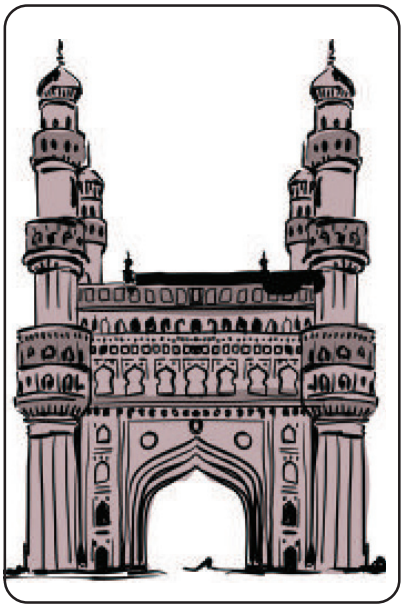

है कि ये अत्यधिक मसालेदार होते हैं। जोन्नरोट्टे (ज्वार की रोटी), अप्पुडी पिंडी (टूटा हुआ चावल), सकिनालु, मुरुकुलु, सर्वापिंडी, तेलंगाणा अंबली आदि व्यंजन बहुत लोकप्रिय हैं।

हैदराबादी व्यंजनों में फारसी, मुगलई, तेलुगु और तुर्की व्यंजनों का एकीकरण है। यहाँ की लज़ीज़ बिरयानी, पाया, हलीम और डबल का मीठा आदि की खुशबू दूर-दूर से पर्यटकों को लुभाती है और हैदराबाद खींच लाती है।

एक आगंतुक का प्रमुख आकर्षण होता है - पर्यटन स्थल। तेलंगाणा की मशहूर जगहों में शामिल धार्मिक और ऐतिहासिक स्थल पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। चारमीनार, गोलकोंडा क़िला, नेहरू जूलॉजीकल पार्क, सालारजंग संग्रहालय, मक्का मस्जिद, वरंगल क़िला, मेदक चर्च, हज़ार स्तंभ मंदिर, रामप्पा मंदिर, नागार्जुन सागर बांध, कोलानुपाका जैन मंदिर आदि यहाँ के प्रमुख पर्यटन (दार्शनिक) स्थल हैं।

वस्त्र और हाथकरघा व्यवसाय के लिए सिर्सिल्ला, पोचमपल्ली, गद्वाल, सिद्दीपेट, नारायणपेट आदि सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि विश्व भर में प्रसिद्ध वस्त्र उद्योग स्थल हैं। साथ ही निर्मल पेंटिंग्स और लकड़ी से बने निर्मल के खिलौने भी काफी मशहूर हैं।

नवगठित राज्य तेलंगाणा की तस्वीर तब बदली जब यहाँ पर क्षतिग्रस्त तालाबों की मरम्मत के लिए मिशन काकतीय, पेयजल घर-घर पहुँचाने के लिए मिशन भागीरथ, जैसी बहुद्देशीय योजनाओं की शुरुआत हुई। तेलंगाणा एक ऐसा राज्य है जहाँ गोदावरी जैसी समृद्ध नदी होने के बावजूद भीषण जल संकट था। सिंचाई के लिए पानी पर्याप्त नहीं था। इसीलिए यहाँ पर 'कालेश्वरम लिफ्ट सिंचाई योजना' बनाई गई जो कि देश की ही नहीं, बल्कि दुनिया की सबसे बड़ी सिंचाई परियोजना बताई जाती है।

तेलंगाणा ने शिक्षा एवं सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अद्वितीय सफलता प्राप्त की है। स्कूलों में शिक्षा का माध्यम तेलुगु, अंग्रेज़ी या उर्दू है। सन् 1917 में स्थापित उस्मानिया विश्वविद्यालय भारत का सातवाँ और दक्षिण भारत का तीसरा सबसे

पुराना विश्वविद्यालय है। यह भारत का पहला उर्दू माध्यम का विश्वविद्यालय है। एन.ए.एल.एस. ए.आर पोट्टी श्रीरामुलू तेलुगु विश्वविद्यालय, मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय, इंग्लिश एंड फ़ोरेन लैंग्वेजेस यूनिवर्सिटी, आचार्य एन.जी. रंगा कृषि विश्वविद्यालय आदि हैदराबाद में स्थित कुछ प्रमुख विश्वविद्यालय हैं। आई.आई.टी. हैदराबाद, आई.आई.सी.टी. हैदराबाद, गाँधी मेडिकल कॉलेज और उस्मानिया मेडिकल कॉलेज हैदराबाद के प्रमुख शिक्षा के केंद्र हैं। इसी तरह वरंगल में स्थित कालोजी नारायण विश्वविद्यालय, नलगोंडा में स्थित महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय, महबूबनगर में स्थित पालमूर विश्वविद्यालय आदि भी सुप्रसिद्ध एवं प्रमुख शिक्षा के केंद्र हैं।

निज़ामों और मोतियों का शहर कहलाने वाला हैदराबाद शहर आई.टी. सेवा एवं सूचना प्रौद्योगिकी, कॉल सेंटर, औषधि, मनोरंजन उद्योग (फ़िल्म) के लिए भी प्रसिद्ध है। हैदराबाद में एक उप-शहर भी बसाया गया है, जो हाईटेक सिटी के नाम से जाना जाता है। सूचना प्रौद्योगिकी में इस शहर को साइबराबाद भी कहा जाता है।

तेलंगाणा विभिन्न संस्कृतियों व परंपराओं का मिलन-स्थल है। ऐतिहासिक रूप से यह वह शहर है, जहाँ उत्तर व दक्षिण भारत की भिन्न सांस्कृतिक परंपराएँ मिश्रित होती हैं। अतः इसे उत्तर-दक्षिण का द्वार भी कहा जाता है। यहाँ का सुप्रसिद्ध नारा 'जय तेलंगाणा' है।

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

7. हैदराबादी व्यंजनों में किन व्यंजनों का एकीकरण होता है?
8. तेलंगाणा के प्रमुख दार्शनिक स्थलों के नाम बताइए।
9. हाईटेक सिटी को साइबराबाद क्यों कहा जाता है?
10. तेलंगाणा की प्रमुख सिंचाई योजनाएँ कौन-कौन-सी हैं?

सारांश

प्रस्तुत पाठ 'हमारा प्यारा तेलंगाणा' निबंध पाठ है। इस पाठ में तेलंगाणा के नव-राज्य के रूप में गठन से अवगत कराया गया है। तेलंगाणा के नए राज्य के रूप में अस्तित्व में आने के बाद किस तरह इस नव-राज्य ने हर क्षेत्र में विकास किया, इसकी जानकारी दी गई है। तेलंगाणा की आधिकारिक भाषा तेलुगु और उर्दू के साथ-साथ इस पाठ में राज्य चिह्नों के बारे में भी बताया गया है। तेलंगाणा प्राचीन समय से ही पूरे भारत में हिंदू-मुस्लिम सभ्यताओं का संगम रहा है। यहाँ अनेकों धर्मों, आस्थाओं, परंपराओं, जातियों, समुदायों तथा रीति-रिवाजों के दर्शन होते हैं। यह अपनी गंगा-जमुना तहज़ीब के लिए जाना जाता है।

साहित्य के क्षेत्र में तेलंगाणा के प्राचीन एवं आधुनिक कवियों ने अपना-अपना योगदान दिया है। इसमें पद्म विभूषण कालोजी, साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित दासराथी कृष्णमाचार्युलु और ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित सी. नारायण रेड्डी के नाम उल्लेखनीय हैं। तेलंगाणा सदैव से ही धर्मनिरपेक्ष्य राज्य रहा है। यहाँ पर कई तीर्थस्थल हैं। जैसे- भद्राचलम मंदिर, राजराजेश्वर मंदिर, बासरा, कालेश्वरम्, यादाद्री आदि। यहाँ पर बतुकम्मा, दशहरा, रमज़ान आदि उत्सव मनाए जाते हैं। कला के क्षेत्र में पेरीनी नृत्य और ओग्गु कथा विश्व भर में प्रसिद्ध हैं। यहाँ के लोकगीतों ने भी जन-जन के आंदोलन और जीवन पर अपनी छाप छोड़ी है। यहाँ की बिरयानी की लज़ीज़ खुशबू पर्यटकों को हैदराबाद तक खींच लाती है। तेलंगाणा में कई दर्शनीय स्थल हैं जो पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। चारमीनार हैदराबाद शहर का प्रतिनिधित्व करता है।

वस्त्र और हथकरघा व्यवसाय के क्षेत्र में भी तेलंगाणा ने अद्वितीय कपड़ों का निर्माण किया है। पानी की समस्या से निपटने के लिए तेलंगाणा ने भारत के सामने ऐसी योजनाओं को प्रस्तुत किया है जो अपने आप में सराहनीय हैं।

कालेश्वरम लिफ्ट सिंचाई योजना, मिशन भगीरथ, मिशन काकतीय योजनाएँ बहुत ही महत्वपूर्ण योजनाएँ हैं। शिक्षा एवं सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी तेलंगाणा ने सफ़लता प्राप्त की है।

शब्दार्थ

1. परिवर्तनशील = जिसमें परिवर्तन होता रहे
2. पारस्परिक = आपस का, परस्पर होने वाला
3. नवाचार = नई कार्य-पद्धति
4. पुनर्गठन = फिर से गठन करना
5. विविधता = विविध होने का भाव
6. विभाजन = बाँटना, अलग करना
7. विलीन = मिश्रित होना, मिला लेना
8. अस्तित्व = होने का भाव, वजूद
9. परिणामस्वरूप = परिणाम के अनुसार
10. बलिदान = कुरबानी
11. गुलदस्ता = फूलों का गुच्छा
12. आबादी = जनसंख्या
13. सुगंध = खुशबू
14. अत्यंत = अत्यधिक
15. प्राप्तकर्ता = प्राप्त करने वाला
16. प्रतिरूप = मूर्ति, प्रतिमा
17. लघु = छोटा
18. प्राचीन = पुरानी
19. पारंपरिक = जो परंपरा से चला आ रहा हो
20. व्यंजन = पका हुआ भोजन, खाए जाने वाले पदार्थ

21. पर्यटक = घूमने के उद्देश्य से एक जगह से दूसरी जगह पर जाने वाला यात्री।
22. मशहूर = प्रसिद्ध
23. आकर्षित = मन को प्रभावित करने वाला
24. दार्शनिक = दर्शन के योग्य, देखने के योग्य
25. क्षतिग्रस्त = जिसे हानि हुई हो
26. मरम्मत = किसी वस्तु के टूटे-फूटे भाग को ठीक करने का काम, सुधार
27. पेयजल = पीने का पानी
28. अद्वितीय = अनोखा, बेजोड़
29. मिश्रित = मिली हुई
30. द्वार = दरवाज़ा
31. मिलन-स्थल = दो या दो से अधिक जगहों के मिलने का स्थान

मुहावरों के अर्थ

1. एड़ी-चोटी का पसीना बहाना - घोर परिश्रम करना
2. चार चाँद लगाना - शोभा बढ़ाना

अभ्यास-कार्य

I अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(i) **पाठ के मुख्य बिंदु पहचानिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उनकी व्याख्या कीजिए।** (मौखिक)

(ii) **निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' में लिखिए।**

1. हैदराबादी बिरयानी एक प्रसिद्ध व्यंजन है। ( )
2. तेलंगाणा में केवल तेलुगु ही बोली जाती है। ( )
3. मुहम्मद कुली कुतुब शाह उर्दू के पहले साहिब-ए-दीवान थे। ( )

(iii) **कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।**

1. तेलंगाणा राज्य का गठन ..... में हुआ। (2 जून, 2010/2 जून, 2014)
2. हैदराबाद की सबसे पुरानी मस्जिद ..... है।
(जामा मस्जिद/मक्का मस्जिद)
3. क्षतिग्रस्त तालाबों की मरम्मत के लिए ..... मिशन की शुरुआत हुई।
(काकतीय/भागीरथ)
4. ..... पहला उर्दू विश्वविद्यालय है। (मौलाना आज़ाद/ उस्मानिया)

(iv) **निम्नलिखित गद्यांश पढ़िए। पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

संघर्ष के मार्ग में अकेला ही चलना पड़ता है। कोई बाहरी शक्ति आपकी सहायता नहीं करती है। परिश्रम, दृढ़ इच्छाशक्ति व लगन आदि मानवीय गुण व्यक्ति को संघर्ष करने और जीवन में सफलता प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। दो महत्वपूर्ण तथ्य स्मरणीय हैं- प्रत्येक समस्या अपने साथ संघर्ष लेकर आती है। प्रत्येक संघर्ष के गर्भ में विजय निहित रहती है। एक अध्यापक ने विद्यालय छोड़ने वाले अपने छात्रों को यह संदेश दिया था कि तुम्हें जीवन में सफल होने के लिए समस्याओं से संघर्ष करने का अभ्यास करना होगा। हम कोई भी कार्य करें, सर्वोच्च शिखर पर पहुँचने का संकल्प लेकर चलें। सफलता हमें कभी निराश नहीं करेगी। आप जागिए, उठिए, दृढ़ संकल्प, उत्साह एवं साहस के साथ संघर्षरूपी विजय रथ पर चढ़िए और अपने जीवन के विकास के संकटरुपी शत्रुओं पर विजय प्राप्त कीजिए।

प्रश्न

1. प्रत्येक समस्या अपने साथ क्या लेकर आती है?
2. संघर्षरूपी विजय रथ पर चढ़ने के लिए किनकी आवश्यकता होती है?
3. कौन-से मानवीय गुण व्यक्ति को संघर्ष के लिए प्रेरित करते हैं?
4. किस मार्ग पर अकेले ही चलना पड़ता है?
5. उपर्युक्त गद्यांश से आपको क्या सीख मिलती है?

II अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 4-5 वाक्यों में लिखिए।

1. 'राज्य पुनर्गठन आयोग' के आधार पर किन नए राज्यों का गठन हुआ?
2. तेलंगाणा आंदोलन का मुख्य कारण क्या था?
3. तेलंगाणा के खान-पान के बारे में लिखिए।
4. 'हमारा प्यारा तेलंगाणा' शीर्षक की सार्थकता के बारे में लिखिए।
5. तेलंगाणा की संस्कृति में लोकगीत को क्यों महत्व दिया गया है?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 8-10 वाक्यों में लिखिए।

1. शिक्षा एवं सूचना प्रौद्योगिकी में तेलंगाणा ने देश में अद्वितीय सफ़लता प्राप्त की है। अपने विचार लिखिए।
2. गोदावरी नदी के होते हुए भी तेलंगाणा को किन समस्याओं का सामना करना पड़ा और इनके समाधान के लिए किन योजनाओं को शुरू किया गया? अपने शब्दों में लिखिए।
3. हैदराबाद अपनी गंगा-जमुना तहज़ीब के लिए जाना जाता है। इस कथन को स्पष्ट कीजिए।
4. निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखकर 'अतुल्य भारत-हैदराबाद' पर विज्ञापन तैयार कीजिए और **मौखिक** रूप में प्रस्तुत कीजिए।

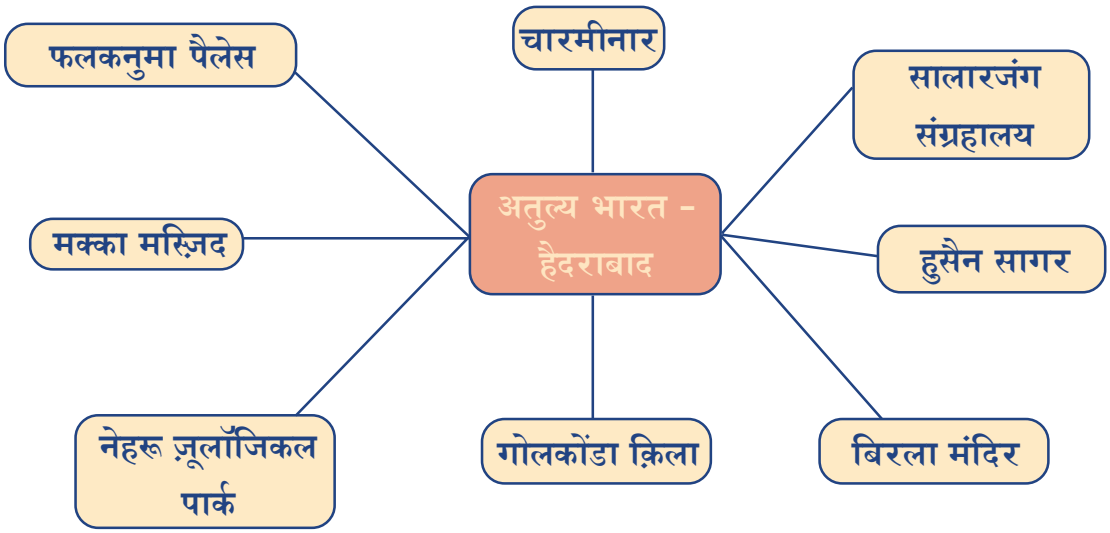

III भाषा की बात

I कोष्ठक में दी गई सूचना पढ़िए और उसके अनुसार उत्तर लिखिए।

1. त्यौहार, व्यंजन, सुगंध (समानार्थी शब्द लिखिए और वाक्य में प्रयोग कीजिए।)
2. सफलता, न्याय, प्राचीन (विलोम शब्द लिखिए।)
3. सामाजिक, भाषिक, सभ्यता (प्रत्यय पहचानिए।)
4. अनुसूची, सफल, प्रबल (उपसर्ग पहचानिए।)
5. एड़ी-चोटी का पसीना बहाना, चार चाँद लगाना (मुहावरों से वाक्य बनाइए।)
6. निम्नलिखित वाक्यों के काल पहचानिए।

1. तेलंगाणा सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है।
2. तेलंगाणा पृथक राज्य बन चुका है।
3. पर्यटक हैदराबाद देखने जा रहे थे।
4. आपने हैदराबाद की बिरयानी खाई होगी।
5. तेलंगाणा आई.टी. के क्षेत्र में आगे बढ़ेगा।
6. संभव है तेलंगाणा और भी आगे बढ़े।

IV जीवन-कौशल

(1) 'जीवन में तेलंगाणा की गंगा-जमुना तहज़ीब का महत्व और जीवन में वस्त्र उद्योग, शिक्षा व सूचना प्रौद्योगिकी में रोज़गार के अवसर'। इस विषय पर अपने शब्दों में चर्चा एवं व्याख्या कीजिए। **(मौखिक)**

7. मेरे देश की धरती - कविता

- गुलशन बावरा

शैक्षिक मापदंड - सीखने की संप्राप्तियाँ

हम इस पाठ के द्वारा निम्नलिखित सीखने की संप्राप्तियों का ज्ञानार्जन करेंगे।

I **अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया**

(i) उचित लय-ताल के साथ गीत का गायन करेंगे।

(ii) भारतीय संस्कृति का महत्व जानेंगे।

(iii) महापुरुषों के जीवन-आदर्शों के बारे में जानेंगे।

(iv) बोध प्रश्नों के उत्तर सोच-विचार कर मौखिक रूप में देंगे।

(v) कविता के मुख्य बिंदुओं की चर्चा कर मौखिक रूप में व्याख्या करेंगे।

II **अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता**

(i) गीतकार गुलशन बावरा के बारे में अपने शब्दों में लिखेंगे।

(ii) गीत का सारांश अपने शब्दों में लिखेंगे।

(iii) भारत की महानता के बारे में अपने शब्दों में लिखेंगे।

(iv) किसानों और देशभक्तों की महत्ता के बारे में लिखेंगे।

(vi) भारत में कृषि की विशेषताओं को दर्शाते हुए एक पोस्टर बनाएँगे और मौखिक रूप में प्रस्तुत करेंगे।

III **भाषा की बात**

(i) नए शब्दों के अर्थ जानकर वाक्य प्रयोग करेंगे।

(ii) तत्सम शब्द लिखेंगे।

(iii) पर्यायवाची शब्द लिखेंगे।

(iv) दिए गए शब्दों के लिंग पहचानेंगे।

(vi) समास पहचानेंगे।

IV **जीवन-कौशल**

(i) जीवन में कृषि का महत्व समझकर उसका विकास करेंगे।

(ii) कृषि के क्षेत्र में उपलब्ध प्राचीन व आधुनिक रोज़गारों का अनुसंधान कर उन्हें बढ़ावा देंगे। मौखिक रूप से चर्चा एवं व्याख्या करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ का मुख्य उद्देश्य कविता की विविध शैलियों से परिचित होने के साथ-साथ काव्य रचना के लिए प्रेरित होना है। भारत की कृषि के महत्व को समझते हुए देशभक्ति की भावना से ओत प्रोत होना है।

विधा विशेष

प्रस्तुत पाठ की विधा कविता (गीत प्रणाली) है। गीत पद्य की एक सशक्त विधा है। गीत रसात्मक होते हैं। इनसे सौंदर्यानुभूति की प्राप्ति होती हैं। इनमें लय और ताल का विशेष महत्व होता है। इनमें संगीत का पुट छिपा होता है। इनकी यही विशेषता इनके आकर्षण का केंद्र होती है। कम शब्दों में अधिक-से-अधिक भाव प्रकट करने की क्षमता इनमें निहित होती है।

प्रस्तावना

मेरे देश की धरती एक प्रसिद्ध देशभक्ति गीत है जो सन् 1967 में बनी फिल्म 'उपकार' के लिए लिखा गया था। इस गीत में भारत देश की धरती की महत्ता तथा इसकी समृद्धि और खुशहाली में योगदान देने वाले अन्नदाता किसानों और देशभक्तों की महानता का सुंदर चित्रण है।

कवि-परिचय

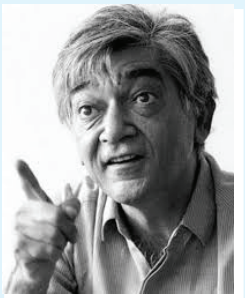

श्री गुलशन कुमार मेहता (गुलशन बावरा) का जन्म अविभाज्य भारत के पंजाब प्रांत के शेखपुर गाँव में 12 अप्रैल सन् 1937 को हुआ था। आपने दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातक की शिक्षा ग्रहण की। कॉलेज के दिनों से ही आपने कविता लेखन करना आरंभ कर दिया था। सन्1955 में इन्हें मुंबई में भारतीय रेलसेवा में नौकरी मिली। सन्1959 में इन्होंने 'चंद्रसेन' फिल्म के लिए पहला गीत लिखा। आपने लगभग 250 गीत लिखे। फिल्म जगत ने इन्हें 'बावरा' उपनाम दिया। तब से इन्होंने 'गुलशन बावरा' के नाम से गीत लिखना शुरू किया था। इन्होंने उपकार, सत्ते पे सत्ता, ये वादा रहा, ज़ंज़ीर आदि फ़िल्मों के लिए गीत लिखे। सन्1968 में इन्हें फिल्म 'उपकार' में 'मेरे देश की धरती' और सन्1974 में फिल्म 'ज़ंज़ीर' में 'यारी है ईमान मेरा' गीत के लिए फ़िल्म फ़ेयर पुरस्कार प्राप्त हुए। सन् 2008 में 'किशोर कुमार सम्मान' पुरस्कार भी इन्हें प्राप्त हुआ। इन्होंने बोर्ड ऑफ इंडियन परफॉर्मिंग राइट सोसायटी के निदेशक पद पर भी कार्य किया था। ऐसे महान गीतकार अपनी अपार साहित्य सेवाओं के उपरांत सैकड़ों हृदयों के प्रेमी बनकर 7 अगस्त, 2009 को काल के गर्भ में समा गए।

मेरे देश की धरती, सोना उगले, उगले हीरे-मोती।
बैलों के गले में जब घुँघरू, जीवन का राग सुनाते हैं,
गम कोसों दूर हो जाता है, खुशियों के कँवल मुसकाते हैं।
सुन के रहट की आवाज़ें, यूँ लगे कहीं शहनाई बजे
आते ही मस्त बहारों के, दुल्हन की तरह हर खेत सजे।
मेरे देश की धरती, सोना उगले, उगले हीरे-मोती।

जब चलते हैं इस धरती पे हल,
ममता अंगड़ाइयाँ लेती हैं।
क्यूँ ना पूजे इस माटी को,
जो जीवन का सुख देती है,
इस धरती पे जिसने जनम लिया,
उसने ही पाया प्यार तेरा,
यहाँ अपना-पराया कोई नहीं है,
है सब पे माँ उपकार तेरा।
मेरे देश की धरती, सोना उगले, उगले हीरे-मोती।

यह बाग़ है गौतम-नानक का,
खिलते हैं अमन के फूल यहाँ।
गाँधी, सुभाष, टैगोर, तिलक,
ऐसे हैं चमन के फूल यहाँ,
हरा रंग हरीसिंह नलवे से,
रंग लाल है लाल बहादुर से,
रंग बना बसंती भगतसिंह,
रंग अमन का वीर जवाहर से।
मेरे देश की धरती, सोना उगले, उगले हीरे-मोती।

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

1. फ़सल की तुलना किससे की गई है?
2. धरती माँ का प्यार किसे मिलता है?
3. कविता में आए महापुरुषों के नाम लिखिए।
4. धरती को हरा और लाल रंग किनसे प्राप्त हुआ?

सारांश

'मेरे देश की धरती, सोना उगले, उगले हीरे-मोती'। गुलशन बावरा द्वारा रचित एक प्रसिद्ध देशभक्ति गीत है जो सन् 1967 में बनी फिल्म 'उपकार' के लिए लिखा गया था। इस गीत में भारत देश की धरती, अन्नदाता किसान और देशभक्तों की महिमा का गुणगान किया गया है। कवि का कहना है कि भारत देश की धरती में इतनी शक्ति है कि वह फ़सल के रूप में सोना, हीरे और मोती उगा सकती है अर्थात् हमारे किसान इतने मेहनती हैं कि वे बंजर भूमि को उपजाऊ बना सकते हैं। अधिक परिश्रम से जब वे थक जाते हैं तो बैलों के गले में बँधे घुँघरू की आवाज़ से उनकी थकान दूर हो जाती है। वे अपना दुख भूल जाते हैं, प्रसन्न हो उठते हैं तथा उनमें नए उत्साह का संचार होने लगता है। उन्हें रहट (कुँए से पानी निकालने का एक यंत्र) की आवाज़ें शहनाई के समान प्रतीत होती हैं। उनके परिश्रम के फलस्वरूप वसंत ऋतु के आगमन पर जब खेतों में फ़सलें लहलहाने लगती हैं तो ये खेत दुल्हन की तरह प्रतीत होते हैं। इन फ़सलों से प्राप्त अन्न ही हमारे लिए सोना, हीरा और मोती है।

कवि कहते हैं कि धरती हमारी माँ के समान है, जो हलरूपी कष्टों को सहती है, फिर भी हम पर अपनी ममता न्यौछावर करती है। इस धरती पर जन्म लेने वालों से वह किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करती है। सबकी भलाई करती है और सभी पर अपना प्यार लुटाती है। ऐसी ममतामयी, सुखदायिनी धरती की मिट्टी सदा पूजनीय है।

आगे कवि कहते हैं कि भारत देश एक उपवन है और इसमें अनेक फूल खिलते हैं। उन्होंने गौतम बुद्ध, गुरु नानक, महात्मा गाँधी, सुभाषचंद्र बोस, रवींद्रनाथ टैगोर, बाल गंगाधर तिलक, लाल बहादुर शास्त्री, हरीसिंह नलवे और जवाहरलाल नेहरू की तुलना इस उपवन के फूलों से की है। इन महापुरुषों और देशभक्तों ने भारत देश की सुख-समृद्धि, खुशहाली और शांति के लिए अथक प्रयास किए थे और अपना तन-मन-धन न्यौछावर कर दिया था। इस प्रकार कवि ने इस गीत के माध्यम से देश की संपदा को सुरक्षित रखने और शांति को बनाए रखने का महान संदेश दिया है।

शब्दार्थ

1. ग़म = दुख, कष्ट
2. कोसों दूर = बहुत दूर
3. कँवल = कमल
4. शहनाई = वाद्य यंत्र
5. बहार = वसंत ऋतु, आनंद, हरियाली
6. रहट = कुएँ से पानी निकालने का यंत्र
7. माटी = मिट्टी
8. उपकार = भलाई
9. अमन = शांति
10. चमन = बाग़, उपवन

अभ्यास-कार्य

I अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(i) **कविता के मुख्य बिंदु पहचानिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उनकी व्याख्या कीजिए।** (मौखिक)

(ii) **निम्नलिखित भाव से संबंधित पंक्तियाँ कविता से ढूँढ़कर लिखिए।**

1. किसानों के दुख दूर हो जाते हैं और वे प्रसन्न हो उठते हैं।
2. धरती माँ किसी से भेदभाव नहीं करती है। सबकी भलाई करती है।
3. गौतम बुद्ध और गुरु नानक ने यहाँ शांति की स्थापना की है।

(iii) **निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।**

1. यह ..... है, अमन के फूलों का। (बाघ/बाग़)
2. खुशियों के ..... मुसकाते हैं। (कँवल/कंबल)
3. ग़म कोसों ..... हो जाता है। (पास/दूर)

4. ..... की तरह हर खेत सजे। (दुल्हन/दूल्हा)

5. रंग ..... हरीसिंह नलवे से। (लाल/हरा)

(iv) **निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द कविता में से ढूँढ़कर लिखिए।**

1) स्वर्ण = _____

2) दुख = _____

3) भलाई = _____

4) शांति = _____

5) पुष्प = _____

(v) **निम्नलिखित पद्यांश पढ़िए। पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

चींटी है सामाजिक प्राणी
वह श्रमजीवी, वह सुनागरिक
देखा चींटी को?
उसके जी को?
भूरे बालों की-सी कतरन
छिपा नहीं उसका छोटापन
वह समस्त पृथ्वी पर निर्भय
विचरण करती श्रम में तन्मय
वह जीवन की चिनगी-अक्षय
वह भी क्या देही है, तिल-सी।
दिन भर में वह मीलों चलती
अथक कार्य से कभी न टलती।

प्रश्न

1. पद्यांश का मुख्य विषय क्या है?
2. चींटी की देह की तुलना किससे की गई है?
3. किसे सामाजिक प्राणी कहा गया है?
4. चींटी की कोई दो विशेषताएँ लिखिए।
5. चींटी समस्त धरती पर किस प्रकार विचरण करती है?

II अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 3-4 वाक्यों में लिखिए।

1. गीतकार गुलशन कुमार बावरा का परिचय अपने शब्दों में लिखिए।
2. भारत देश की मिट्टी की कोई चार विशेषताएँ लिखिए।
3. गीतकार ने गौतम बुद्ध और नानक को अमन के फूल क्यों कहा है?
4. गीत का संदेश अपने शब्दों में लिखिए।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 8-10 वाक्यों में लिखिए।

1. गीतकार ने फ़सलों की तुलना दुल्हन से की है। गीतकार के स्थान पर आप होते तो फ़सलों की तुलना किससे करते और क्यों?
2. देश के विकास में किसान की क्या भूमिका होती है? लिखिए।
3. अपने देश की प्रगति के लिए आप क्या करना चाहेंगे? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
4. भारतीय कृषि की विशेषताएँ दर्शाते हुए तथा उसमें विकास के लिए सुझाव देते हुए एक पोस्टर बनाइए।
5. देश में शांति की स्थापना में सहयोग देने वाले किसी एक महापुरुष के बारे में दिए गए बिंदुओं (Mind map) के आधार पर निबंध लिखिए और **मौखिक** रूप में प्रस्तुत कीजिए।

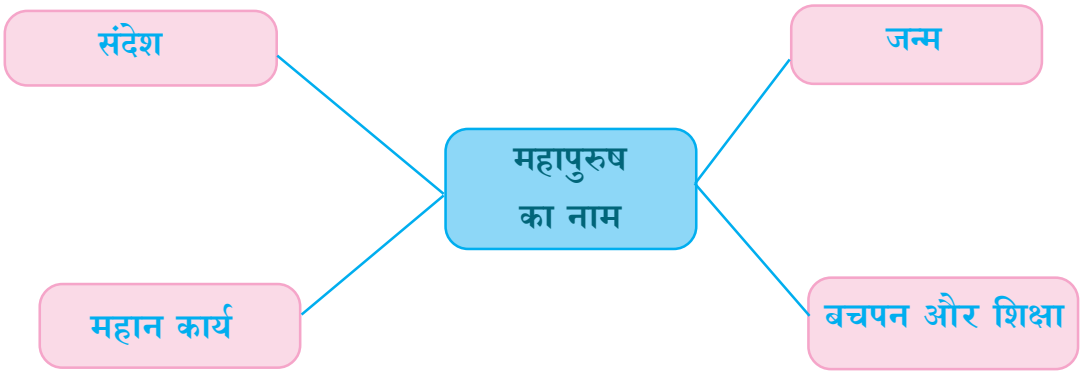

III भाषा की बात

I कोष्ठक में दी गई सूचना पढ़िए और उसके अनुसार उत्तर दीजिए।

1. सोना, हीरा, धरती, माँ (पर्यायवाची शब्द लिखिए और वाक्य प्रयोग कीजिए।)
2. हल, लाल, रंग (भिन्नार्थक शब्द लिखिए।)
3. किसान, खेत, धरती (तत्सम शब्द लिखिए।)
4. घुँघरू, शहनाई, ममता (लिंग पहचानिए।)
5. आवाज़, बहार, खुशी (वचन बदलिए।)
6. आजीवन, हलधर, सुख-दुख, सप्ताह, देशभक्ति, खाद्यान्न (शब्दों का विग्रह कीजिए। समास पहचानिए।)

IV जीवन-कौशल

(1) कुशल जीवन के लिए कृषि के क्षेत्र में उपलब्ध प्राचीन व आधुनिक रोज़गारों का अनुसंधान कर उन्हें बढ़ावा देने भारत सरकार और हम क्या-क्या कर सकते हैं? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए। (मौखिक)

8. चाणक्य की चुनौतियाँ - एकांकी

शैक्षिक मापदंड - सीखने की संप्राप्तियाँ

हम इस पाठ के द्वारा निम्नलिखित सीखने की संप्राप्तियों का ज्ञानार्जन करेंगे।

I **अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया**

(i) आरोह-अवरोह के साथ विराम चिह्नों का प्रयोग करते हुए पाठ पढ़ेंगे।
(ii) एकांकी की विधा और शैली से परिचित होंगे।
(iii) दिए गए प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' में देंगे।
(iv) अपठित गद्यांश के प्रश्नों के उत्तर देंगे।
(vi) बोध प्रश्नों के उत्तर सोच-विचार कर मौखिक रूप में देंगे।
(vii) पाठ के मुख्य बिंदुओं की चर्चा कर मौखिक रूप में व्याख्या करेंगे।

II **अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता**

(i) चाणक्य के बारे में अपने शब्दों में लिखेंगे।
(ii) घनानंद के स्वभाव के बारे में लिखेंगे।
(iii) चंद्रगुप्त के चरित्र की विशेषताएँ लिखेंगे।
(iv) चाणक्य द्वारा किये गये कार्यों के प्रति अपने विचार लिखेंगे।
(v) पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखेंगे।
(vi) सामाजिक जीवन में कूटनीति व बुद्धिमत्ता की आवश्यकता के बारे में लिखेंगे और मौखिक रूप में प्रस्तुत करेंगे।

III **भाषा की बात**

(i) नए शब्दों के अर्थ जानकर वाक्य प्रयोग करेंगे।
(ii) समानार्थी, विलोमार्थी, उपसर्ग, प्रत्यय आदि लिखेंगे।
(iii) विराम चिह्नों की पहचान करेंगे।
(iv) तत्सम और तद्भव शब्दों को अलग करेंगे।

IV **जीवन-कौशल** (i) जीवन में आने वाली बड़ी-से-बड़ी समस्या का समाधान भी बुद्धिमत्ता से किया जा सकता है। इस विषय पर अपने शब्दों में मौखिक चर्चा एवं व्याख्या करेंगे।

उद्देश्य

एकांकी विधा से परिचित होने के साथ-साथ मगध राज्य का इतिहास जानना है। जीवन में कूटनीति व संदर्भानुसार बुद्धिमत्ता के उपयोग को समझना है।

विधा विशेष

प्रस्तुत पाठ की विधा एकांकी है। एकांकी साहित्य की एक ऐसी विधा है, जो नाटक के समान अभिनय से संबंधित है। यह नवीन विकासशील साहित्य का एक रूप है। आज के व्यस्त जीवन में इसकी उन्नति की अनेक संभावनाएँ हैं। कथावस्तु, पात्र, भाषा-शैली, देशकाल और वातावरण, रंगमंचीयता और उद्देश्य इसके प्रमुख तत्व हैं। एकांकी में किसी एक ही विषय का चित्रण किया जाता है। प्रस्तुत पाठ में चाणक्य की कूटनीति व बुद्धिमत्ता से संबंधित घटना एकांकी के रूप में प्रस्तुत है।

प्रस्तावना

यह एक ऐतिहासिक एकांकी है। इसके माध्यम से राजा की निरंकुशता का पता चलता है। चंद्रगुप्त के माध्यम से यह दर्शाया गया है कि किस प्रकार कूटनीति के द्वारा एक दुराचारी शासक का अंत किया जा सकता है और अपनी मानसिक क्षमताओं व योग्यताओं के आधार पर एक साधारण व्यक्ति भी राजा या महामंत्री के पद पर आसीन हो सकता है।

पात्र : चणक, घनानंद, महामात्य राक्षस, कात्यायन, गुप्तचर, चाणक्य, शकटार

(राजदरबार का दृश्य)

गुप्तचर का प्रवेश-

गुप्तचर : महाराज की जय हो!

महामात्य राक्षस : कहो गुप्तचर, क्या सूचना लाए हो?

कात्यायन : कोई विशेष बात?

गुप्तचर : महाराज! सीमावर्ती नगर के आचार्य चणक आपके विरुद्ध षड्यंत्र रच रहे हैं। वे अपने मित्र अमात्य शकटार से मंत्रणा कर महाराज को गद्दी से हटाने की योजना बना रहे हैं।

महाराज घनानंद : (क्रोध में) उस तुच्छ ब्राह्मण की यह हिम्मत! सैनिकों जाओ, उसे बंदी बनाकर मेरे समक्ष प्रस्तुत करो।

सैनिक : जो आज्ञा, महाराज!

(चणक को बंदी बनाकर राजा घनानंद के समक्ष प्रस्तुत किया गया)

घनानंद : ऐसे राजद्रोही के लिए मृत्युदंड ही उचित है। जाओ! इसका शीश काटकर राजधानी के चौराहे पर टाँग दो, जिससे सभी को पता चले कि राजद्रोह करने वाले को क्या दंड दिया जाता है।

(चणक का शीश काटकर चौराहे पर टाँग दिया गया।)

चाणक्य : (चणक का पुत्र) (रोते हुए) घोर अन्याय, घोर अपराध!

(चणक ने रोते हुए अपने पिता का शीश नीचे उतारा और एक वस्त्र में लपेटकर गंगा किनारे ले गया।)

चाणक्य : (गंगा का जल हाथ में लेकर) हे गंगे! जब तक हत्यारे घनानंद से अपने पिता की हत्या का प्रतिशोध नहीं लूँगा, तब तक रसोई या पाकशाला की कोई पकी हुई वस्तु नहीं खाऊँगा।

चाणक्य : (गंगा का जल हाथ में लेकर) हे गंगे! जब तक महामात्य के रक्त से अपने केश नहीं रंग लूँगा, तब तक यह शिखा खुली ही रखूँगा।

चाणक्य : (गंगा का जल हाथ में लेकर) हे गंगे! मेरे पिता का तर्पण तभी पूर्ण होगा, जब हत्यारे घनानंद का रक्त पिता की विभूति पर चढ़ेगा।

चाणक्य : (ऊपर की ओर देखते हुए) हे यमराज!

घनानंद का नाम तुम अपने लेखे से काट दो। उसकी मृत्यु का लेख अब मैं लिखूँगा।

(तत्पश्चात चाणक्य ने अपना नाम बदलकर विष्णुगुप्त रख लिया। वे अपने गृह-प्रदेश मगध लौट आते हैं। वहाँ अपने पिता चणक के मित्र शकटार से मित्रता कर लेते हैं।)

शकटार : (विष्णुगुप्त से) देखा! मेरे राज्य की क्या स्थिति कर दी है घनानंद ने। वहाँ विदेशियों का आक्रमण बढ़ता जा रहा है और यहाँ यह दुष्ट राजा नृत्य, मदिरा और हिंसा में डूबा हुआ है।

विष्णुगुप्त : इसकी सूचना मैं दूँगा महाराज को। मैं महाराज को परामर्श दूँगा।

विष्णुगुप्त : (भरी सभा में) मैं तक्षशिला का आचार्य विष्णुगुप्त हूँ। मुझे इस राज्य की सुरक्षा की चिंता है। यूनानी हमारे राज्य पर आक्रमण करने वाले हैं। महाराज! अपने राज्य को बचा लीजिए।

घनानंद : (विष्णुगुप्त का उपहास उड़ाते हुए) राज्य की चिंता करने वाले तुम कौन होते हो? तुम एक ब्राह्मण हो और तुम वही करो, जो एक ब्राह्मण को शोभा देता है। राज्य की चिंता करना राजा का काम है।

(चाणक्य पुनः शकटार से मिलते हैं।)

शकटार : (विष्णुगुप्त से) राजा के ऐसे व्यवहार के कारण ही राज्य में कई असंतोषी पुरुष और समाज के समूह हैं। उनमें से एक है चंद्रगुप्त

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

1. चणक के षड्यंत्र की सूचना महाराज को किसने दी?
2. घनानंद ने सैनिकों को क्या आज्ञा दी?
3. चाणक्य की प्रथम प्रतिज्ञा क्या थी?
4. चाणक्य की दूसरी प्रतिज्ञा क्या थी?
5. चाणक्य की तीसरी प्रतिज्ञा क्या थी?
6. विष्णुगुप्त को राज्य की चिंता क्यों थी?
7. विष्णुगुप्त ने राजा से क्या अनुरोध किया था?

जो मुरा का पुत्र है। किसी संदेह के कारण घनानंद ने मुरा को वनवास के लिए विवश कर दिया। वहाँ अत्यंत सीधे-साधे, किंतु क्रूर स्वभाव के आदिवासी तथा वनवासी रहते हैं।

विष्णुगुप्त : (शकटार से) कल हम वेश बदलकर वन में जाएँगे।

(अगले दिन शकटार और विष्णुगुप्त ज्योतिष का वेश धारण कर उस वन में जाते हैं।)

शकटार : (विष्णुगुप्त से) वह देखो पुत्र! वही है चंद्रगुप्त, जो अपने साथियों के साथ राजा का खेल खेल रहा है।

विष्णुगुप्त : (चंद्रुगप्त को देखते हुए) आज से यही मेरे जीवन का लक्ष्य है। चंद्रगुप्त की शिक्षा-दीक्षा का दायित्व मैं लेता हूँ, साथ ही यह प्रण भी लेता हूँ कि इन आदिवासियों और वनवासियों की सेना बनाकर मैं घनानंद को पराजित करूँगा तथा चंद्रगुप्त को मगध का राजा बनाऊँगा।

(सेना की सहायता से विष्णुगुप्त ने घनानंद के साम्राज्य का अंत कर चंद्रगुप्त को मगध के राजसिंहासन पर आसीन कर दिया।)

चंद्रगुप्त : गुरुवर! निवेदन है कि आज से आप हमारे महामंत्री बनकर हमारा मार्गदर्शन करें।

(इस प्रकार अपने प्रण को पूर्ण कर चाणक्य चंद्रगुप्त की राजसभा में मंत्रीपद पर आसीन हुए।)

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

8. घनानंद ने विष्णुगुप्त से क्या कहा?
9. घनानंद का विरोध किस-किसने किया?
10. वन में चंद्रगुप्त कौन-सा खेल खेल रहा था?
11. विष्णुगुप्त की सेना में कौन-कौन सम्मिलित थे?
12. विष्णुगुप्त ने चंद्रगुप्त को मगध का राजा कैसे बनाया?
13. चंद्रगुप्त ने विष्णुगुप्त अर्थात् कौटिल्य से क्या विनती की?
14. चाणक्य की चुनौतियों से हमें क्या संदेश मिलता है?

सारांश

प्रस्तुत पाठ 'चाणक्य की चुनौतियाँ' एक ऐतिहासिक एकांकी पाठ है। इसके अंतर्गत मगध के राजा घनानंद को क्रूर शासक के रूप में दर्शाया गया है। जब वहाँ का एक आचार्य चणक उसका विरोध करता है तो घनानंद उसका सिर कटवाकर चौराहे पर टँगवा देता है। चणक का पुत्र चाणक्य अपने पिता की हत्या का प्रतिशोध लेने के लिए गंगा के समक्ष प्रतिज्ञा लेता है कि जब तक वह अपने पिता की हत्या का बदला नहीं लेगा तब तक वह रसोई की कोई भी पकी हुई वस्तु नहीं खाएगा। जब तक महामात्य के रक्त से अपने केश नहीं रंग लेगा तब तक वह अपनी शिखा खुली ही रखेगा तथा जब वह घनानंद का रक्त अपने पिता की राख पर चढ़ाएगा तभी उसके पिता का तर्पण पूर्ण होगा। वह अपना नाम बदलकर मगध लौटता है और अपने पिता के मित्र शकटार से मित्रता करता है। शकटार के द्वारा उसे पता चलता है कि घनानंद के व्यवहार से कई व्यक्ति और समाज असंतुष्ट हैं। तब वह चंद्रगुप्त की शिक्षा-दीक्षा का भार स्वयं लेता है तथा आदिवासियों और वनवासियों की सेना बनाकर घनानंद को परास्त कर देता है और चंद्रगुप्त को मगध का शासक बना देता है। चंद्रगुप्त के निवेदन करने पर स्वयं मगध का महामंत्री बन जाता है। इस प्रकार चाणक्य अपनी प्रतिज्ञा पूरी करता है।

इस पाठ के द्वारा यह सिद्ध होता है कि एक कूटनीतिज्ञ व्यक्ति अपनी क्षमता के आधार पर किसी राज्य का महामंत्री बन सकता है।

शब्दार्थ

1. निरंकुशता = अत्याचारी शासन, तानाशाही
2. कूटनीति = आपसी व्यवहार में दाँव-पेंच की छिपी हुई नीति, राजनय
3. गुप्तचर = जासूस
4. षड्यंत्र = साज़िश, धोखा देने की योजना
5. मंत्रणा = सलाह, विचार-विमर्श
6. तुच्छ = महत्वहीन
7. बंदी = कैदी
8. प्रतिशोध = बदला
9. शिखा = चोटी
10. तर्पण = देवताओं, ऋषियों एवं पितरों को जलदान
11. आक्रमण = हमला
12. विवश = लाचार, बेबस, असहाय

अभ्यास-कार्य

I अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(i) **पाठ के मुख्य बिंदु पहचानिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उनकी व्याख्या कीजिए।** (मौखिक)

(ii) **पाठ के आधार पर वाक्यों का सही क्रम पहचानिए।**

1. जब तक महामात्य के रक्त से अपने केश नहीं रंग लूँगा, तब तक यह शिखा खुली ही रखूँगा।
2. उसे बंदी बनाकर मेरे समक्ष प्रस्तुत करो।
3. कहो गुप्तचर, क्या सूचना लाए हो?
4. कल हम वेश बदलकर वन में जाएँगे।
5. मैं महाराज को परामर्श दूँगा।

(iii) **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' में लिखिए।**

1. चणक के पुत्र का नाम चंद्रगुप्त था। ( )
2. महामात्य राक्षस चंद्रगुप्त का महामंत्री था। ( )
3. घनानंद मगध का राजा था। ( )
4. शकटार चणक का मित्र था। ( )
5. चंद्रगुप्त की माँ का नाम मुरा था। ( )

(iv) **कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।**

1. मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं घनानंद को पराजित.....(करता हूँ/करूँगा)
2. एक देशभक्त अपने देश की ..... के लिए अपने प्राण भी न्यौछावर कर देता है। (सुरक्षित/सुरक्षा)

3. ..... अपने मंत्री के साथ मंत्रणा कर रहे थे। (वह/वे)

4. पिता ने पुत्री को ..... का विरोध करना सिखाया। (अन्याय/न्याय)

5. आदिवासी, राजा ..... व्यवहार से असंतुष्ट थे। (के/का)

(iv) **निम्नलिखित गद्यांश पढ़िए। पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

सदाचार का अर्थ है अच्छा नैतिक व्यवहार, व्यक्तिगत आचरण और चरित्र। दूसरे शब्दों में सदाचार, व्यवहार और कार्य करने का उचित और स्वीकृत तरीका है। सदाचार जीवन को सहज, आसान, सुखद और सार्थक बनाता है। मनुष्य भी एक जंतु ही है, लेकिन यह सदाचार ही है, जो उसे शेष जंतुओं से अलग करता है।

प्रश्न

1. गद्यांश का विषय क्या है?
2. सदाचार का क्या अर्थ है?
3. सदाचार का सबसे बड़ा गुण क्या है?
4. मनुष्य की श्रेष्ठता का कारण क्या है?

II अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 4-5 **वाक्यों में लिखिए।**

1. चाणक्य के बारे में अपने शब्दों में लिखिए।
2. घनानंद का स्वभाव कैसा था?
3. चाणक्य की तीन चुनौतियाँ कौन-कौन-सी थीं?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 8-10 **वाक्यों में लिखिए।**

1. चंद्रगुप्त का चरित्र-चित्रण अपने शब्दों में कीजिए।
2. चाणक्य के स्थान पर आप होते तो क्या करते?
3. 'चाणक्य की चुनौतियाँ' पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

4. निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर किसी आँखों देखी घटना का वर्णन कीजिए और उसे **मौखिक** रूप में प्रस्तुत कीजिए।

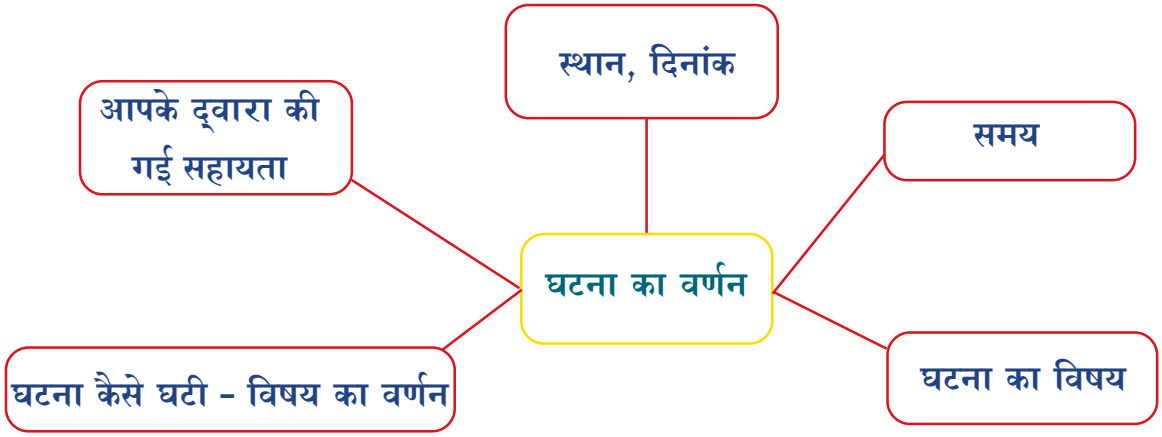

III भाषा की बात

I **कोष्ठक में दी गई सूचना पढ़िए और उसके अनुसार उत्तर लिखिए।**

1. शासक, व्यक्ति, मित्र(पर्यायवाची शब्द लिखिए, वाक्य में प्रयोग कीजिए।)
2. अंत, साधारण, अन्याय (विलोम शब्द लिखिए।)
3. दुराचारी, मित्रता, पराजित (प्रत्यय पहचानिए।)
4. विदेशी, सुरक्षा, प्रतिशोध (उपसर्ग पहचानिए।)
5. पाठ में आए विराम चिह्नों को ढूँढ़कर रेखांकित कीजिए और तालिका में लिखिए।
6. ग्राम, आग, सूर्य, अँधेरा (तत्सम और तद्भव शब्दों को अलग कीजिए।)

IV जीवन-कौशल

(1) 'जीवन में आने वाली बड़ी-से-बड़ी समस्या का समाधान भी बुद्धिमत्ता से किया जा सकता है।' सोदाहरण अपने विचार स्पष्ट कीजिए। **(मौखिक)**

9. साहस की राह में... - कहानी

शैक्षिक मापदंड - सीखने की संप्राप्तियाँ

हम इस पाठ के द्वारा नीचे दी गयी सीखने की संप्राप्तियों का ज्ञानार्जन करेंगे।

I **अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया**

(i) आरोह-अवरोह के साथ विराम चिह्नों का प्रयोग करते हुए पाठ पढ़ेंगे।

(ii) दृढ़ निश्चय व मेहनत का महत्व समझेंगे।

(iii) अपठित गद्यांश के प्रश्नों के उत्तर देंगे।

(iv) बोध प्रश्नों के उत्तर सोच-विचार कर मौखिक रूप में देंगे।

(v) पाठ के मुख्य बिंदुओं की चर्चा कर मौखिक रूप में व्याख्या करेंगे।

II **अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता**

(i) करोली के बारे में अपने शब्दों में लिखेंगे।

(ii) पाठ का उद्देश्य लिखेंगे।

(iii) कठिनाई व सफलता के विषय में लिखेंगे।

(iv) अपने अनुभवों को डायरी के रूप में लिखेंगे और मौखिक रूप में प्रस्तुत करेंगे।

III **भाषा की बात**

(i) नए शब्दों के अर्थ जानकर वाक्य प्रयोग करेंगे।

(ii) शब्दों के वचन बदल कर लिखेंगे।

(iii) शब्दों में उपसर्ग व प्रत्यय पहचानकर लिखेंगे।

(iv) वाच्य पहचानेंगे।

IV **जीवन-कौशल** (i) जीवन में कड़ी मेहनत व आत्म-विश्वास का महत्व जानेंगे और अपने शब्दों में मौखिक चर्चा एवं व्याख्या करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ का मुख्य उद्देश्य कहानी विधा से परिचित होते हुए करोली टाकक्स के विषय में जानना है। करोली के जीवन से दृढ़ इच्छाशक्ति, मेहनत व आत्मविश्वास के द्वारा कठिनाइयों का सामना कर असंभव कार्य को संभव बनाने के लिए प्रेरित होना है।

विधा विशेष

प्रस्तुत पाठ एक 'कहानी' पाठ है। यह एक सशक्त गद्य विधा है। किसी घटना या बात का सुंदर ढंग से प्रस्तुतीकरण ही कहानी है। कहानी में रोचकता, कलात्मकता, संवेदनशीलता, संक्षिप्तता, प्रभावोत्पादकता तथा भावात्मकता आदि गुण होते हैं। कथावस्तु, पात्र, संवाद, वातावरण, भाषा-शैली तथा उद्देश्य इसके प्रमुख तत्व हैं। यह एक नैतिक और सामाजिक मूल्यों से पूर्ण मनोवैज्ञानिक कहानी है।

प्रस्तावना

हादसे में खो दिया था एक हाथ, फिर लड़ी ज़िंदगी की जंग और यूँ रचा इतिहास। सफलता शब्द कहने में जितना आसान है, उसके पीछे उतनी ही मेहनत छिपी होती है। कहते हैं मंज़िल उन्हीं को मिलती है, जो सपने देखते हैं, किंतु केवल सपने देखने से ही पूरे नहीं होते बल्कि उन्हें पूरा करने के लिए दिन-रात एक करना पड़ता है। अपनी कमज़ोरी को भी अपनी ताक़त बनाकर खुद के हुनर को तराशना पड़ता है। जो लोग कमज़ोरियों को सफलता की राह में रुकावट नहीं बनने देते, वे इतिहास पढ़ते ही नहीं बल्कि इतिहास रचते हैं। ऐसे ही महान व्यक्ति हैं करोली टाकक्स। इन्होंने अपने जुनून व अथक प्रयासों से इतिहास-पर-इतिहास रच डाला था। ऐसे जुनून व अथक प्रयासों के सामने सफलता भी नतमस्तक हो जाती है। इसलिए कहा जाता है आत्म-संकल्प, आत्म-विश्वास और आत्म-बल से बढ़कर कुछ भी नहीं है।

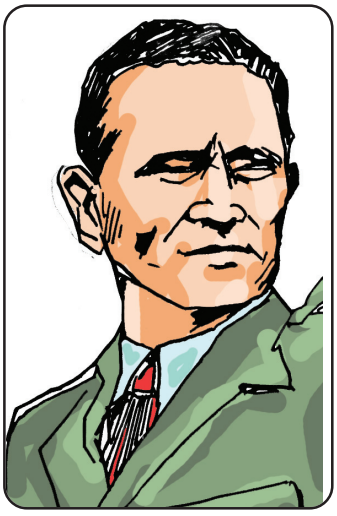

"सपने उनके पूरे होते हैं, जो सपने देखते हैं"। लेकिन कुछ लोग सिर्फ सपने देखने तक ही सीमित रह जाते हैं। सपने सिर्फ देखने से पूरे नहीं होते, उन्हें पूरा करने के लिए दिन-रात एक करना पड़ता है। अपनी कमज़ोरियों को ताक़त बनाकर खुद के हुनर को तराशना पड़ता है।

"जो बढ़ जाते हैं मंज़िल की ओर सर पे जुनून का कफ़न बाँध अकसर उन्हीं को मिलता है वो मुक़ाम जिसकी दुनिया चाहवान होती है।" इस दुनिया में ऐसे कई लोगों ने

जन्म लिया है, जो किसी भी मजबूरी को अपनी सफलता की राह में रुकावट बनने नहीं देते। ऐसे लोग सिर्फ़ इतिहास पढ़ते ही नहीं, बल्कि इतिहास बनाते हैं। ऐसे ही एक महान व्यक्ति हुए थे जिन्हें करोली टाकक्स के नाम से सारी दुनिया जानती है।

करोली हंगरी की आर्मी में सैनिक था। वह 25 मीटर फ्री स्टाइल का बेहतरीन शूटर भी था। हंगरी में जितनी भी राष्ट्रीय प्रतियोगिताएँ हुई थीं, उन सभी को वह जीत चुका था। उसने सन् 1938 के नेशनल गेम्स में बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए प्रतियोगिता जीती थी। उसके प्रदर्शन को देखते हुए पूरे हंगरीवासियों को यह विश्वास हो गया था कि सन् 1940 के ओलंपिक में करोली देश के लिए गोल्ड मैडल जीतेगा, क्योंकि उसने कई सालों तक ट्रेनिंग भी की थी। पर कहते हैं कि होनी को कुछ और ही मंज़ूर होता है। ऐसा ही करोली के साथ हुआ।

एक दिन आर्मी ट्रैनिंग कैंप में करोली के दायें हाथ में ग्रेनेड फट जाने की दुर्घटना हुई। करोली का वह हाथ जिसे उसने बचपन से ट्रेंड किया था, जिसे वह सबसे प्राणपद समझता था, जिस पर उसने सपने सजाये थे, जिस पर उसे नाज़ था, जिसमें शूटिंग की अत्यंत प्रतिभा थी, वह हाथ ग्रेनेड की दुर्घटना में हमेशा के लिए शरीर से अलग हो गया। यह अत्यंत दुखद दुर्घटना उसे अंदर तक झकझोर देती है। वह घोर चिंता में डूब जाता है। उसे हर तरफ अंधेरा ही अंधेरा नज़र आता है। किंतु करोली हार नहीं मानता है। उसे अर्जुन की तरह अपने लक्ष्य के अलावा कुछ नहीं सूझता है। उसे चिंता के अंधेरे में भी लक्ष्य का उजाला ही नज़र आता है और वह अँधकार को चीरकर रोशनी भरी लक्ष्य की राह में क़दम बढ़ाना आरंभ कर देता है। इसी से इतिहास रचने की एक-एक बूँद सागर का रूप धारण करने लगती है। इसी के फलस्वरूप आत्मविश्वास भरे योद्धा टाकक्स ने किसी को बताये बिना

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

1. करोली का जन्म कब और कहाँ हुआ?
2. हंगरीवासियों का करोली पर विश्वास क्यों था?
3. करोली के साथ कौन-सी दुर्घटना घटी?

ही अपने बाएँ हाथ से प्रैक्टिस आरंभ कर दीा। अर्थात् जो उसके पास से चला गया, जो उसके पास नहीं था उसके बारे में चिंतित होना छोड़ दिया और जो कुछ उसके पास है, उस पर ध्यान देने लगा। उसने अपने आत्मविश्वास, आत्मसंकल्प और आत्मबल का बायें हाथ के साथ संबंध बना डाला और उसे एक ऐसा सशक्त साधन बना लिया जो इतिहास-पर-इतिहास रचता चला गया।

लगभग एक वर्ष बाद सन् 1939 में वह लोगों के सामने आया। सभी प्रतिभागी उसके पास आकर उसे धन्यवाद देने लगे और कहने लगे कि यार यह होता है जज़्बा, यह होती है खिलाड़ी की निष्ठा कि इतना सब कुछ होने के बाद भी तुम हमें देखने और हमारा हौसला बढ़ाने के लिए यहाँ आये हो!

प्रतिभागियों के कहने पर करोली ने जवाब दिया कि मैं यहाँ तुम्हारा हौसला बढ़ाने नहीं, मैं यहाँ तुम्हारे साथ मुक़ाबला करने आया हूँ। तैयार हो जाओ। करोली ने प्रतियोगिता में भाग लेने की बात लोगों के सामने रखकर सब को आश्चर्य में डाल दिया। किसी को पता नहीं था कि वह एक साल से अपने बाएँ हाथ से प्रैक्टिस कर रहा था, उसे दुनिया का सर्वश्रेष्ठ साधन बना रहा था। उसने सबके साथ प्रतियोगिता में भाग लिया और गोल्ड मैडल जीत लिया। दर्शक व प्रतिभागी अचंभित रह गए। सबके मन में यही प्रश्न था कि आखिर यह कैसे हो गया? जिस हाथ से एक साल पहले तक लिख भी नहीं सकता था, उसे इतना सशक्त कैसे बना डाला? दुनिया के सामने यह एक चमत्कार था। देश विदेश के कोने-कोने में करोली की प्रशंसा होती गई। फिर क्या था कि पूरे हंगरी में विश्वास की किरण जाग उठी कि सन् 1940 के ओलंपिक्स में पिस्टल शूटिंग का गोल्ड मैडल करोली ही जीतेगा। पर वक़्त ने फिर करोली के साथ खेल खेला और सन् 1940 के ओलंपिक्स दूसरे विश्वयुद्ध के कारण रद्द हो गए।

लेकिन करोली ने हार न मानी। उसका एक ही लक्ष्य था कि जीत के लिए कटिबद्ध होकर प्रतीक्षा करना। उसने अपना पूरा ध्यान सन् 1944 के ओलंपिक्स पर लगा दिया, पर वक़्त तो जैसे उसके धीरज की परीक्षा लेने के लिए आतुर था। सन् 1944 के ओलंपिक्स भी विश्वयुद्ध के कारण रद्द हो गए, लेकिन करोली टाकक्स ने

फिर भी हार न मानी। उसका अटल विश्वास था कि - होगा, एक-न-एक दिन ज़रूर होगा, वह दिन ज़रूर आएगा, जिस दिन मैं इतिहास के पन्नों पर आत्मविश्वास का परिचय दूँगा।

करोली में निराशा लेश मात्र भी नहीं थी। पता नहीं उसका हृदय संकल्पों की किस धातु का बना था। वह आशावाद का साक्षात रूप था। उसका आशावान हृदय चुनौतियों का सामना करते-करते और भी बुलंद होता गया। उसने अपना सारा फोकस सन् 1948 में होने वाले ओलंपिक्स पर डाल दिया।

करोली का सिर्फ एक ही लक्ष्य था पिस्टल शूटिंग में ओलंपिक्स में गोल्ड मैडल हासिल करना। इसलिए उसने निरंतर अभ्यास जारी रखा। आख़िरकार सन् 1948 के ओलंपिक्स आयोजित हुए। उसने उसमें हिस्सा लिया और अपने देश के लिए पिस्टल शूटिंग का गोल्ड मैडल जीत लिया। सारा हंगरी खुशी से झूम उठा, क्योंकि करोली ने वह कर दिखाया, जो औरों के लिए असंभव था। पर वह रुका नहीं। उसने सन् 1952 के ओलंपिक्स में भी भाग लिया और वहाँ भी गोल्ड मैडल जीतकर इतिहास रच डाला। करोली उस पिस्टल इवेंट में लगातार दो गोल्ड मैडल जीतने वाला पहला खिलाड़ी था।

ये सफलताएँ करोली के हृदय की गहराइयों का परिचय देती हैं, जिसमें आत्मविश्वास, आत्मसंकल्प, आत्मबल, आत्मनिष्ठा, आत्मसंयम आदि अद्‌भुत गुण साक्षात समाये थे। कहा जाता है कि काल की कठोर परिस्थितियाँ महापुरुषों को जन्म देती हैं। ऐसी ही कुछ करोली की कहानी है, जो हमें प्रेरणा देती है कि जो अपने पास नहीं है, उसकी चिंता न करें। जो कुछ है, उसे सशक्त करें और कमज़ोरी को भी ताक़त के रूप में बदलने का भरपूर प्रयास करें।

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

4. हंगरीवासियों का विश्वास डगमगाने का कारण क्या था?
5. ज़िंदगी में किसी चीज़ को पाने के लिए क्या करना चाहिए?
6. हम कोई भी कार्य करने में सफल कब होते हैं?

सारांश

करोली टाकक्स का जन्म हंगरी के बुड़ापेस्ट में 21 जनवरी, 1910 को हुआ था। वह हंगरी की आर्मी में काम करता था। वह एक बेहतरीन 100 मीटर की दूरी वाला पिस्टल शूटर था। 1938 के नेशनल गेम्स में उसने गोल्ड मैडल जीता था। हंगरीवासियों को विश्वास था कि 1940 के ओलंपिक्स में भी वह हंगरी के लिए गोल्ड मैडल अवश्य जीतेगा। किंतु 1938 के गेम्स के बाद आर्मी ट्रेनिंग कैंप में हुए एक हादसे में वह अपना सीधा हाथ खो बैठा। उसका गोल्ड मैडल का सपना चकनाचूर हो गया।

लेकिन वह बिना किसी को बताए एक साल तक अपने बायें हाथ से प्रैक्टिस करता रहा। 1939 के नेशनल गेम्स में फिर से गोल्ड मैडल जीतकर उसने सबको आश्चर्यचकित कर दिया। अब लोगों का विश्वास बढ़ गया कि 1940 के ओलंपिक्स में वह गोल्ड मैडल जीतेगा। लेकिन विश्वयुद्ध के कारण 1940 और 1944 में ओलंपिक्स रद्द कर दिए गए। करोली निराश नहीं हुआ। उसने 38 वर्ष की आयु में भी 1948 के ओलंपिक्स में 25 मीटर पिस्टल शूटिंग में हंगरी को गोल्ड मैडल दिलाया। आश्चर्य की बात यह है कि 1952 के ओलंपिक्स में भी लगातार दूसरी बार देश के लिए गोल्ड मैडल जीतकर वह लगातार दो गोल्ड मैडल जीतने वाला पहला खिलाड़ी बना।

शब्दार्थ

असीम	= जिसकी कोई सीमा न हो
हुनर	= कला, कारीगरी, योग्यता, कौशल
तराशना	= काटना, कतरना
जुनून	= सनक
कफ़न	= शव-परिधान,
मुकाम	= पड़ाव, ठहरना
ग्रेनेड	= हाथ से फेंके जाने वाला एक छोटा विस्फोटक बम
जज़्बा	= भावना
हौसला	= साहस, उत्साह, हिम्मत
वक़्त	= समय
आतुर (आतुरता)	= उतावलापन, आकुलता

अभ्यास-कार्य

I अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(i) **पाठ के मुख्य बिंदु पहचानिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उनकी व्याख्या कीजिए।** (मौखिक)

(ii) **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' में लिखिए।**

1. करोली का जन्म सन् 19 जनवरी को हुआ था। ( )
2. सन् 1940 में ओलंपिक खेल आयोजित किए गए। ( )
3. सन् 1939 के नेशनल गेम्स में करोली ने गोल्ड मैडल जीता। ( )
4. ओलंपिक खेल में करोली ने बाएँ हाथ से पिस्टल शूटिंग की थी।( )
5. करोली ने केवल सन् 1948 के ओलंपिक में ही भाग लिया था। ( )

(iii) **कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।**

1. अपनी ..... को ताकत बनाकर खुद के हुनर को तराशना पड़ता है। (ताकत/कमज़ोरियों)
2. ऐसे लोग इतिहास पढ़ते नहीं इतिहास ..... हैं। (मनाते/बनाते)
3. करोली के ..... हाथ में ग्रेनेड फट जाता है। (सीधे/उल्टे)
4. उसे अर्जुन की तरह ..... के अलावा कुछ नज़र नहीं आ रहा था। (लक्ष्य/हार)
5. करोली पिस्टल शूटिंग में ..... बार गोल्ड मैडल जीतने वाला पहला खिलाड़ी था। (दो/एक)

(iv) **निम्नलिखित गद्यांश पढ़िए। पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

आप अपनी क्षमताओं पर जितना अधिक दृढ़ विश्वास रखेंगे, आपका आत्मविश्वास उतना ही अधिक बढ़ेगा। यही इच्छाशक्ति आपके आत्मविश्वास को बढ़ाती है और आगे बढ़ने में आपकी मदद करती है।

आपकी इच्छाशक्ति और दृढ़ संकल्प आपके जीवन की सफलता के लिए बहुत आवश्यक है। फिर चाहे आप छात्र हों, कामकाजी पेशेवर हों या फिर व्यापारी हों, आपको सफलता प्राप्त करने के लिए इस आत्मविश्वास और

इच्छाशक्ति की बहुत आवश्यकता पड़ती है। एक छात्र के लिए दृढ़ संकल्पी और आत्मविश्वासी होना आवश्यक है, तभी वह परीक्षा में अच्छा ग्रेड प्राप्त कर सकता है। इसी प्रकार अन्य व्यवसायों में भी इनका होना आवश्यक है। इच्छाशक्ति और दृढ़ संकल्प के बिना आप जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

प्रश्न

1. आत्मविश्वास को कैसे बढ़ाया जा सकता है?
2. एक छात्र के लिए क्या आवश्यक है?
3. छात्रों और व्यापारियों को आत्मविश्वास और इच्छाशक्ति की आवश्यकता क्यों पड़ती है?
4. दृढ़ संकल्प के बिना जीवन कैसा होता है?
5. जीवन की सफलता के लिए क्या आवश्यक है?

II अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 4-5 **वाक्यों में लिखिए।**

1. जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए हमें क्या करना चाहिए?
2. सन् 1938 से सन् 1939 तक करोली के जीवन में कौन-सी घटनाएँ घटीं?
3. सन् 1939 के नेशनल गेम्स में भाग लेते हुए करोली ने क्या कहा?
4. हंगरीवासियों के करोली के बारे में क्या विचार थे?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 8-10 **वाक्यों में लिखिए।**

1. अपनी कमज़ोरियों को ताक़त बनाकर खुद के हुनर को तराशना पड़ता है। इस कथन के आधार पर करोली के जीवन पर प्रकाश डालिए।
2. 'साहस की राह में...' पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।
3. ओलंपिक गोल्ड जीतने में करोली को किन-किन कठिनाइयों से गुज़रना पड़ा। विस्तार से लिखिए।

4. आज आपने करोली टाकक्स के जीवन से संबंधित कहानी पाठ 'साहस की राह में' पढ़ा है। इस पाठ से अर्जित अपने अनुभवों को निम्न संकेतों के आधार पर डायरी के रूप में लिखिए और **मौखिक** रूप में प्रस्तुत कीजिए।

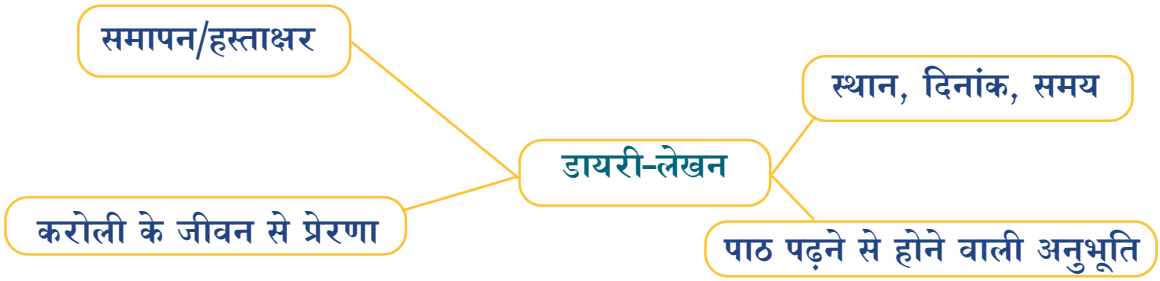

III भाषा की बात

I कोष्ठक में दी गई सूचना पढ़िए और उसके अनुसार उत्तर लिखिए।

1. कहानी, सपना, प्रतियोगिता (वचन बदलिए।)
2. आवश्यकता, इच्छाशक्ति, जीवनी, रुकावट (प्रत्यय पहचानिए।)
3. असंभव, प्रदर्शन, विदेश, संपूर्ण (उपसर्ग पहचानिए।)
4. ताकत, दिन, जन्म, बढ़ाना (विलोम शब्द लिखिए।)
5. असीम, हुनर, हादसा, रद्द (अर्थ लिखिए, वाक्य बनाइए।)
6. वाच्य पहचानिए।
   - (i) करोली ने जवाब दिया।
   - (ii) करोली के द्वारा प्रतियोगिता जीती गई।
   - (iii) करोली से लिखा नहीं जाता।

IV जीवन-कौशल

(1) 'जीवन में सफलता-प्राप्ति के लिए आत्मविश्वास व कड़ी मेहनत की अत्यंत आवश्यकता होती है।' इस विषय पर चर्चा कर अपने विचार व्यक्त कीजिए। **(मौखिक)**

10. नीति दोहे

- दोहे

- कबीर, तुलसी

शैक्षिक मापदंड – सीखने की संप्राप्तियाँ

हम इस पाठ के द्वारा निम्नलिखित सीखने की संप्राप्तियों का ज्ञानार्जन करेंगे।

I **अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया**

(i) सुर-ताल-लय के साथ दोहे पढ़ेंगे।

(ii) प्राचीन कवियों के बारे में बताएँगे।

(iii) जीवन में नीति का महत्व जानेंगे।

(iv) बोध प्रश्नों के उत्तर सोच-विचार कर मौखिक रूप में देंगे।

(v) कविता के मुख्य बिंदुओं की चर्चा कर मौखिक रूप में व्याख्या करेंगे।

II **अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता**

(i) कबीर और तुलसी का परिचय अपने शब्दों में लिखेंगे।

(ii) अच्छे-बुरे, सही-गलत में भेद जानने के लिए नैतिक गुणों की आवश्यकता के बारे में लिखेंगे।

(iii) दोहों का भाव अपने शब्दों में लिखेंगे।

(v) 'अच्छे व्यक्तित्व के निर्माण में नैतिक गुण सहायक होते हैं। इस विषय पर संकेतों के आधार पर दो मित्रों के बीच संवाद लिखेंगे और मौखिक रूप में प्रस्तुत करेंगे।

III **भाषा की बात**

(i) नए शब्दों के अर्थ जानेंगे और वाक्य प्रयोग करेंगे।

(ii) पर्यायवाची, विलोमार्थी शब्द लिखेंगे।

(iii) उपसर्ग, प्रत्यय पहचानेंगे।

IV **जीवन-कौशल** (i) जीवन में नैतिक गुणों का महत्व समझेंगे और इस विषय पर चर्चा कर अपने विचार मौखिक रूप में व्यक्त करेंगे

उद्देश्य

इस पाठ का उद्देश्य दोहा की रचना शैली से परिचित होना है। नीतिपरक दोहों के माध्यम से नैतिक गुणों का विकास करना है।

विधा विशेष

दोहे बहुत प्रभावशाली होते हैं। ये मात्रिक छंद हैं। प्रत्येक दोहे में दो पंक्तियाँ और चार चरण होते हैं। दोहे के पहले और तीसरे चरण में 13-13 मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं। मात्राएँ ह्रस्व और दीर्घ दो रूपों में होती हैं। ह्रस्व को लघु भी कहते हैं और इसकी एक मात्रा गिनते हैं। इसके लिए '।' चिह्न का प्रयोग होता है। दीर्घ को गुरु भी कहते हैं और इसकी दो मात्रा गिनते हैं। इसके लिए 'ऽ' चिह्न का प्रयोग होता है। दोहे मुख्यतः नैतिक विषयों पर आधारित होते हैं। यहाँ दिए गए दोहे नीतिपरक हैं।

प्रस्तावना

दिए गए दोहे नीतिपरक हैं। नैतिक गुणों के विकास के द्वारा ही हम अच्छे, बुरे, सही और गलत का भेद कर सकते हैं। संसार में गुरु का स्थान भगवान से भी ऊँचा बताया गया है क्योंकि गुरु ने ही ईश्वर से परिचय करवाया है।

कवि परिचय :

कबीर : कबीरदास एक ऐसे महान प्रतिभाशाली विचारक और कवि हैं जिन्होंने भारतीय जनता का पथ आलोकित किया है। इनके जन्म और मृत्यु के बारे में अनेक किवंदतियाँ प्रचलित हैं। कहा जाता है कि सन् 1398 में काशी में इनका जन्म हुआ और सन् 1518 के आसपास मगहर में देहांत हुआ। ये भक्तिकालीन निर्गुण संत परंपरा के प्रमुख कवि माने गए हैं। इनकी रचनाओं का संग्रह 'बीजक' है। कबीर ने अपने काव्य में धार्मिक और सामाजिक भेदभाव से मुक्त मनुष्य की कल्पना की है। ईश्वर-प्रेम, ज्ञान तथा वैराग्य, गुरुभक्ति, सत्संग और साधु-महिमा के साथ आत्मबोध और जगतबोध की अभिव्यक्ति इनके काव्य की विशेषताएँ हैं।

तुलसीदास : तुलसीदास जी के जन्म और जन्म स्थल को लेकर विविध विद्वानों के बीच मतभेद हैं। माना जाता है कि इनका जन्म राजापुर गाँव में सन् 1523 में हुआ। इनके पिता का नाम आत्माराम और माता का नाम हुलसी था। इनके गुरु नरहरिदास थे। इनकी रचनाओं में दोहावली, कवितावली, गीतावली, विनय-पत्रिका, रामचरित मानस, बरवै रामायण प्रमुख हैं। ये राम के अनन्य भक्त थे। लोकनायक तुलसीदास समन्वयात्मकता पर जोर देते थे। इनका निधन 1623 में हुआ।

कबीर :

जाति न पूछो साधु की, पूछि लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान।।

साई इतना दीजिए, जामे कुटुंब समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय।।

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

1. साधु से हमें क्या सीख मिलती है?
2. भगवान से हमें कितना धन माँगना चाहिए?

भाव : 1. किसी साधु से उसकी जाति नहीं पूछनी चाहिए, बल्कि उससे ज्ञान की बात पूछनी चाहिए। जैसे कि हम तलवार खरीदते हैं तो उसकी धार परखते हैं और उसका दाम पूछते हैं, म्यान पर ध्यान नहीं देते हैं।

2. कबीरदास जी कहते हैं कि, हे ईश्वर! तुम मुझे इतना दो जिससे कि मेरे परिवार का गुज़ारा चल सके। मैं और मेरे परिवार के जन भूखे न रहे और साधु भी भूखा न जाए।

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौ पाए।

बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताए।।

भाव : कबीरदास जी ने इस दोहे में गुरु की महिमा का वर्णन किया है। वह कहते हैं कि जब गुरु और गोविंद (ईश्वर) एक साथ खड़े मिले, तब उन्हें दुविधा हुई कि पहले किन्हें प्रणाम करना चाहिए। तब उन्होंने पहले गुरु को प्रणाम किया, क्योंकि गुरु ने ही हमारा परिचय ईश्वर से कराया है। इसलिए गुरु का स्थान गोविंद से ऊँचा है।

तुलसीदास :

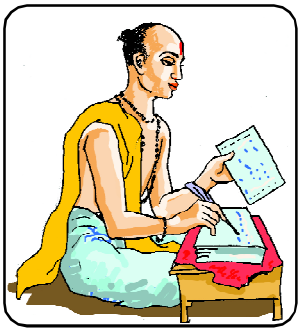

तुलसी काया खेत है, मनसा भयो किसान।
पाप-पुण्य दोऊ बीज है, बुवै सौ लुनै निदान।।

तुलसी साथी विपत्ति, विद्या-विनय-विवेक।
साहस, सुकृति, सुसत्यव्रत, राम भरोसे एक।।

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

3. तुलसी ने शरीर की तुलना किससे की?
4. विपत्ति के समय हमारा साथ कौन देते हैं?

भाव : 1. तुलसीदास के अनुसार शरीर खेत के समान है और मन किसान के समान। पाप और पुण्य दो बीज हैं। जिसे बोया जाता है, उसी को ही प्राप्त किया जाता है।

2. तुलसीदास कहते हैं कि विपत्ति के समय शिक्षा, विनय, विवेक, साहस, अच्छे कार्य और सच्चाई ही हमारा साथ देते हैं।

शब्दार्थ

मोल	= मूल्य, दाम, क़ीमत
म्यान	= तलवार रखने का कोष
साई	= ईश्वर, भगवान
कुटुंब	= परिवार
गोविंद	= ईश्वर, भगवान
दोऊ	= दोनों
काकै	= किसके
पाय	= पाँव, पैर
बलिहारी	= निछावर होना, कुरबान होना
काया	= शरीर
मनसा	= मन
भयो	= समान
बुवै	= बोना
सुकृति	= अच्छे कार्य

अभ्यास-कार्य

I अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(i) कविता के मुख्य बिंदु पहचानिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उनकी व्याख्या कीजिए। (मौखिक)

(ii) निम्नलिखित पंक्तियों को क्रमानुसार लिखिए।

1. साधु न भूखा जाय।। ( )
2. मैं भी भूखा न रहूँ, ( )
3. जामे कुटुंब समाय। ( )
4. साई इतना दीजिए, ( )

(iii) निम्नलिखित पद्यांश पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

कलम देश की बड़ी शक्ति है भाव जगाने वाली,
दिल की नहीं दिमागों में भी आग लगाने वाली।
पैदा करती कलम विचारों के जलते अंगारे,
और प्रज्वलित प्राण देश क्या कभी मरेगा मारे।
एक भेद है और वहाँ निर्भय होते नर-नारी,
कलम उगलती आग, जहाँ अक्षर बनते चिंगारी।
जहाँ मनुष्यों के भीतर हरदम जलते हैं शोले,
बादल में बिजली होती, होते दिमाग में गोले।

प्रश्न

1. भाव कौन जगाता है?
2. कलम कैसे विचार पैदा करती है?
3. शोले कहाँ जलते हैं?
4. अक्षर की तुलना किससे की गई है?
5. बिजली कहाँ चमकती है?

II अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 4-5 वाक्यों में लिखिए।

1. निम्नलिखित कवियों के बारे में लिखिए।
   (अ) कबीरदास (आ) तुलसीदास
2. कबीर ने साधु की क्या विशेषता बताई है?
3. तुलसीदास ने विपत्ति के समय हमारा साथी किसे माना है? क्यों?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 8-10 वाक्यों में लिखिए।

1. हमारे जीवन में नीति दोहों का क्या महत्व है?
2. 'अच्छे व्यक्तित्व के निर्माण में नैतिक गुण सहायक होते हैं, इस विषय पर दो मित्रों के बीच संवाद लिखिए और मौखिक रूप में प्रस्तुत कीजिए।

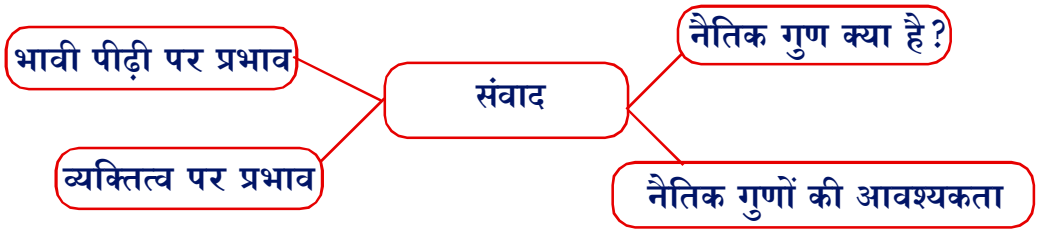

III भाषा की बात

I कोष्ठक में दी गई सूचना पढ़िए और उसके अनुसार उत्तर लिखिए।

1. साई, साथी, काया (पर्यायवाची शब्द लिखिए और वाक्य प्रयोग कीजिए।)
2. पाप, विवेक सत्य (विलोम शब्द लिखिए।)
3. निदान, विनय, साहस (वाक्य में प्रयोग कीजिए।)
4. ज्ञान, मोल, कृति, गुरु (उपसर्ग जोड़िए।)
5. साहसी, ज्ञानी, विवेकहीन, धनवान (प्रत्यय पहचानिए।)

IV जीवन-कौशल (1) 'जीवन में अनमोल वचन की आवश्यकता व महत्व।' इस विषय पर चर्चा कर अपने विचार प्रकट कीजिए। **(मौखिक)**

उपवाचक

बड़े भाई साहब (कहानी)

– प्रेमचंद

लेखक परिचय

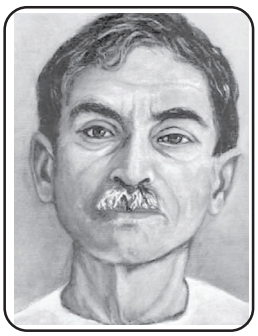

प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई, 1880 में हुआ। इनके बचपन का नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। इन्होंने ट्यूशन पढ़ाते हुए मैट्रिक तथा नौकरी करते हुए बी.ए. पास किया। इन्होंने लगभग एक दर्जन उपन्यास तथा ढाई सौ कहानियों की रचना की। इन्हें 'उपन्यास सम्राट' भी कहा जाता है। इनकी कहानियाँ ''मानस-सरोवर'' शीर्षक से आठ खंडों में संकलित हैं। गोदान, गबन, सेवासदन, निर्मला, कर्मभूमि, रंगभूमि, कायाकल्प, प्रतिज्ञा, मंगलसूत्र आदि इनके प्रमुख उपन्यास हैं। इनकी कहानियों में पंच परमेश्वर, बड़े घर की बेटी, कफ़न, बड़े भाई साहब आदि प्रमुख हैं।

उपन्यास सम्राट प्रेमचंद में साहित्य सृजन की जन्मजात प्रतिभा विद्यमान थी। इन्होंने 'माधुरी' तथा 'मर्यादा' पत्रिकाओं का संपादन किया तथा 'हंस' व 'जागरण' नामक पत्र का प्रकाशन भी किया। जनता की बात जनता की भाषा में कहकर तथा अपने कथा साहित्य के माध्यम से तत्कालीन निम्न वर्ग एवं मध्यम वर्ग का सच्चा प्रतिबिंब प्रस्तुत करके प्रेमचंद भारतीयों के हृदय में समा गए। सच्चे अर्थों में ये 'कलम के सिपाही' थे। ऐसे महान लेखक, सहृदयी, हृदयस्पर्शी, हिंदी साहित्य के लाड़ले प्रेमचंद 8 अक्तूबर 1936 को इस दुनिया से अलविदा कर गए। लेकिन आज भी वे अपनी अपूर्व व अनुपम रचनाओं से जन-जन के हृदय में समाए हुए हैं। वे अपनी अपार, अनंत व अद्वितीय साहित्य सेवा से चिरकाल के लिए अमर हो गए।

भाग - 1

मेरे भाई साहब मुझसे पाँच साल बड़े, लेकिन केवल तीन दरजे आगे। उन्होंने भी उसी उम्र में पढ़ना शुरू किया था, जब मैंने शुरु किया लेकिन तालीम जैसे महत्त्व के मामले में वह जल्दबाज़ी से काम लेना पसंद न करते थे। इस भवन की बुनियाद खूब मज़बूत डालना चाहते थे, जिस पर आलीशान महल बन सके। एक साल का काम दो साल में करते थे। कभी-कभी तीन साल भी लग जाते थे। बुनियाद ही पुख्ता न हो, तो मकान कैसे पायेदार बने।

मैं छोटा था, वह बड़े थे। मेरी उम्र नौ साल की थी, वह चौदह साल के थे। उन्हें मेरी तम्बीह और निगरानी का पूरा और जन्मसिद्ध अधिकार था और मेरी शालीनता इसी में थी कि उनके हुक्म को क़ानून समझूँ।

वह स्वभाव से बड़े अध्ययनशील थे। हरदम किताब खोले बैठे रहते और शायद दिमाग को आराम देने के लिए कभी कॉपी पर, किताब के हाशियों पर चिड़ियों, कुत्तों, बिल्लियों की तसवीरें बनाया करते थे। कभी-कभी एक ही नाम या शब्द या वाक्य दस—बीस बार लिख डालते। कभी एक शेर को बार-बार सुंदर अक्षरों में नकल करते। कभी ऐसी शब्द-रचना करते, जिसमें न कोई अर्थ होता, न कोई सामंजस्य। मसलन एक बार उनकी कॉपी पर मैंने यह इबारत देखी-स्पेशल, अमीना, भाइयों-भाइयों, दरअसल, भाई-भाई। राधेश्याम, श्रीयुत राधेश्याम, एक घंटे तक-इसके बाद एक आदमी का चेहरा बना हुआ था। मैंने बहुत चेष्टा की कि इस पहेली का कोई अर्थ निकालूँ, लेकिन असफल रहा। और उनसे पूछने का साहस न हुआ। वह नौवीं जमात में थे, मैं पाँचवीं में। उनकी रचनाओं को समझना मेरे लिए छोटा मुँह बड़ी बात थी।

मेरा जी पढ़ने में बिलकुल न लगता था। एक घंटा भी किताब लेकर बैठना पहाड़ था। मौक़ा पाते ही होस्टल से निकलकर मैदान में आ जाता और कभी कंकरियाँ उछालता, कभी कागज़ की तितलियाँ उड़ाता और कहीं कोई साथी मिल गया, तो पूछना ही क्या। कभी चारदीवारी पर चढ़कर नीचे कूद रहे हैं। कभी फाटक पर सवार, उसे आगे-पीछे चलाते हुए मोटरकार का आनंद उठा रहे हैं, लेकिन कमरे में आते ही भाई साहब का वह रूद्र-रूप देखकर प्राण सूख जाते। उनका पहला सवाल यह होता - 'कहाँ थे?' हमेशा यही सवाल, इसी ध्वनि में हमेशा पूछा

जाता था और इसका जवाब मेरे पास केवल मौन था। न जाने मेरे मुँह से यह बात क्यों न निकलती कि ज़रा बाहर खेल रहा था। मेरा मौन कह देता था कि मुझे अपना अपराध स्वीकार है और भाई साहब के लिए उसके सिवा और कोई इलाज़ न था कि स्नेह और रोष से मिले हुए शब्दों में मेरा सत्कार करें।

''इस तरह अंग्रेज़ी पढ़ोगे, तो ज़िंदगी-भर पढ़ते रहोगे और एक हर्फ़ न आयेगा। अंग्रेज़ी पढ़ना कोई हँसी-खेल नहीं है कि जो चाहे, पढ़ ले, नहीं ऐरा-गैरा नत्थू-खैरा सभी अंग्रेज़ी के विद्वान हो जाते। यहाँ रात-दिन आँखें फोड़नी पड़ती हैं और खून जलाना पड़ता है, तब कहीं यह विद्या आती है। और आती क्या है, हाँ कहने को आ जाती है। बड़े-बड़े विद्वान भी शुद्ध अंग्रेज़ी नहीं लिख सकते, बोलना तो दूर रहा। और मैं कहता हूँ, तुम कितने घोंघा हो कि मुझे देखकर भी सबक नहीं लेते। मैं कितनी मेहनत करता हूँ, यह तुम अपनी आँखों से देखते हो, अगर नहीं देखते, तो यह तुम्हारी आँखों का कसूर है, तुम्हारी बुद्धि का कसूर है। इतने मेले-तमाशे होते हैं, मुझे तुमने कभी देखने जाते देखा है? रोज़ ही क्रिकेट और हॉकी मैच होते हैं। मैं पास नहीं फटकता। हमेशा पढ़ता रहता हूँ। उस पर भी एक-एक दरजे में दो-दो, तीन-तीन साल पड़ा रहता हूँ, फिर भी तुम कैसे आशा करते हो कि तुम यों खेल-कूद में वक्त गँवाकर पास हो जाओगे? मुझे तो दो ही तीन साल लगते हैं, तुम उम्र-भर इसी दरजे में पड़े सड़ते रहोगे? अगर तुम्हें इस तरह उम्र गँवानी है, तो बेहतर है, घर चले जाओ और मज़े से गुल्ली-डंडा खेलो। दादा की गाढ़ी कमाई के रुपये क्यों बरबाद करते हो?''

मैं यह लताड़ सुनकर आँसू बहाने लगता। जवाब ही क्या था। अपराध तो मैंने किया, लताड़ कौन सहे? भाई साहब उपदेश की कला में निपुण थे। ऐसी-ऐसी लगती बातें कहते, ऐसे-ऐसे सूक्ति-बाण चलाते कि मेरे जिगर के टुकड़े-टुकड़े हो जाते और हिम्मत टूट जाती। इस तरह जान तोड़कर मेहनत करने की शक्ति मैं अपने में न पाता था और उस निराशा में ज़रा देर के लिए मैं सोचने लगता- 'क्यों न घर चला जाऊँ। जो काम मेरे बूते के बाहर है, उसमें हाथ डालकर क्यों अपनी ज़िंदगी ख़राब करूँ।' मुझे अपना मूर्ख रहना मंजूर था, लेकिन उतनी मेहनत से मुझे तो चक्कर आ जाता था, लेकिन घंटे-दो घंटे के बाद निराशा के बादल फट जाते और मैं इरादा करता कि आगे से खूब जी लगाकर पढ़ूँगा। चटपट एक टाइम-टेबिल बना डालता। बिना पहले से नक्शा बनाए कोई स्कीम तैयार किए काम कैसे शुरू करूँ। टाइम-टेबिल में खेलकूद की मद

बिलकुल उड़ जाती। प्रातःकाल छः बजे उठना, मुँह-हाथ धो, नाश्ता कर, पढ़ने बैठ जाना। छः से आठ तक अंग्रेज़ी, आठ से नौ तक हिसाब, नौ से साढ़े नौ तक इतिहास, फिर भोजन और स्कूल। साढ़े तीन बजे स्कूल से वापिस होकर आधा घंटा आराम, चार से पाँच तक भूगोल, पाँच से छः तक ग्रामर, आधा घंटा होस्टल के सामने ही टहलना, साढ़े छः से सात तक अंग्रेज़ी कंपोज़ीशन, फिर भोजन करके आठ से नौ तक अनुवाद, नौ से दस तक हिंदी, दस से ग्यारह तक विविध-विषय, फिर विश्राम।

मगर टाइम-टेबिल बना लेना एक बात है, उस पर अमल करना दूसरी बात। पहले ही दिन उसकी अवहेलना शुरू हो जाती। मैदान की वह सुखद हरियाली, हवा के हलके-हलके झोंके, फुटबाल की वह उछल-कूद, कबड्डी के वह दाँव-घात, वॉलीबाल की वह तेज़ी और फुरती, मुझे अज्ञात और अनिवार्य रूप से खींच ले जाती और वहाँ जाते ही मैं सब कुछ भूल जाता। वह जानलेवा टाइम-टेबिल, वह आँखफोड़ पुस्तकें, किसी की याद न रहती और भाई साहब को नसीहत और फ़जीहत का अवसर मिल जाता। मैं उनके साये से भागता, उनकी आँखों से दूर रहने की चेष्टा करता, कमरे में इस तरह दबे पाँव आता कि उन्हें खबर न हो। उनकी नज़र मेरी ओर उठी और मेरे प्राण निकले। हमेशा सिर पर एक नंगी तलवार-सी लटकती मालूम होती। फिर भी जैसे मौत और विपत्ति के बीच भी आदमी मोह और माया के बंधन में जकड़ा रहता है, मैं फटकार और घुड़कियाँ खाकर भी खेल-कूद का तिरस्कार न कर सकता था।

बोध-प्रश्न सोचिए, चर्चा कीजिए, अपने शब्दों में उत्तर दीजिए और लिखिए।

1. तालीम के बारे में बड़े भाई साहब के क्या विचार थे?
2. बड़े भाई साहब के स्वभाव की क्या विशेषता थी?
3. मौका मिलते ही लेखक क्या करते थे?
4. बड़े भाई साहब ने किस बात के लिए लेखक की आँखों को कसूरवार ठहराया?
5. लेखक वापस घर जाने के बारे में क्यों सोचते थे?
6. टाइम-टेबिल बनाना एक बात है, उस पर अमल करना दूसरी बात। लेखक ने ऐसा क्यों कहा होगा?

भाग - 2

सालाना इम्तिहान हुआ। भाई साहब फ़ेल हो गए, मैं पास हो गया और दरजे में प्रथम आया। मेरे और उनके बीच में केवल दो साल का अंतर रह गया। जी में आया, भाई साहब को आड़े हाथों लूँ - 'आपकी वह घोर तपस्या कहाँ गई? मुझे देखिए, मज़े से खेलता भी रहा और दरज़े में अव्वल भी हूँ।' लेकिन वह इतने दुखी और उदास थे कि मुझे उनसे दिली हमदर्दी हुई और उनके घाव पर नमक छिड़कने का विचार ही लज्जास्पद जान पड़ा। हाँ, अब मुझे अपने ऊपर कुछ अभिमान हुआ और आत्मसम्मान भी बढ़ा। भाई साहब का वह रौब मुझ पर न रहा। आज़ादी से खेलकूद में शरीक होने लगा। दिल मज़बूत था। अगर उन्होंने फिर मेरी फ़जीहत की, तो साफ़ कह दूँगा - 'आपने अपना खून जलाकर कौन-सा तीर मार लिया। मैं तो खेलते-कूदते दरजे में अव्वल आ गया।' ज़बान से यह हेकड़ी जताने का साहस न होने पर भी मेरे रंग-ढंग से साफ़ ज़ाहिर होता था कि भाई साहब का वह आतंक मुझ पर नहीं था। भाई साहब ने इसे भाँप लिया-उनकी सहज बुद्धि बड़ी तीव्र थी और एक दिन जब मैं भोर का सारा समय गुल्ली-डंडे की भेंट करके ठीक भोजन के समय लौटा, तो भाई साहब ने मानो तलवार खींच ली और मुझ पर टूट पड़े-देखता हूँ, इस साल पास हो गए और दरज़े में अव्वल आ गए, तो तुम्हें दिमाग़ हो गया है, मगर भाईजान, घमंड तो बड़े-बड़े का नहीं रहा, तुम्हारी क्या हस्ती है? इतिहास में रावण का हाल तो पढ़ा ही होगा। उसके चरित्र से तुमने कौन-सा उपदेश लिया? या यों ही पढ़ गए? महज़ इम्तिहान पास कर लेना कोई चीज़ नहीं, असल चीज़ है बुद्धि का विकास। जो कुछ पढ़ो, उसका अभिप्राय समझो। रावण भूमंडल का स्वामी था। ऐसे राजाओं को चक्रवर्ती कहते हैं। आजकल अंग्रेज़ों के राज्य का विस्तार बहुत बढ़ा हुआ है, पर इन्हें चक्रवर्ती नहीं कह सकते। संसार में अनेक राष्ट्र अंग्रेजों का आधिपत्य स्वीकार नहीं करते, बिलकुल स्वाधीन हैं। रावण चक्रवर्ती राजा था, संसार के सभी महीप उसे कर देते थे। बड़े-बड़े देवता उसकी गुलामी करते थे। आग और पानी के देवता भी उसके दास थे, मगर उसका अंत क्या हुआ? घमंड ने उसका नाम-निशान तक मिटा दिया, कोई उसे एक चुल्लू पानी देने वाला भी न बचा। आदमी और जो कुकर्म चाहे करे, पर अभिमान न करे, इतराये नहीं। अभिमान किया और दिन-दुनिया दोनों से गया।

शैतान का हाल भी पढ़ा ही होगा। उसे यह अभिमान हुआ था कि ईश्वर का उससे बढ़कर सच्चा भक्त कोई है ही नहीं। अंत में यह हुआ कि स्वर्ग से नरक में ढकेल दिया गया। शाहेरूम ने भी एक बार अहंकार किया था। भीख माँग-माँगकर मर गया। तुमने तो अभी केवल एक दरज़ा पास किया है और अभी से तुम्हारा सिर फिर गया, तब तो तुम आगे पढ़ चुके। यह समझ लो कि तुम अपनी मेहनत से नहीं पास हुए, अंधे के हाथ बटेर लग गई। मगर बटेर केवल एक बार हाथ लग सकती है, बार-बार नहीं लग सकती। कभी-कभी गुल्ली-डंडे में भी अंधा-चोट निशाना पड़ जाता है इससे कोई सफल खिलाड़ी नहीं हो जाता। सफल खिलाड़ी वह है, जिसका कोई निशाना खाली न जाए।

मेरे फ़ेल होने पर मत जाओ। मेरे दरज़े में आओगे तो दाँतों पसीना आ जाएगा, जब अलजबरा और जामेट्री के लोहे के चने चबाने पड़ेंगे और इंगलिस्तान का इतिहास पढ़ाना पड़ेगा। बादशाहों के नाम याद रखना आसान नहीं। आठ-आठ हेनरी हो गुज़रे हैं। कौन-सा कांड किस हेनरी के समय में हुआ, क्या यह याद कर लेना आसान समझते हो? हेनरी सातवें की जगह हेनरी आठवाँ लिखा और सब नंबर गायब। सफ़ाचट। सिफ़र भी न मिलेगा, सिफ़र भी। हो किस ख़याल में। दरज़नों तो जेम्स हुए हैं, दरजनों विलियम, कोड़ियों चार्ल्स। दिमाग़ चक्कर खाने लगता है। आंधी रोग हो जाता है। इन अभागों को नाम भी न जुड़ते थे। एक ही नाम के पीछे दोयम, सोयम, चहारूम, पंचुम लगाते चले गए। मुझसे पूछते, तो दस लाख नाम बता देता।

और जामेट्री तो बस, ख़ुदा ही पनाह। अ ब ज की जगह अ ज ब लिख दिया और सारे नंबर कट गए। कोई इन निर्दयी मुमतहिनों से नहीं पूछता कि आख़िर अ ब ज और अ ज ब में क्या फ़र्क है, और व्यर्थ की बात के लिए क्यों छात्रों का खून करते हो। दाल-भात-रोटी खाई या भात-दाल-रोटी खाई, इसमें क्या रखा है, मगर इन परीक्षकों को क्या परवाह। वह तो वही देखते हैं जो पुस्तक में लिखा है। चाहते हैं कि लड़के अक्षर-अक्षर रट डालें। और इसी रटंत का नाम शिक्षा रख छोड़ा है। और आख़िर इन बे-सिर-पैर की बातों के पढ़ने से फ़ायदा?

इस रेखा पर वह लंब गिरा दो, तो आधार लंब से दुगुना होगा। पूछिए, इससे प्रयोजन? दुगुना नहीं, चौगुना हो जाए, या आधा ही रहे, मेरी बला से, लेकिन परीक्षा

में पास होना है, तो यह सब खुराफ़ात याद करनी पड़ेगी। कह दिया – 'समय की पाबंदी' पर एक निबंध लिखो, जो चार पन्नों से कम न हो। अब आप कॉपी सामने खोले, कलम हाथ में लिए उसके नाम को रोइए। कौन नहीं जानता कि समय की पाबंदी बहुत अच्छी बात है। इससे आदमी के जीवन में संयम आ जाता है, दूसरों का उस पर स्नेह होने लगता है और उसके कारोबार में उन्नति होती है, लेकिन इस ज़रा-सी बात पर चार पन्ने कैसे लिखें? जो बात एक वाक्य में कही जा सके, उसे चार पन्नों में लिखने की ज़रूरत? मैं तो इसे हिमाकत कहता हूँ। यह तो समय की किफ़ायत नहीं, बल्कि उसका दुरुपयोग है कि व्यर्थ में किसी बात को ठूँस दिया जाए। हम चाहते हैं, आदमी को जो कुछ कहना हो, चटपट कह दे और अपनी राह ले। मगर नहीं, आपको चार पन्ने रँगने पड़ेंगे, चाहे जैसे लिखिए और पन्ने भी पूरे फूलस्केप आकार के। यह छात्रों पर अत्याचार नहीं, तो और क्या है? अनर्थ तो यह है कि कहा जाता है, संक्षेप में लिखो। समय की पाबंदी पर संक्षेप में एक निबंध लिखो, जो चार पन्नों से कम और धीरे-धीरे भी। है उलटी बात, है या नहीं। बालक भी इतनी-सी बात समझ सकता है, लेकिन इन अध्यापकों को इतनी तमीज़ नहीं। उस पर दावा है कि हम अध्यापक हैं। मेरे दरजे में आओगे लाला, तो ये सारे पापड़ बेलने पड़ेंगे और तब आटे-दाल का भाव मालूम होगा। इस दरज़े में अव्वल आ गए हो, तो ज़मीन पर पाँव नहीं रखते। इसलिए मेरा कहना मानिए। लाख फ़ेल हो गया हूँ, लेकिन तुमसे बड़ा हूँ, संसार का मुझे तुमसे कहीं ज़्यादा अनुभव है। जो कुछ कहता हूँ उसे गिरह बाँधिए, नहीं तो पछताइएगा।

बोध-प्रश्न सोचिए, चर्चा कीजिए, अपने शब्दों में उत्तर दीजिए और लिखिए।

7. लेखक खेलकूद में आज़ादी से शरीक क्यों होने लगे थे?
8. शैतान के बारे में बड़े भाई साहब के क्या विचार थे?
9. बड़े भाई साहब किसे समय का दुरुपयोग मानते थे?
10. रटंत शिक्षा के बारे में बड़े भाई साहब ने क्या बताया?

भाग – 3

स्कूल का समय निकट था, नहीं ईश्वर जाने यह उपदेश-माला कब समाप्त होती। भोजन आज मुझे निःस्वाद-सा लग रहा था। जब पास होने पर यह तिरस्कार हो रहा है, तो फ़ेल हो जाने पर तो शायद प्राण ही ले लिए जाएँ। भाई साहब ने अपने दरज़े की पढ़ाई का जो भयंकर चित्र खींचा था, उसने मुझे भयभीत कर दिया। स्कूल छोड़कर घर नहीं भागा, यही ताज्जुब है, लेकिन इतने तिरस्कार पर भी पुस्तकों में मेरी अरुचि ज्यों-की-त्यों बनी रही। खेल-कूद का कोई अवसर हाथ से न जाते देता। पढ़ता भी, मगर बहुत कम। बस, इतना कि रोज़ टास्क पूरा हो जाए और दरज़े में ज़लील न होना पड़े। अपने ऊपर जो विश्वास पैदा हुआ था, वह फिर लुप्त हो गया और फिर चोरों का-सा जीवन कटने लगा।

फिर सालाना इम्तिहान हुआ और कुछ ऐसा संयोग हुआ कि मैं फिर पास हुआ और भाई साहब फिर फ़ेल हो गए। मैंने बहुत मेहनत नहीं की, पर न जाने कैसे दरज़े में अव्वल आ गया। मुझे खुद अचरज हुआ। भाई साहब ने प्राणांतक परिश्रम किया। कोर्स का एक-एक शब्द चाट गए थे, दस बजे रात तक इधर, चार बजे भोर से उधर, छः से साढ़े नौ तक स्कूल जाने के पहले। मुद्रा कांतिहीन हो गई थी, मगर बेचारे फ़ेल हो गए। मुझे उन पर दया आती थी। नतीजा सुनाया गया, तो वह रो पड़े और मैं भी रोने लगा। अपने पास होने की खुशी आधी हो गई। मैं भी फ़ेल हो गया होता, तो भाई साहब को इतना दुःख न होता, लेकिन विधि की बात कौन टाले!

मेरे और भाई साहब के बीच में अब केवल एक दरज़े का अंतर और रह गया। मेरे मन में एक कुटिल भावना उदय हुई कि कहीं भाई साहब एक साल और फ़ेल हो जाएँ, तो मैं उनके बराबर हो जाऊँ, फिर वह किस आधार पर मेरी फ़जीहत कर सकेंगे, लेकिन मैंने इस विचार को दिल से बलपूर्वक निकाल डाला। आख़िर वह मुझे मेरे हित के विचार से ही तो डाँटते हैं। मुझे इस वक्त अप्रिय लगता है अवश्य, मगर यह शायद उनके उपदेशों का ही असर है कि मैं दनादन पास हो जाता हूँ और इतने अच्छे नंबरों से।

अब भाई साहब बहुत कुछ नरम पड़ गए थे। कई बार मुझे डाँटने का अवसर पाकर भी उन्होंने धीरज से काम लिया। शायद अब वह खुद समझने लगे थे कि मुझे

डाँटने का अधिकार उन्हें नहीं रहा, या रहा भी, तो बहुत कम। मेरी स्वच्छंदता भी बढ़ी। मैं उनकी सहिष्णुता का अनुचित लाभ उठाने लगा। मुझे कुछ ऐसी धारणा हुई कि मैं पास ही हो जाऊँगा, पढ़ूँ-न-पढ़ूँ, मेरी तकदीर बलवान है, इसलिए भाई साहब के डर से जो थोड़ा-बहुत पढ़ लिया करता था, वह भी बंद हुआ। मुझे कनकौए उड़ाने का नया शौक़ पैदा हो गया था और अब सारा समय पतंगबाज़ी की ही भेंट होता था, फिर भी भाई साहब का अदब करता था और उनकी नज़र बचाकर कनकौए उड़ाता था। मांझा देना, कन्ने बाँधना, पतंग टूर्नामेंट की तैयारियाँ आदि समस्याएँ सब गुप्त रूप से हल की जाती थीं। मैं भाई साहब को यह संदेह न करने देना चाहता था कि उनका सम्मान और लिहाज़ मेरी नज़रों में कम हो गया है।

एक दिन संध्या समय, होस्टल से दूर मैं एक कनकौआ लूटने बेतहाशा दौड़ा जा रहा था। आँखें आसमान की ओर थीं और मन उस आकाशगामी पथिक की ओर, जो मंद गति से झूमता पतन की ओर चला आ रहा था, मानो कोई आत्मा स्वर्ग से निकलकर विरक्त मन से नए संस्कार ग्रहण करने जा रही हो। बालकों की पूरी सेना लग्गे और झाड़दार बाँस लिए इनका स्वागत करने को दौड़ी आ रही थी। किसी को अपने आगे-पीछे की ख़बर न थी। सभी मानो उस पतंग के साथ ही आकाश में उड़ रहे थे, जहाँ सब कुछ समतल है, न मोटरकारें हैं, न ट्राम, न गाड़ियाँ।

सहसा भाई साहब से मेरी मुठभेड़ हो गई, जो शायद बाज़ार से लौट रहे थे। उन्होंने वहीं हाथ पकड़ लिया और उग्र भाव से बोले-इन बाज़ारी लौंडों के साथ धेले के कनकौए के लिए दौड़ते तुम्हें शर्म नहीं आती? तुम्हें इसका भी कुछ लिहाज नहीं कि अब नीची जमात में नहीं हो, बल्कि आठवीं जमात में आ गए हो और मुझसे केवल एक दरज़ा नीचे हो। आख़िर आदमी को कुछ तो अपनी पोज़ीशन का ख़याल रखना चाहिए।

एक ज़माना था कि लोग आठवाँ दरज़ा पास करके नायब तहसीलदार हो जाते थे। मैं कितने ही मिडिलचियों को जानता हूँ, जो आज अव्वल दरजे के डिप्टी मैजिस्ट्रेट या सुपरिटेंडेंट हैं। कितने ही आठवीं जमात वाले हमारे लीडर और समाचारपत्रों के संपादक हैं। बड़े-बड़े विद्वान उनकी मातहती में काम करते हैं और

तुम उसी आठवें दरज़े में आकर बाज़ारी लौंडों के साथ कनकौए के लिए दौड़ रहे हो। मुझे तुम्हारी इस कम अक्ली पर दुःख होता है। तुम ज़हीन हो, इसमें शक नहीं, लेकिन वह ज़ेहन किस काम का जो हमारे आत्मगौरव की हत्या कर डाले। तुम अपने दिल में समझते होगे, मैं भाई साहब से महज़ एक दरजा नीचे हूँ और अब उन्हें मुझको कुछ कहने का हक़ नहीं है, लेकिन यह तुम्हारी गलती है। मैं तुमसे पाँच साल बड़ा हूँ और चाहे आज तुम मेरी ही जमात में आ जाओ और परीक्षकों का यही हाल है, तो निस्संदेह अगले साल तुम मेरे समकक्ष हो जाओगे और शायद एक साल बाद मुझसे आगे भी निकल जाओ, लेकिन मुझमें और तुममें जो पाँच साल का अंतर है, उसे तुम क्या, खुदा भी नहीं मिटा सकता। मैं तुमसे पाँच साल बड़ा हूँ और हमेशा रहूँगा। मुझे दुनिया का और ज़िंदगी का जो तजुरबा है, तुम उसकी बराबरी नहीं कर सकते, चाहे तुम एम.ए. और डी.फिल् और डी.लिट् ही क्यों न हो जाओ। समझ किताबें पढ़ने से नहीं आती, दुनिया देखने से आती है। हमारी अम्माँ ने कोई दरजा नहीं पास किया और दादा भी शायद पाँचवीं-छठी जमात के आगे नहीं गये, लेकिन हम दोनों चाहे सारी दुनिया की विद्या पढ़ लें, अम्मा और दादा को हमें समझाने और सुधारने का अधिकार हमेशा रहेगा। केवल इसलिए नहीं कि वे हमारे जन्मदाता हैं, बल्कि इसलिए कि उन्हें दुनिया का हमसे ज़्यादा तजुरबा है और रहेगा। अमेरिका में किस तरह की राज-व्यवस्था है, और आठवें हेनरी ने कितने ब्याह किए और आकाश में कितने नक्षत्र हैं, यह बातें चाहे उन्हें न मालूम हों, लेकिन हज़ारों ऐसी बातें हैं, जिनका ज्ञान उन्हें हमसे और तुमसे ज़्यादा है।

बोध-प्रश्न सोचिए, चर्चा कीजिए, अपने शब्दों में उत्तर दीजिए और लिखिए।

11. सालान इम्तिहान का नतीज़ा आने पर दोनों भाई क्यों रोने लगे थे?
12. लेखक कौन-कौन से काम भाई साहब की नज़र से बचकर करने लगे थे?
13. कनकौआ लूटने के लिए दौड़ते हुए अपने भाई को बड़े भाई साहब ने क्या कहा?
14. समझ और तजुरबे के बारे में भाई साहब ने लेखक को क्या समझाया?

भाग - 4

दैव न करे, आज मैं बीमार हो जाऊँ, तो तुम्हारे हाथ-पाँव फूल जाएँगे। दादा को तार देने के सिवा तुम्हें और कुछ न सूझेगा, लेकिन तुम्हारी जगह दादा हों, तो किसी को तार न दें, न घबराएँ, न बदहवास हों। पहले ख़ुद मरज़ पहचान कर इलाज करेंगे, उसमें सफल न हुए, तो किसी डॉक्टर को बुलाएँगे। बीमारी तो खैर बड़ी चीज़ है। हम-तुम तो इतना भी नहीं जानते कि महीने-भर का खर्च महीना-भर कैसे चले। जो कुछ दादा भेजते हैं, उसे हम बीस-बाईस तक खर्च कर डालते हैं और फिर पैसे-पैसे को मुहताज हो जाते हैं। नाश्ता बंद हो जाता है, धोबी और नाई से मुँह चुराने लगते हैं, लेकिन जितना आज हम और तुम खर्च कर रहे हैं, उसके आधे में दादा ने अपनी उम्र का बड़ा भाग इज्ज़त और नेकनामी के साथ निभाया है और कुटुम्ब का पालन किया है जिसमें सब मिलकर नौ आदमी थे। अपने हेडमास्टर साहब ही को देखो। एम.ए., हैं कि नहीं और यहाँ के एम.ए. नहीं, आक्सफोर्ड के। एक हज़ार रुपये पाते हैं, लेकिन उनके घर का इंतज़ाम कौन करता है? उनकी बूढ़ी माँ। हेडमास्टर साहब की डिग्री यहाँ बेकार हो गई। पहले ख़ुद घर का इंतज़ाम करते थे। खर्च पूरा न पड़ता था। कर्ज़दार रहते थे। जब से उनकी माता जी ने प्रबंध अपने हाथ में ले लिया है, जैसे घर में लक्ष्मी आ गई है। तो भाईजान, यह गरूर दिल से निकाल डालो कि तुम मेरे समीप आ गए हो और अब स्वतंत्र हो। मेरे देखते तुम बेराह न चलने पाओगे। अगर तुम यों न मानोगे तो मैं (थप्पड़ दिखाकर) इसका प्रयोग भी कर सकता हूँ। मैं जानता हूँ, तुम्हें मेरी बातें ज़हर लग रही हैं। .....

मैं उनकी इस नई युक्ति से नत-मस्तक हो गया। मुझे आज सचमुच अपनी लघुता का अनुभव हुआ और भाई साहब के प्रति मेरे मन में श्रद्धा उत्पन्न हुई। मैंने सजल आँखों से कहा-हरगिज़ नहीं। आप जो कुछ फ़रमा रहे हैं, वह बिलकुल सच है और आपको उसके कहने का अधिकार है।

भाई साहब ने मुझे गले से लगा लिया और बोले-मैं कनकौए उड़ाने को मना नहीं करता। मेरा भी जी ललचाता है; लेकिन करूँ क्या, खुद बेराह चलूँ, तो तुम्हारी रक्षा कैसे करूँ? यह कर्तव्य भी तो मेरे सिर है।

संयोग से उसी वक्त एक कटा हुआ कनकौआ हमारे ऊपर से गुज़रा। उसकी

डोर लटक रही थी। लड़कों का एक गोला पीछे-पीछे दौड़ा चला आता था। भाई साहब लंबे हैं ही। उछलकर उसकी डोर पकड़ ली और बेतहाशा होस्टल की तरफ़ दौड़े। मैं पीछे-पीछे दौड़ रहा था।

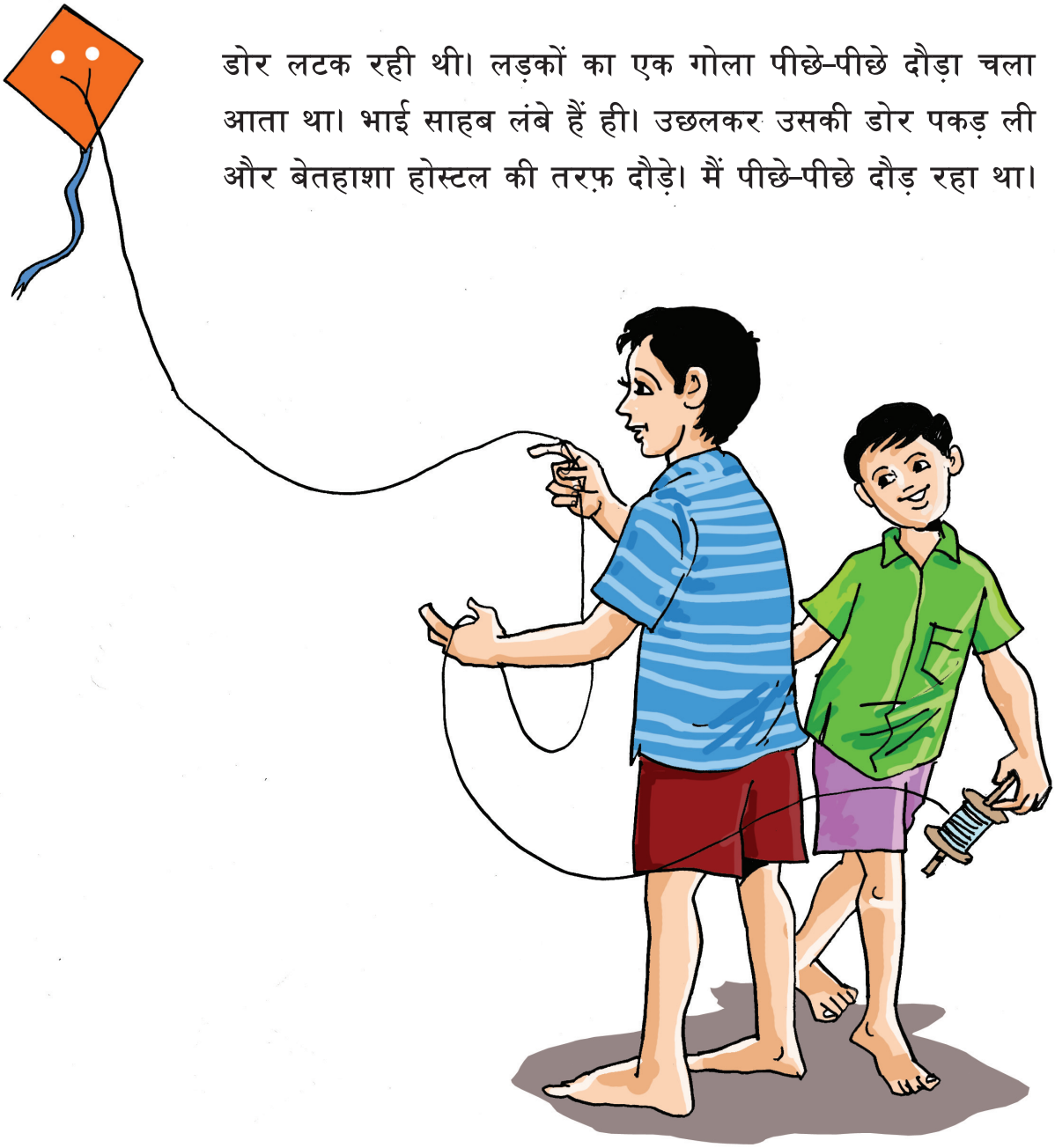

बोध-प्रश्न सोचिए, चर्चा कीजिए, अपने शब्दों में उत्तर दीजिए और लिखिए।

15. अम्मा और दादा की किन विशेषताओं का उल्लेख यहाँ किया गया है?

16. बड़े भाई साहब ने कनकौए का क्या किया?